नैथेनियल हाथार्न **कलंक**



● 'कलंक' नैथेनियल हाथार्न के प्रसिद्ध उपन्यास The Scarlet Letter का हिन्दी अनुवाद है। इस उपन्यास में उन्होंने समाज द्वारा बहिष्कृत एवं कलंकित कर दी गई एक नारी हेस्टर प्राइन का चरित्र-चित्रण किया है। हेस्टर प्राइन पवित्र हृदया और मददगार होने के बावजूद समाज के दिए हर दुःख-दर्द, वेदना को सहने पर विवश है पर ऐसे हालात में भी उसका संघर्ष कहीं कमजोर नहीं पड़ता।

● 1804 में सेलम मैसचूसेट्स में जन्मे नैथेनियल हाथार्न ने 'द स्कार्लेट लेटर' के अलावा 'द हाउस ऑफ सेवन गोबेल्स', 'आवर ओल्ड होम', 'द मार्बल फॉस' जैसे प्रसिद्ध उपन्यास लिखे। नैथेनियल हाथार्न का लेखन अमरीकी रंग-ढंग, हवा-माटी में रचा-बसा है। प्रसिद्ध अमरीकी लेखक एडगर एलन पो ने कहा था–

"हाथार्न में हमें असाधारण प्रतिभा के दर्शन होते हैं, जिसका अमरीका में या और कहीं कोई सानी नहीं है।"

● "...आप उसके गाउन अथवा माथे पर दाग़ देने की कैसी बातें करती हैं। यह तो संपूर्ण स्त्री समाज के लिए एक कलंक है, अतः इसे मर ही जाना चाहिए। क्या कोई ऐसा कानून नहीं है? मैं तो समझती हूं कि धर्मपुरुष और कानून की किताब दोनों ही इस अपराध के लिए मृत्युदण्ड ही दें और जिन न्यायाधीशों ने इस समग्र मृत्युदण्ड नहीं दिया, उनकी आंखें उस दिन खुलेंगी, जब उनकी आंखें और बेटी भी ऐसा ही कुकृत्य करेंगी।..."

Rs. 75/-
ISBN 81-216-0835-X
AHW HPB HINDI SERIES
हिन्द पॉकेट बुक्स

विश्व कथा साहित्य
● अमेरीका

# कलंक

## नैथेनियल हाथार्न



# विश्व कथा—साहित्य

**रूस**

| | |
|---|---|
| नाच के बाद | टॉल्सटाय |
| वासना | दॉस्तोएवस्की |
| जुआरी | दॉस्तोएवस्की |
| छलना | गोर्की |
| मेरा पहला प्यार | तुर्गनेव |
| संघर्ष | चेख़व |

**फ्रांस**

| | |
|---|---|
| हीरे का हार | मोपासां |
| यौवन की आंधी | पियरे लुई |
| छोटा राजकुमार | आं. द सेंतेक्ज़्युपेरी |
| पेरिस का कुबड़ा | विक्टर ह्यूगो |
| तोपाज़ | मार्सल पान्योल |

**इंग्लैंड**

| | |
|---|---|
| अपनी छाया | ऑस्कर वाइल्ड |
| इंसान या शैतान | स्टीवेंसन |

**स्लोवानिया**

| | |
|---|---|
| पुराना नौकर | इवान त्वैंकर |

**जापान**

| | |
|---|---|
| रोशोमेन | रियूनोसुके अकूतागावा |
| हरा तोता | मिचियो ताकियामा |

**जर्मन**

| | |
|---|---|
| एक अनजान औरत का ख़त | स्टीफ़ेन ज़्विग |

**अमरीका**

| | |
|---|---|
| कूप और काल | एडगर एलन पो |
| कलंक | नैथेनियल हाथार्न |

**चीन**

| | |
|---|---|
| रिक्शावाला | लाओ श |
| पागल की डायरी | लु-शुन |

**चेक**

| | |
|---|---|
| एमेके : एक गाथा | जोसेफ़ श्कवोरेस्की |

**इटली**

| | |
|---|---|
| फ़ांटामारा | इग्नाज़ियो सिलोनी |



नैथेनियल हाथार्न

# कलंक

(विश्वविख्यात अमरीकी उपन्यासकार नैथेनियल हाथार्न के प्रसिद्ध उपन्यास 'दि स्कार्लेट लेटर' का हिन्दी अनुवाद है—कलंक)

हिन्द पॉकेट बुक्स

विश्व कथा-साहित्य

कलंक

लेखक : नैथेनियल हाथार्न
अनुवादक : आशुतोष



प्रथम संस्करण : 1999
प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
दिलशाद गार्डन, जी.टी. रोड, दिल्ली-110 095
लेज़र टाइपसेटिंग : नागरी प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110 032
मुद्रक : बालाजी ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

KALANK (Novel) NATHANIEL HAWTHORNE

ISBN-81-216-0835-X

# परिचय

यह बात है 1828 की। अमरीका के मेसाचूसेट्स में एक अनाम से लेखक का एक उपन्यास 'फानशावे' छपता है। पुस्तक पर लेखक का कहीं नाम तक नहीं था। छपने के बाद लेखक को यह उपन्यास बेहद बचकाना-सा लगता है और वह खुद ही इसकी सारी प्रतियां जलाकर राख कर देता है।

पहले उपन्यास में ही ऐसी शर्मनाक असफलता का मुंह देखनेवाले लेखक थे आज के विश्वप्रसिद्ध अमरीकी उपन्यासकार नैथेनियल हाथार्न। साहित्य के पारखियों का ध्यान जिस उपन्यासकार के कारण पहले-पहल अमरीका की ओर गया वे नैथेनियल ही थे। उनके उपन्यास अमरीकी हवा, माटी की गंध में रचे-बसे थे। प्रसिद्ध अमरीकी लेखक एडगर एलन पो ने कहा भी था कि "हाथार्न में हमें एक असाधारण प्रतिभा के दर्शन होते हैं, जिसका अमरीका में या और कहीं कोई सानी नहीं है।..."

1804 को सेलम, मेसाचूसेट्स में नैथेनियल हाथार्न का जन्म हुआ था। पैदाइश के चार साल बाद ही पिता कैप्टन नैथेनियल हाथार्न की मौत और मां के एकांतप्रिय जीवन के कारण हाथार्न ने अकेलेपन भरे बचपन के माहौल में काफी कुछ पढ़ डाला।

1821 में बॉडायन कालेज में नैथेनियल हाथार्न ने दाखिला लिया और पढ़ाई खत्म होने के बाद 1825 में वापस सेलम लौट आए। हेनरी वर्डसवर्थ लॉगफेलो जो आगे चलकर मशहूर कवि बने और फ्रैंकलिन पियर्स जो बाद में अमरीका के चौदहवें राष्ट्रपति बने, कालेज में नैथेनियल के सहपाठी थे। पहले उपन्यास की असफलता के बाद भी नैथेनियल लेखन में लगे रहे। इस बीच एक प्रकाशक मित्र सैमुअल गुडरीख के यहां 1836 से 1839 तक उन्होंने बतौर संपादक काम किया। यहीं काम करते हुए उनकी पुस्तक

'ट्वाइस टोल्ड टेल्स' 1837 में प्रकाशित हुआ। इन दिनों वे दिन-दिन भर कमरे में दरवाजा बंद किए पड़े रहते। यहां तक कि उनका खाना भी कमरे के बाहर दरवाजे पर रख दिया जाता। मनोरंजन का जरिया बस एक ही था–रात को दूर-दूर तक समुद्र तट और शहर की सोई सड़कों पर मटरगश्ती करना।

1839 में गुडरिख की नौकरी छोड़ नैथेनियल हाथार्न ने कस्टम हाउस में सर्वेयर का पद पा लिया। परंतु अपने स्वभाव के मुताबिक वे जल्दी ही यहां से भी उब गए और 1841 में उन्होंने ब्रुक फार्म के समाजवादी संप्रदाय में रहना शुरू कर दिया। एमर्सन के सिद्धांतों पर स्थापित इस संप्रदाय से जुड़कर उन्होंने अपनी जीविका की समस्या हल हो जाने की जो उम्मीद लगायी थी, वह पूरी नहीं हुई और उन्होंने जल्दी ही इस स्थान को भी छोड़ दिया।

1842 में सोफियो पिबॉडी से शादी करने के बाद नैथेनियल हाथार्न मय पत्नी कानकार्ड के पुराने गांव में जा बसे। यहां के बिताए तीन साल निजी और लेखन दोनों तौर पर उनके लिए अच्छे रहे। यहीं रहकर उन्होंने 'डेमोक्रेटिक रिव्यू' के लिए कुछ लघु कथाएं भी लिखीं, जो 1846 में 'मॉसेस फ्रॉम एन ओल्ड मैनस' नाम से छपीं।

उसके बाद 1846 से 1849 तक उन्होंने सलेम बंदरगाह पर सर्वेयर के रूप में काम किया और 1850 में अपना सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'दि स्कार्लेट लेटर' (कलंक) लिख डाला। इसके बाद तो बतौर उपन्यासकार नैथेनियल बेहद मशहूर हो गए। जल्दी ही उन्होंने 1851 में अपना एक और मशहूर उपन्यास 'द हाउस ऑफ सेवेन गोबेल्स' लिखा।

कालेज में उनके सहपाठी रहे फ्रैंकलिन पीयर्स 1852 में जब अमरीका के राष्ट्रपति बने तो दूसरे ही साल हाथार्न को इंग्लैंड में अमरीकी कौंसल नियुक्त कर दिया गया। अगले सात साल उन्होंने इंग्लैंड और यूरोप में बिताए। इंग्लैंड के उनके संस्मरण बाद में 'आवर ओल्ड होम' पुस्तक में छपे। 1860 में छपा 'द मार्बल फॉस' उनका अंतिम उपन्यास सिद्ध हुआ।

1864 की शुरुआत से ही हाथार्न की सेहत खराब रहने लगी थी। डॉक्टरों की सलाह पर वे जलवायु परिवर्तन के लिए न्यूहेम्पशायर के पहाड़ों की ओर गए पर रास्ते में ही प्लाइमाउथ में उनका देहांत हो गया। हाथार्न का जीवन उनकी रचनाओं की ही तरह सदैव पवित्र, सरल और दिखावारहित रहा।

'कलंक' उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'दि स्कार्लेट लेटर' का हिंदी अनुवाद है। इस उपन्यास में लेखक ने एक नारी हेस्टर प्राईन के बारे में लिखा है जो समाज द्वारा बहिष्कृत और कलंकित कर दी गई है। पर उसके हृदय में पवित्रता और सहायता का भाव बना रहता है। इसके बाद भी उसे समाज द्वारा दिए गए दुःख-दर्द, वेदना को सहना पड़ता है। नैथेनियल अपने इस मशहूर उपन्यास में पाठकों को हेस्टर प्राइन के दुःखों पर सोचने को विवश कर देते हैं।

**–शादाब मुजतबा**

काले शोक-वस्त्रों तथा ऊंचे स्लेटी रंग के हैट पहने दाढ़ीवाले पुरुषों का एक समूह–जिनमें स्त्रियां भी थीं–उस लकड़ी के बने भवन के सामने एकत्र हुआ जिसके दरवाज़े ओक की लकड़ी के बने थे और जिनमें लोहे की कीलें ठुकी हुई थीं।

कार्नहिल के निकटवर्ती प्रदेश में बोस्टन के सबसे पहले कारागार का निर्माण किया गया, और जान इसाक की कब्र के आसपास की भूमि को कब्रिस्तान के उपयुक्त समझा गया, जहां कालांतर में बने गिरजाघर के आंगन में बहुत-सी कब्रें बन गईं।

नगर बसने के पन्द्रह-बीस वर्ष के पश्चात् आंधी-पानी के अनवरत प्रहार के कारण कारागार पुराना-सा दिखाई देने लगा था। उसके सामने का भाग जर्जरित हो चला था। वह नीरव उदासी की कालिमा से व्याप्त इतना बीभत्स दिखाई देता था, मानो काल के क्रूर थपेड़ों से उसका अवसान निकटतर होता जा रहा हो। लोहे की सलाखों पर लगा हुआ जंग इस बात का द्योतक था कि वह 'नई दुनिया' की सबसे पुरानी वस्तु है। अपराधों के जगत में जिस प्रकार विषाद की कालिमा छाई रहती है, वैसे ही इस कारागार के जीवन में भी कभी आनन्द की सृष्टि दिखाई नहीं दी।

इस भद्दे भवन के सामने और गली के गाड़ीवाले रास्ते के बीच एक घास का मैदान था, जिसमें झाड़-झंखाड़ उगे हुए थें। परन्तु बरामदे के एक किनारे भवन की चौखट पर जंगली गुलाब की एक झाड़ी थी। वह जून मास में कोमल-कमनीय फूलों से भरी हुई इस कल्पना को सजीव कर रही थी कि मानो वह कारागार में प्रवेश करनेवाले प्रत्येक कैदी तथा फांसी पर लटकनेवाले अपराधी को अपने सौन्दर्य तथा सुरभि का उपहार देकर यह बताना चाहती है कि प्रकृति के हृदय की गहराई में अब भी उनके लिए सहानुभूति और दया के भाव हैं।

गुलाब की वह झाड़ी अतीत की स्मृति सरीखी आज भी विद्यमान है, जबकि उस पर छाया डालनेवाले बलूत और सनोवर के बड़े-बड़े वृक्ष कब से समाप्त हो चुके हैं। या तो प्रकृति ने ही उसे बचा लिया है, या फिर इस बात पर विश्वास करना पड़ेगा कि जब सती-साध्वी हचिन्सन ने कारागार के द्वार में प्रवेश किया था, तो उसकी चरण-धूलि में इस झाड़ी ने जन्म लिया था।

## दो

लगभग दो सौ वर्ष पूर्व ग्रीष्म के एक प्रभात में बोस्टन के बहुत-से लोग कारागार के सामने घास के मैदान में बैठे हुए थे और उन सबकी दृष्टि लोहे की सलाखोंवाले दरवाज़े पर लगी हुई थी। उन महानुभावों की मुखाकृति से जो कठोरता प्रकट हो रही थी, उससे यही अनुमान लगाया जाता कि कोई भयानक बात हो रही है और निश्चय ही यह समझा जाता कि किसी ऐसे कुख्यात अपराधी को फांसी दी जा रही है जिसके विरुद्ध न्यायालय के निर्णय से लोक-भावनाओं का समर्थन ही हुआ है। परन्तु जिस समय का यह वर्णन है, उन दिनों ऐसा अनुमान लगाना ठीक नहीं था, क्योंकि समाज पर प्यूरिटनों के संयम और कठोर अनुशासन का अधिक प्रभाव था।

ग्रीष्म की उस प्रातः से आरम्भ होनेवाली कहानी की सबसे प्रमुख बात यह थी कि दिए जानेवाले दण्ड के बारे में, भीड़ में एकत्र बहुत-सी स्त्रियों की विशेष रुचि प्रतीत होती थी। अंग्रेज़ जाति की ये महिलाएं तथा कुमारियां नैतिक तथा भौतिक दोनों ही दृष्टियों से अत्यधिक कठोर प्रकृति की थीं। उनकी छः या सात पीढ़ियों पश्चात् की सन्तानों इतनी कठोर नहीं थीं, क्योंकि वंश-क्रम में पूर्वजों ने परम्परा के रूप में अपनी सन्तानें को कोमल कमनीयता और मृदुल माधुर्य ही प्रदान किया था, किन्तु उस संतति में भी उतनी ही चारित्रिक दृढ़ता और शक्ति बनी रही। आज से प्रायः



अर्द्धशताब्दी पूर्व महिला-समाज का समुचित प्रतिनिधित्व करती हुई सम्राज्ञी एलिज़ाबेथ जब ऐसे ही स्थान पर जा खड़ी हुई थी, तभी पहली बार महिलाओं ने ऐसे स्थान पर पदार्पण किया था। ये महिलाएं भी उसी देश की थीं और इनकी प्रकृति भी अपने देश की मांस-मदिरा से पोषित और नैतिकता तथा हास-परिहास की विधाओं से अलंकृत हुई थी।

उनमें अधिकतर विवाहित महिलाएं थीं तथा कुछ साहसी भी प्रतीत होती थीं। उनकी बातों के घुमाव-फिराव में निहित प्रयोजन अथवा लहजे के उतार-चढ़ाव को देखकर आज बहुत आश्चर्य हो रहा था।

एक पचास वर्षीय अधेड़ स्त्री ने कहा, ''प्रिय बहनो, मैं तुम्हें मन की बात बताती हूं। यदि गिरजाघर की सदस्याएं और ख्यातिप्राप्त प्रौढ़ महिलाएं होने के नाते हमें हेस्टर प्राइन जैसी अपराधिनियों का फैसला करना पड़े, तो जानती हो क्या हो ? हम पांचों को किसी पतिता के बारे में निर्णय देना होता, तो क्या उसे ऐसा ही दण्ड दिया जाता जैसा आदरणीय न्यायाधीशों ने दिया है ? मैं शपथपूर्वक कहती हूं कि ऐसा कभी न होता।''

दूसरी ने कहा, ''लोगों का कहना है कि उसके सम्माननीय देवतुल्य पादरी मास्टर डेम्सडेल को अपनी सभा में ऐसा भ्रष्टाचार देखकर बहुत दुःख हुआ था।''

तीसरी एक प्रौढ़ा ने कहा, ''यह नितान्त सत्य है कि न्यायाधीश बहुत ही धर्मभीरु और दयालु होते हैं। कम से कम उन्हें हेस्टर प्राइन के माथे पर गर्म लोहे से दाग देने का दण्ड तो देना ही चाहिए था। इससे कम से कम हेस्टर को कुछ कष्ट तो होता। परन्तु अब तो यह पतिता इस बात की कुछ भी परवाह नहीं करेगी कि उसके गाउन पर कुछ अंकित कर दिया गया है। फिर इसकी भी तो सम्भावना है कि वह ब्रोच या अन्य कोई असभ्य आभूषण धारण करके इस चिह्न को छिपा ले और शान से गलियों में घूमती फिरे।''

बच्चे को हाथ में संभाले एक युवा स्त्री बीच में ही बोली, ''भले ही वह इस चिह्न को छिपा ले, पर एक कसक उसे आजीवन कचोटती रहेगी।''

स्वतः ही निर्णायक बनी हुई इन महिलाओं में से एक अत्यन्त कुरूप

और क्रूर प्रकृति की स्त्री ऊंचे स्वर में बोली, "आप उसके गाउन अथवा माथे पर चिह्न अथवा दाग देने की कैसी बातें करती हैं ? यह तो सम्पूर्ण स्त्री-समाज के लिए एक कलंक है, अतः उसे मर ही जाना चाहिए। क्या कोई ऐसा कानून नहीं है ? मैं तो समझती हूं कि धर्म-पुस्तक और कानून की किताब दोनों में इस अपराध के लिए मृत्यु-दण्ड ही है और जिन न्यायाधीशों ने इस समय मृत्यु-दण्ड नहीं दिया, उनकी आंखें उस दिन खुलेंगी जब उनकी औरतें और बेटियां भी ऐसा ही कुकृत्य करेंगी।"

"बहन, कुछ हम पर भी दया करो," भीड़ मे से एक पुरुष ने कहा, "क्या फांसी के दण्ड के भय से ही नारी में सद्गुणों का विकास होता है और क्या इसके अतिरिक्त उसमें कोई गुण नहीं है ? ऐसा कहना तो बहुत अन्याय होगा। कृपया चुप रहिए। कारागार का द्वार खुल रहा है और कुमारी प्राइन आनेवाली हैं।"

जेल का द्वार खुलते ही एक काली-सी छाया प्रकाश में आती हुई दिखाई दी, और नगर का दण्डाधिकारी कमर से तलवार लटकाए, हाथ में राजदंड लिए ओजस्वी तथा भयोत्पादक मुद्रा में बढ़ता हुआ दृष्टिगोचर हुआ।

अपने बाएं हाथ के दण्ड को आगे बढ़ाते हुए उसने दाहिना हाथ एक युवा महिला के कंधे पर रखा और उसे आगे बढ़ाया। उस महिला ने देहलीज़ के समीप पहुंचते ही बड़े ओजस्वी तथा गरिमापूर्ण ढंग से उसे एक ओर धकेल दिया और स्वयं बाहर आ खड़ी हुई, मानो स्वेच्छा से ही वहां आई हुई हो। उसकी गोद में तीन मास का एक बालक था जिसने आंखें झपकाईं और दिन के प्रखर प्रकाश की ओर से अपना मुंह फेर लिया। क्योंकि उसने अब तक जेल की किसी अंधेरी कोठरी का धुंधलका ही देखा था।

भीड़ के बिलकुल सामने आकर महिला ने अपने बच्चे को छाती से चिपटा लिया। सम्भवतः उसका ऐसा आचरण वात्सल्य के प्राबल्य की अपेक्षा अपने वस्त्रों पर अंकित किसी चिह्न को छिपाने की चेष्टामात्र हो। पलभर में ही उसे अनुभव हुआ कि एक लांछन से दूसरे लांछन को नहीं छिपाया जा सकता। अतः उसने बच्चे को हाथों में ले लिया। गालों पर



लज्जा की लाली दौड़ गई। परन्तु फिर भी धृष्टतापूर्ण मुसकुराहट और निर्भीक दृष्टि से उसने नगरवासियों और पड़ोसियों की ओर देखा। उसके लाल गाउन पर, वक्षस्थल के ऊपर चमकदार तिल्ले की कसीदाकारी के मध्यम में 'ए' अक्षर अंकित था। वह इतने कलात्मक तथा कल्पनापूर्ण ढंग से कढ़ा हुआ था कि उससे उसके वस्त्रों की शोभा में अनुपम वृद्धि हो रही थी और उसके सौंदर्य में सुरभि का संचार हो रहा था। परन्तु इस प्रकार की सजधज उस प्यूरिटन बस्ती के नियमों के प्रतिकूल थी।

लम्बे कद की उस युवती का शारीरिक सौष्ठव प्रभावपूर्ण था। उसकी घनी केशराशि की कांति पर पड़ती हुई सूर्य की किरणों की प्रभा मन्द पड़ जाती थी। उसकी सुन्दर, मुखाकृति, घनी भौंहों और गहरी काली आंखों में विचित्र आकर्षण था। उसमें गरिमायुक्त सुकुमारता की ऐसी अपूर्व आभा झलक रही थी जिसे उस युग में सम्भ्रांत महिला का लक्षण समझा जाता था। किन्तु आज जिस प्रकार की मृदुलता, कोमलता और नज़ाकत को सौन्दर्य का नाम दिया जाता है, वह सब उसमें नहीं था।

कारागार से निकलते हुए प्राइन के व्यक्तित्व में सम्भ्रांत महिलाओं जैसी अभूतपूर्व ओजस्विता प्रकट हो रही थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो उसका सौन्दर्य उसकी विपत्ति और बदनामी को भी तेजोमय कर रहा है। सम्भवतः किसी भावुक व्यक्ति के लिए प्राइन की यह स्थिति दुःखद ही थी। उसने जेल में इस अवसर के लिए जो वस्त्र बनाए थे, उनमें उसकी सजीव कल्पना अंकित थी, और उनमें उसकी आन्तरिक भावना तथा निर्भीक प्रकृति का अद्भुत चित्रण था। उसके वक्ष पर रक्तिम अक्षर की इतनी सुन्दर कढ़ाई हुई थी कि सभी की दृष्टि उस ओर आकर्षित हो जाती थी और ऐसा प्रतीत होता था कि दृष्टियों का यह संगम प्राइन को एक नया तेज प्रदान कर रहा था, क्योंकि उसके पूर्वपरिचित सभी लोगों को भी आज ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो उन्होंने उसे पहली बार देखा हो। मंत्रमुग्ध कर देनेवाले असीम तेज के प्रभाव से वह अप्सरा-सी लग रही थी।

"निश्चय ही वह कढ़ाई की कला में बहुत प्रवीण है," एक महिला ने कहा, "परन्तु क्या इस दुष्टा से पूर्व कभी किसी महिला ने ऐसा प्रदर्शन

करने का साहस किया था ? प्रतीत होता है कि उसने न्यायाधीशों का उपहास किया है और उन महापुरुषों ने वस्तुतः जो दण्ड दिया है, उसे यह कुलटा गर्व का विषय मान रही है।"

बूढ़ी स्त्रियों में से एक क्रूराकृतिवाली महिला बोली, "अच्छा होता यदि कुमारी हेस्टर के कोमल कंधों पर से इस सुन्दर गाउन को फाड़कर फेंक दिया जाता और जिस 'रक्तिम अक्षर' की इसने अद्‌भुत ढंग से कढ़ाई की है, उसके स्थान पर मैं उसे एक चीथड़ा देती जो अधिक उपयुक्त होता।"

"बहनो ! शांति !" एक नवयुवती ने धीरे से कहा, "जरा धीरे बोलो ताकि वह तुम्हारी ये बातें न सुन सके। 'रक्तिम अक्षर' की कढ़ाई की चुभन उसके वस्त्र पर नहीं, वरन् हृदय में है।"

गम्भीर मुद्रा में खड़े दण्डाधिकारी ने अपने दण्ड से संकेत किया और उच्च स्वर से कहा, "भाइयो ! रास्ता छोड़ दो, सम्राट के नाम पर मार्ग से हट जाओ। मैं वचन देता हूं कि कुमारी हेस्टर प्राइन को ऐसे स्थान पर खड़ा किया जाएगा, जहां से एक बजे तक सभी स्त्री-पुरुष उसे तथा उसके वस्त्र को आसानी से देख सकेंगे। मैसचूज़ेट्स की धर्मपरायण बस्ती धन्य है, जहां अनाचार को सभी के सामने उघाड़ दिया जाता है। कुमारी हेस्टर ! इधर आओ और सबके सामने बाज़ार में उस 'रक्तिम अक्षर' का प्रदर्शन करो।"

दर्शकों की भीड़ ने तुरन्त रास्ता छोड़ दिया। हेस्टर प्राइन दण्ड के मंच की ओर अग्रसर हुई। उसके आगे-आगे दण्डाधिकारी चल रहा था तथा पीछे लोगों का एक समूह था, जिसमें पुरुषों की भौंहों से कठोरता और स्त्रियों की आकृतियों से निर्ममता टपक रही थी।

हेस्टर प्राइन बहुत गम्भीरता से लोगों के बीच में से बढ़ती हुई उस फांसी के तख्ते के निकट पहुंची, जो कि बाज़ार के पश्चिम में बोस्टन के प्रचीनतम गिरजे के निकट स्थायी रूप से बना हुआ था।

वस्तुतः इस स्थान पर अपराधियों को यातना देने के लिए एक यंत्र-सा बना हुआ था जिसका बाद में केवल ऐतिहासिक महत्त्व रह गया, किन्तु उस समय उसे नागरिकों में श्रेष्ठ गुणों के विकास का साधन माना जाता



था। काठ तथा लोहे का यह यंत्र तत्कालीन अमानुषिक यंत्रणाओं का प्रतीक था। मेरा विचार है कि इससे अधिक अमानुषिक यंत्रणा क्या हो सकती है कि अपराधी को, चाहे उसने कैसा भी अपराध क्यों न किया हो, अपने अपराध पर लज्जित होकर मुंह छिपाने का भी अवसर न दिया जाए। हेस्टर प्राइन के लिए इस दण्ड का निर्णय किया गया था कि वह कुछ समय के लिए उस तख्ते पर खड़ी रहेगी, किन्तु उसकी गर्दन और सिर को उस शिकंजे में नहीं जकड़ा जाएगा। यद्यपि प्रायः ऐसी रियायत अन्य अपराधियों को नहीं दी जाया करती थी।

वह लकड़ी की सीढ़ियों पर चढ़ गई और एक आदमी के कंधे जितनी ऊंचाई पर खड़ी हो गई। वहां से उसे लोग देखने लगे। नवजात शिशु को अपने वक्ष से लगाए, सुन्दर सजे वस्त्र पहने, लोगों की अपार भीड़ में चित्रवत् खड़ी उस रति के समान सुन्दर नारी को यदि प्यूरिटनों की उस भीड़ में कोई रोमन कैथोलिक देखता तो उसकी कल्पना में तुरन्त 'पवित्र कुमारी' का वह अनुपम चित्र उपस्थित हो जाता, जिसे अंकित करने के लिए महानतम चित्रकार परस्पर प्रतिस्पर्धा करते हैं तथा प्राइन से तुलना करते हुए उसे तुरन्त पापरहित मातृत्व का स्मरण हो आता, जिसके बच्चे ने सारे संसार को दुःखों से मुक्त कर दिया था।

हेस्टर प्राइन के अपमान का दृश्य देखनेवाले लोगों में अभी तक स्वाभाविक सरलता विद्यमान थी। वे लोग इतने कठोर तो अवश्य थे कि यदि प्राइन को मृत्युदण्ड भी दिया जाता तो, दण्ड की कठोरता पर किसी प्रकार की फुसफुसाहट भी नहीं करते, परन्तु वे इतने हृदयहीन और कुटिल भी न थे कि इस दृश्य को उपहास का विषय बना लेते। यदि इस समय कोई चेष्टा की जाती तो वहां पर गवर्नर, सभासद, न्यायाधीश और नगर के मंत्रीगण आदि प्रतिष्ठित लोगों की उपस्थिति के कारण उसे दबा दिया जाता। ऐसे अवसर पर न्यायाधीश आदि प्रतिष्ठित पदाधिकारियों की निश्शंक उपस्थिति दण्ड को प्रभावपूर्ण तथा शिक्षाप्रद बनाने की द्योतक थी। अतः वहां एकत्र जनसमूह पूर्णतया गम्भीर था। हज़ारों लोगों की दयाहीन आंखें प्राइन तथा उसके वक्ष पर अंकित 'रक्तिम अक्षर' की ओर लगी हुई

थीं। और वह भाग्यहीन अपराधिनी उन्हें नारीसुलभ शक्ति से सहन कर रही थी। इस असह्य स्थिति में भी वह अपनी आन्तरिक शक्ति और भावप्रवण प्रकृति की सहायता से लोगों की दृष्टि के विषैले आघातों से अपनी रक्षा कर रही थी, किन्तु नीरव भीड़ का वातावरण इतना आतंकपूर्ण था कि उसकी इच्छा होती थी कि इस मूक प्रताड़ना की अपेक्षा यह कहीं अच्छा होता कि लोग घृणा तथा कठोरता से विकृत आकृतियां बनाकर उसका उपहास करते। यदि कहीं भीड़ में हंसी की खिलखिलाहट निकल पड़ती और सब पुरुष, स्त्रियां और बच्चे अपनी भारी तथा पतली आवाजों से अट्टहास करने लगते, तो हेस्टर प्राइन उसी प्रकार अतिशय घृणापूर्ण हंसी से उसका उत्तर देती, परन्तु इस प्रकार के निस्तब्ध, मौन तथा नीरव वातावरण में वह ऐसी घुटन अनुभव कर रही थी कि उसकी इच्छा होती थी कि पूरे ज़ोर से चीखे और तख्ते पर से छलांग लगा दे या तुरन्त पागल हो जाए।

कभी-कभी वह सारा दृश्य उसकी आंखों से ओझल हो जाता था अथवा उन लोगों की आकृतियां उसकी दृष्टि में धुंधली पड़कर प्रेत-छाया के समान दिखाई देने लगती थीं। उसके मन और स्मृति में एक आधिभौतिक शक्ति का संचार हो रहा था और इस छोटे-से नगर की गली के इन दृश्यों और दर्शकों की बजाय अतीत की सुप्त स्मृतियां जागृत हो रही थीं। स्कूल में बिताए दिनों, खेलों, बचपन के झगड़ों तथा यौवनकाल की घरेलू प्रवृत्तियों की छोटी-छोटी और साधारण घटनाओं की स्मृतियां उदय हो रही थीं; तथा इसके साथ ही उसे स्मरण आ रही थी अपने बाद के जीवन की वह गम्भीरतम घटना। सम्भवतः इन छायाचित्रों की सहायता से उसकी आत्मा यथार्थ की क्रूर कठोरता भूल जाने का स्वाभाविक प्रयास कर रही थी।

उसकी अन्तर्दृष्टि में पुराना इंगलैंड, उसका गांव, माता-पिता का घर, परिवार की दरिद्रता, प्राचीन सम्पन्नता के द्योतक शस्त्रादि के संग्रह का दृश्य एकसाथ घूम गए। पिता का स्मरण आया और उनकी झड़ी हुई भौंहों और एलिज़ाबेथ-युग की सी सफेद सम्मानसूचक दाढ़ी की ओर ध्यान गया। अपनी मां की स्नेह और सौहार्दपूर्ण दृष्टि की भी याद आई जो आज तक उसके हृदय की अनमोल निधि थी और जिसने सदा उसके मार्ग को प्रशस्त किया था। उसे अपने बचपन की बालसुलभ कान्तिपूर्ण आकृति का भी स्मरण आया और साथ ही उस धुंधले शीशे का भी ध्यान आया जिसे देखने का उसे शौक था और जिसमें वह अपने सौंदर्य की आभा निहारा करती थी। इसके साथ ही उसे उस वृद्ध विद्वान व्यक्ति की भी याद आई, जिसकी आंखों की दृष्टि उस पुराने दीपक के प्रकाश में बड़ी-बड़ी पुस्तकों को निरन्तर पढ़ते रहने से मन्द पड़ चुकी थी, किन्तु जब वह किसी व्यक्ति के अन्तस् पर दृष्टिपात करता था, तो उसकी धुंधली दृष्टि भी पैनी हो जाती थी। उस विरक्त अध्येता की याद करते समय हेस्टर प्राइन को यह भी स्मरण हुआ कि उसका बायां कन्धा दाएं से कुछ ऊंचा था। तभी एक पुराने नगर की तंग गलियां, ऊंचे-ऊंचे मकान, बड़े-बड़े गिरजाघर और सरकारी भवन उसकी स्मृति में उभर आए और एक आशा का स्फुरण हुआ कि जब वह वहां उस विद्वान के पास जाएगी, तो उसका एक नया जीवन आरम्भ होगा, ठीक उसी प्रकार जैसे खंडहर पर उगी हुई घास वहां की शुष्क मिट्टी से जीवन पाती है। अन्त में उसके सामने फिर उसी प्यूरिटन बस्ती के बाज़ार का वही दृश्य था, जहां उस पर दृष्टि गड़ाए हुए लोग खड़े थे और वह नवजात शिशु को हाथों में लिए हुए मंच पर खड़ी थी और सोने के तारों से कढ़ा हुआ रक्तिम अक्षर 'ए' उसके वक्ष पर चमक रहा था।

क्या यह सब सत्य है?—उसने अपने बच्चे को अपनी छाती के साथ इतने ज़ोर से भींचा कि वह चीख पड़ा। तब उसकी दृष्टि 'रक्तिम अक्षर' की ओर गई और उसने अपनी उंगली से उसे यूं टटोला कि जैसे यह निश्चय कर रही हो कि क्या वे दोनों लांछन सत्य हैं? हां ! सच ही थे और शेष सब कुछ उसके मस्तिष्क से विलीन हो गया।

# तीन

र क्तिम अक्षर' का कलंक सीने से लगाए, उन क्रूर और तीखी दृष्टियों के अपार सागर में डूबती हुई उसकी विक्षुब्ध चेतना को उस समय शान्ति का कुछ आभास मिला, जब उसकी दृष्टि भीड़ के एक कोने में खड़े एक व्यक्ति पर पड़ी—ऐसा लगा मानो उसके विचार-प्रवाह को संगम मिल गया हो। एक इण्डियन जंगली वेश-भूषा में वहां खड़ा था। रेड इण्डियन तो प्रायः अंग्रेज बस्तियों में आते रहते थे। अतः यह कोई ऐसी असाधारण बात नहीं थी कि उस विषम स्थिति में हेस्टर प्राइन सभी कुछ भूलकर उस ओर इस प्रकार आकर्षित हो जाती। उस इण्डियन के पास ही गोरी जाति का एक व्यक्ति कुछ सभ्य और कुछ जंगली-सा मिला-जुला वेश पहने खड़ा था, जो उसका साथी प्रतीत होता था। वह कद में छोटा था। उसके चेहरे पर झुर्रियां पड़ चुकी थीं। मुखाकृति पर झलकती हुई प्रतिभा की आभा से प्रतीत होता था कि उसने मस्तिष्क को इतना विकसित कर लिया है कि शरीर भी उसके अनुरूप ही ढल गया है और उसमें बौद्धिक विकास के लक्षण स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे थे। ऐसी उपेक्षापूर्ण वेश-भूषा में भी उस व्यक्ति ने अपने शरीर की एक विशेषता को छिपाने का प्रयत्न किया था, किन्तु हेस्टर प्राइन तुरन्त भांप गई थी कि उसका एक कन्धा दूसरे से छोटा है। इस पतले-से चेहरे और विकृत अंग के व्यक्ति को देखते ही हेस्टर प्राइन के मन में कुछ ऐसा भाव उठा और उसने बच्चे को इतने ज़ोर से छाती के साथ भींचा कि बच्चे की एक बार फिर चीख निकल पड़ी, परन्तु सम्भवतः मां ने उसे सुना तक नहीं।

जब वह व्यक्ति बाज़ार में पहुंचा था और हेस्टर का ध्यान अभी उस ओर आकर्षित नहीं हुआ था, तो उसने हेस्टर की ओर बहुत ही अन्यमनस्क भाव से देखा था, जैसाकि सम्भवतः अन्तदर्शी व्यक्ति का मन बाह्य दृश्य में तभी लगता है, जब उसमें उसके अपने ही अन्तस् की कोई बात व्यक्त हुई हो।

हेस्टर प्राइन की दृष्टि जब उसकी नज़रों से टकराई, तो उसने अनुभव



किया कि वह उसे पहचान रही है। उसी समय उसने उंगली उठाकर संकेत करते हुए उसे अपने होंठों पर रखा। तभी पास खड़े व्यक्ति का कंधा छूकर उस व्यक्ति ने अनौपचारिक किन्तु शिष्टाचारपूर्ण ढंग से पूछा, "क्यों महाशय ! आप बता सकते हैं कि यह महिला कौन है? और इसे सबके सामने इस प्रकार क्यों लज्जित किया जा रहा है?"

"आप अवश्य इस प्रदेश में नवागन्तुक प्रतीत होते हैं," नागरिक ने आश्चर्य से प्रश्न पूछनेवाले तथा उसके जंगली साथी की ओर देखते हुए कहा, "अन्यथा आपको ज़रूर ही हेस्टर प्राइन और उसके कुकर्मों के बारे में ज्ञान होता। सच मानिए, इस कुलटा ने पुण्यात्मा डिम्सडेल के गिरजे में घोर पाप किया है।"

"आपका कहना सच है," उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "मैं नवागन्तुक ही हूं। मुझे कुछ कारणों से बाध्य होकर बहुत लम्बी-चौड़ी यात्रा करनी पड़ी है। सागर और भूतल की यात्रा में मुझे अनेक दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ा। मैं बहुत दिन दक्षिण-पश्चिम के जंगली लोगों के पास बन्दी रहा और अब यह इण्डियन मुझे उनके चंगुल से छुड़ाकर लाया है। इसलिए क्या आप कृपया बताएंगे कि हेस्टर प्राइन—मैं ठीक ही नाम ले रहा हूं न?—इस महिला का अपराध क्या है और किस कारण से इसे इस दण्ड-मंच पर खड़ा किया गया है?"

नागरिक बोला, "सच तो यह है मित्र कि जिन कष्टों और विपत्तियों का तुमने उल्लेख किया है, उनके पश्चात् ऐसे प्रदेश में पहुंच जाना तुम्हारे लिए अत्यन्त हर्ष की बात है, जहां अन्याय को कभी क्षमा नहीं किया जाता। इस न्यू इंगलैंड की पुण्यभूमि में प्रत्येक अन्यायी को लोगों तथा शासकों के सामने उचित दण्ड दिया जाता है। यह महिला एक अंग्रेज विद्वान की पत्नी है, जो एमेस्टरडम में रहा करता था। बहुत दिन हुए, उसने यहां मैसाचुसेट्स में आकर हमारे साथ भाग्य आज़माने का निश्चय किया। ऐसा विचार करने पर कुछ आवश्यक कार्यवश स्वयं वहां ठहर गया और अपनी पत्नी को पहले यहां भेज दिया। यह महिला प्रायः दो वर्ष से यहां बोस्टन में रह रही है। इस बीच में उसके पति का कोई समाचार नहीं मिला

और इस नवयौवना को यहां स्वच्छन्द विचरण का अवसर मिल गया।"

"ओह ! मैं समझ गया," अजनबी एक कटु मुसकराहट के साथ बोला, "शायद उस विद्वान ने अवश्य यह बात पुस्तकों से सीखी होगी। क्या आप यह बताने का कष्ट करेंगे कि इस बच्चे का पिता कौन है, जिसे प्राइन ने गोद में उठा रखा है। मुझे तो यह तीन-चार मास का ही लगता है।"

"सच क्या है, यह तो अभी पहेली ही है मित्र !" नागरिक बोला, "जिसे अभी कोई भी सुलझा नहीं सका। हेस्टर प्राइन कुछ भी बता नहीं रही। न्यायाधीशों के सभी प्रयत्न निष्फल हुए हैं और यह कितने साहस की बात है कि वह अज्ञात अपराधी इस दुःखद दृश्य को देख रहा है और यह भूल गया है कि भगवान की दृष्टि से वह नहीं बच सकता।"

अजनबी फिर मुसकराया और बोला, "उस विद्वान को स्वयं ही आकर इस रहस्य का पता लगाना चाहिए।"

"यदि वह जीवित है तो निश्चय ही उसके लिए यह उचित ही होगा।" नागरिक ने उत्तर दिया, "न्यायाधीशों ने यह ध्यान रखते हुए कि यह रमणी सुन्दर है और युवा भी, अतः अवश्य इस गर्त में गिरने का लोभ संवरण नहीं कर सकी होगी–और बहुत सम्भव है कि इसके पति को किसी सागर की लहरों ने अपनी गोद में समेट लिया हो–इस पर कानून को बहुत सख्ती से लागू करने का साहस नहीं किया, अन्यथा ऐसे अपराध का दण्ड मृत्यु ही है। उन्होंने दया तथा सहानुभूति के भाव से उसे केवल यह दण्ड दिया है कि वह तीन घण्टे इस मंच पर खड़ी रहे और उसके पश्चात् अपने नित्यप्रति के जीवन में कलंक के इस चिह्न को अपनी छाती पर लगाए रहे।"

अजनबी ने गम्भीरता से सिर झुकाते हुए कहा, "कैसा विवेकपूर्ण दण्ड है कि जब तक उसकी कब्र पर ये कलंक के शब्द अंकित न कर दिए जाएं, तब तक यह रमणी स्वयं जगत् के लिए मूर्तिमन्त उपदेश बनी रहे। इस दुःख को मैं भी अनुभव करता हूं कि इस अपराध में इसका सहभागी भी अवश्य इसके समीप खड़ा होना चाहिए था। अंत में निश्चय ही उसका पता लगेगा और अवश्य लगेगा।" इतना कहकर उसने नागरिक को अभिवादन किया और अपने साथी इंडियन के कानों में कुछ कहा। तब वे दोनों ही



भीड़ में रास्ता बनाते हुए गायब हो गए।

जब यह सब हुआ, हेस्टर उसी तरह मंच पर खड़ी थी और उसकी दृष्टि उस व्यक्ति पर गड़ी हुई थी।

सिर पर दुपहरी का सूर्य आग बरसा रहा था और वह धूप में चमकता हुआ कलंक-चिह्न लिए तथा पाप के प्रतीक बच्चे को छाती से लगाए किसी उत्सव के दर्शकों के समान एकत्र भीड़ में खड़ी थी और वे लोग उसके सौन्दर्य को अपनी कलुषित दृष्टि से घूर रहे थे। भले ही यह स्थिति त्रासजन्य थी, किन्तु ऐसे मिलन के समय इतने लोगों की उपस्थिति से उसे सन्तोष का ही अनुभव हो रहा था। वह सोच रही थी कि उससे एकान्त में मिलन और अभिवादन की अपेक्षा तो यह कहीं अच्छा है कि उन दोनों के बीच लोगों का अपार समुद्र खड़ा है। यह विपत्ति ही उसके लिए सहारा बन गई और वह उस क्षण की कल्पना से आतंकित हो उठी, जब उससे रक्षा का यह साधन भी छूट जाएगा। तभी उसे किसी ने पीछे से पुकारा।

"मेरी बात सुनो हेस्टर प्राइन !" पुकारनेवाले ने कहा।

उस मंच से–जहां हेस्टर प्राइन खड़ी थी–ठीक ऊपर सभा-सदन से जुड़ी हुई एक बालकनी थी। जब कभी दण्डाधीशों का दरबार लगता था, तो उन दिनों की प्रचलित रस्मोंसहित इसी स्थान से घोषणाएं की जाती थीं। आज भी उस दृश्य को देखने के लिए गवर्नर वेलिंगम स्वयं पधारे थे। उस कुर्सी के समीप चार सार्जेण्ट हाथों में चमकदार भाले लिए हुए गवर्नर के प्रति सम्मान–प्रदर्शनार्थ खड़े थे। मुख्य शासक के आसपास बैठे लोगों में एक विशेष गरिमा लक्षित हो रही थी, जो उस युग की नैसर्गिक देन थी, जब शासकों और पदाधिकारियों को दैवी सम्मान से विभूषित समझा जाता था। निस्सन्देह वे साधु और न्यायप्रिय लोग होते थे। किन्तु जिन लोगों की ओर हेस्टर प्राइन ने अब दृष्टि डाली, उनके समान, एक अपराधी नारी के अपराध का निर्णय करने और उसके गुण-दोषों को इस प्रकार पृथक-पृथक करने की योग्यता और असहिष्णुता रखनेवाले विवेकशील और श्रेष्ठ लोग मानव-समाज में कम ही होंगे। निश्चय ही ऐसा प्रतीत होता था कि उसे यदि कोई सहानुभूति की आशा थी, तो वह उन लोगों से ही थी। अतः

ज्योंही उस अभागी नारी की दृष्टि बालकनी की ओर गई, उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह कांपने लगी। उसे पुकारनेवाला व्यक्ति बोस्टन के पादरियों में सबसे वृद्ध आदरणीय जॉन विलसन था, जो अपने समसामयिक पादरियों के समान ही बहुत विद्वान था। उसकी प्रकृति बहुत दयालु तथा सहानुभूतिपूर्ण थी, किन्तु इस प्रकृति का विकास अन्य बौद्धिक गुणों के समान समुचित रूप में नहीं हुआ था। वस्तुतः वे इसे श्रेयस्पद नहीं वरन् लज्जा का विषय समझते थे।

पादरी ने कहा, "हेस्टर प्राइन, मैंने बहुत प्रयत्न से अपने इस युवक साथी को मनाया है जिसकी तुम शिष्या रही हो।" इतना कह विलसन ने अपने पास बैठे एक पीले वर्ण के नवयुवक के कंधे पर हाथ रखा, "मैंने इन सज्जन व्यक्ति से अनुरोध किया है कि वे ही भगवान और इन विवेकशील तथा न्यायपूर्ण न्यायाधीशों को साक्षी मानकर तुम्हारे मामले के सम्बन्ध में बताएं और तुम्हारे कुकृत्य का उल्लेख करें, क्योंकि वे तुम्हारे स्वभाव को भली भांति जानते हैं। अतः वे ही यह उचित सोच सकते हैं कि दयापूर्ण तर्क दिए जाएं अथवा त्रासपूर्ण, जिनसे तुम अपनी कठोरता और ज़िद छोड़कर उस व्यक्ति का नाम बताने के लिए बाध्य हो जाओ, जिसने तुम्हें इस भयानक गर्त में धकेला है। ये नवयुवक मेरे मत का विरोध करते हैं, क्योंकि इनमें युवकसुलभ हृदय की कोमलता है, तो भी वे अपनी अवस्था की तुलना में बहुत बुद्धिमान हैं। ये कहते हैं कि इस प्रकार खुले-आम, लोगों के बीच नारी को अपना रहस्य बताने के लिए बाध्य करना स्त्री-प्रकृति के प्रति भारी भूल होगी ! मैंने उन्हें यह समझाने का प्रयत्न किया है कि लज्जा की बात तो पाप के कृत्य में थी न कि उसके उल्लेख में। डिम्सडेल महोदय, आप पुनः बताएं कि आपका इस विषय में क्या मत है। क्या आप इस बेचारी पापात्मा से प्रायश्चित कराएंगे या यह काम मुझे करना होगा।"

बालकनी में बैठे हुए प्रतिष्ठित तथा सम्मानित लोगों में कुछ सरसराहट-सी हुई और तब गवर्नर वेलिंगम ने अधिकारपूर्ण किन्तु सम्मानसूचक वाणी में डिम्सडेल को सम्बोधित करते हुए कहा, "मान्यवर



डिम्सडेल महोदय, इस महिला का उत्तरदायित्व अधिकतर आपके ऊपर है। अतः यह उचित होगा कि आप ही इसका प्रायश्चित कराएं और उसके प्रमाण हेतु इससे अपराध स्वीकार करवाएं।"

जब इंगलैंड के किसी महान विश्वविद्यालय से युग की अखिल ज्ञानराशि को संचित कर इस जंगली प्रदेश में आए हुए उस आदरणीय युवक डिम्सडेल से इस प्रकार सीधे निवेदन किया गया, तो सभी की दृष्टि उस ओर गई। मधुर भाषण और धर्म-भावना के कारण वह बहुत विख्यात हो चुका था।

विलसन ने कहा, "बन्धुवर ! उससे बोलो, यह उसकी आत्मा के उद्धार का अवसर है और तुम्हें इस पुण्यकार्य की ख्याति मिलने वाली है। उसे सत्य स्वीकार करने के लिए कहो !"

"हेस्टर प्राइन !" बरामदे पर झुके हुए और उसकी दृष्टि में दृष्टि मिलाकर डिम्सडेल बोला, "तुमने इस भद्र व्यक्ति की बात सुनी है और यह भी देखा है कि मुझे एक कठिन उत्तरदायित्व का पालन करना पड़ रहा है। यदि तुम अनुभव करती हो कि प्रायश्चित से तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिलेगी और यह सांसारिक दण्ड तुम्हारी मुक्ति का साधन बनेगा, तो मैं आदेश देता हूं कि इस अपराध तथा दुर्भाग्य दोनों में सहभागी अपने साथी का नाम बता दो। उसके प्रति गलती से ही व्यक्त की गई इस दयाशीलता और सहानुभूति के भुलावे में आकर चुप न रहो। तुम विश्वास करो हेस्टर प्राइन ! भले ही उस व्यक्ति को उच्च पद से गिरकर इस कलंक और लांछन के मंच पर तुम्हारे पास खड़ा होना पड़ेगा, किन्तु उसके लिए जीवन-भर अपराधी हृदय को छिपाने की अपेक्षा यह कहीं अच्छा होगा। तुम्हारे इस मौन से उसे क्या लाभ होगा? सिवाय इसके कि उसकी यही इच्छा होगी, वरन् यह कहना चाहिए कि वह इस बात के लिए बाध्य हो जाएगा कि पाप भी करे और अपने बड़प्पन की डींग भी मारता फिरे। भगवान ने तुम्हें कलंक दिया है, ताकि तुम अन्तस् के पाप और बाह्य शोक पर एकसाथ विजय पा सको। विचार करो, तुम क्यों उस व्यक्ति को इस कटु किन्तु कल्याणकारी पेय के उपभोग से वंचित कर रही हो जो तुम्हें मिला है, परन्तु

उस व्यक्ति में इतना साहस नहीं कि वह स्वयं बढ़कर इसका प्याला थाम ले।"

पादरी की यह प्रार्थना इतनी प्रभावोत्पादक थी कि सभी को यह पूर्ण विश्वास हो गया कि हेस्टर प्राइन अवश्य अपराधी का नाम बता देगी या फिर अपराधी, चाहे उसका समाज में उच्च स्थान हो या निम्न, आन्तरिक प्रेरणा से न केवल इस आवश्यकता को अनुभव करेगा, किन्तु बाध्य होकर स्वतः मंच पर आ खड़ा होगा, परन्तु हेस्टर ने सिर हिलाकर 'न' कर दी।

"हे महिला ! ईश्वर की दया का अतिक्रमण न करो।" आदरणीय विलसन ने अधिक कठोर आवाज़ में कहा, "उस नन्हे बच्चे को भी इस नेक सलाह को पुष्ट करने के लिए वाणी का वरदान मिला है। अतः उसका नाम बता दो। केवल नाम बताने और पश्चात्ताप-मात्र से उस 'रक्तिम अक्षर' के कलंक को तुमसे दूर किया जा सकता है।"

"कभी नहीं," हेस्टर प्राइन ने मिस्टर विलसन की ओर न देखते हुए नवयुवक पादरी की गहरी और घबराई हुई आंखों में दृष्टि डालकर उत्तर दिया, "ये अक्षर इतने गहरे अंकित हो चुके हैं कि आप इन्हें कुरेद नहीं सकते। अतः मैं अपराधी की व्यथा और अपनी विपत्ति को एकसाथ झेलूंगी।"

"तुम सब कुछ बता दो, ओ अभागी स्त्री !" मंच के समीप ही भीड़ में से किसी ने कठोरता से कहा, "अपने बच्चे को पिता की सन्तान बनने का सौभाग्य प्रदान करो।"

"नहीं ! मैं नहीं बताऊंगी !" उत्तर देते हुए हेस्टर का रंग मृतक के समान पीला पड़ गया। उसने निश्चय ही आवाज़ को पहचान लिया था। "मेरी बच्ची का पिता भगवान होगा और उसे कभी भी सांसारिक पिता का पता नहीं लगेगा।"

"वह कभी नहीं बताएगी।" बरामदे पर झुके हुए और हृदय पर हाथ रखकर अपनी प्रार्थना के उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए डिम्सडेल ने धीमे शब्दों में कहा और पीछे हट गया। उसका सारा शरीर पसीने से तर था। अनायास ही उसके अन्तस् से यही शब्द निकले, "उसमें नारी-हृदय की आश्चर्यजनक



शक्ति और उदारता है। वह कभी नहीं बताएगी।"

पादरी निर्दयतापूर्ण वाणी में गरज रहे थे, किन्तु उसके कानों पर उससे कोई भी प्रभाव नहीं पड़ रहा था। इस यातना के अन्तिम काल में शिशु अपनी चीख-पुकार से वातावरण को और भी क्षुब्ध कर रहा था और वह यन्त्रवत् उसे चुप कराने का प्रयत्न कर रही थी; किन्तु उसकी इस चेष्टा में लेश-मात्र भी सहानुभूति लक्षित नहीं हो रही थी।

उसी कठोरतापूर्ण ढंग से उसे जेल में वापस ले जाया गया जहां वह लोहे की सलाखोंवाले बरामदे के पीछे ओझल हो गई। उसे इस प्रकार जाते हुए देखनेवालों ने कहा कि 'रक्तिम अक्षर' का पाप-द्योतक प्रकाश उसके अंधकारपूर्ण मार्ग को प्रकाशित कर रहा था।

## चार

जेल में लौटने पर हेस्टर प्राइन की अवस्था इतनी आवेशपूर्ण थी कि उसकी निरन्तर निगरानी करना ज़रूरी था, ताकि वह कहीं अपने ऊपर कोई आघात न कर ले या क्रोधावेश में बच्चे को कोई हानि न पहुंचा बैठे। रात का अन्धकार छाने लगा था। मास्टर ब्रेकेट ने जब देखा कि उसे बुरा-भला कहने या दंड का भय दिखाने से भी वह किंचित्-मात्र आज्ञा मानने के लिए तैयार नहीं, तो उसने चिकित्सक की सहायता ली। उस चिकित्सक के बारे में उसका कथन था कि वह ईसाइयों के शरीर-विज्ञान-सम्बन्धी सभी उपचार-साधनों में प्रवीण है और असभ्य लोगों की जंगली जड़ी-बूटियों का भी उसे पूरा ज्ञान है। सच तो यह है कि हेस्टर की अपेक्षा कहीं अधिक उस बच्चे के उपचार की आवश्यकता थी, जो अपना अस्तित्व अक्षुण्ण रखने के लिए मां के दूध के साथ उसके हृदय में उठे संघर्ष, वेदना और निराशा के विष का पान कर रहा था। उसका शरीर ऐंठ रहा था और उस नन्ही-सी काया में मां के द्वारा दिन-भर सहन की गई व्यथा लक्षित हो रही थी।

जेलर के साथ वह व्यक्ति उस कमरे में पहुंचा, जहां दुःख का वातावरण व्याप्त था। जेलर ने जब उसे कमरे में भेजा, तो उसे आश्चर्य हुआ कि उसके आने के बाद जेल की नीरवता में वृद्धि हो गई थी, क्योंकि हेस्टर मृतक के समान निश्चेष्ट हो गई थी, परन्तु बच्चा अवश्य अब तक सिसकियां भर रहा था।

"मित्रवर, मुझे मेरे रोगी के पास अकेला छोड़ दो।" चिकित्सक ने कहा, "जेलर महोदय, आप मुझपर विश्वास रखिए और आप देखेंगे कि इसके बाद हेस्टर प्राइन पदाधिकारियों की बात को पहले की अपेक्षा अधिक मानने लगेगी।"

मास्टर ब्रेकेट ने उत्तर दिया, "नहीं, यदि आप ऐसा कर सकें, तो मैं आपको निश्चय ही बहुत चतुर मान लूंगा। इस महिला में जरूर भूतों की छाया विद्यमान है और मार-पीटकर शैतान से इसे छुटकारा दिलाने की आवश्यकता है।"

अजनबी ने अपने जिस व्यवसाय का उल्लेख किया उसके अनुरूप ही मौनावस्था में उसने कमरे में प्रवेश किया। जब जेलर उसे हेस्टर के समक्ष छोड़कर चला गया, तब भी उसके व्यवहार में कोई अन्तर नहीं आया। जिस गहन दृष्टि से रमणी ने उसे भीड़ में देखा था, उससे पता चलता था कि उनमें कोई निकटतम सम्बन्ध रहा है। उसका ध्यान सर्वप्रथम उस बच्चे की ओर गया, जो बिस्तर पर पड़ा ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था और जिसका शरीर ऐंठ रहा था। उसने ध्यानपूर्वक बच्चे को देखा और फिर उसने चमड़े का एक केस कपड़ों के नीचे से निकला तथा उसे खोलने लगा। उसमें दवाइयां भरी पड़ी थीं, उनमें से एक दवाई को उसने पानी के प्याले में मिलाया। वह बोला, "रसायनशास्त्रों में मेरे पुराने अध्ययन और गत एक वर्ष ऐसे लोगों में रहने के कारण, जो जड़ी-बूटियों की दवाइयां बनाने में बहुत प्रवीण हैं, मैं कई उपाधिधारी चिकित्सकों से भी अच्छा चिकित्सक बन गया हूं। हे स्त्री ! यह बच्चा तुम्हारा है, उसका मुझसे तो कोई सम्बन्ध नहीं, न ही यह मेरी आवाज को पहचानेगा अथवा उसे पिता की आवाज़ भी नहीं मानेगा। अतः तुम यह दवाई स्वयं अपने हाथों से इसे पिला दो।"



हेस्टर ने भयभीत दृष्टि से उसे देखा और दवाई के प्याले को वापस उसी की तरफ धकेल दिया।

"क्या तुम अपना बदला इस निर्दोष बालक से लेना चाहते हो?" उसने अत्यन्त धीमी आवाज़ में कहा।

"मूर्ख स्त्री !" चिकित्सक ने कुछ कठोरता तथा सान्त्वना-मिश्रित लहजे में कहा, "इस बिना बाप के विपत्तिग्रस्त बालक को हानि पहुंचाने से मुझे क्या मिलेगा? यह दवाई वस्तुतः गुणकारी है। वास्तव में यदि यह बच्चा मेरा ही होता और तुम मेरी होते हुए इसकी मां होतीं, तब भी मैं इतना ही कर पाता।"

हेस्टर अप्रतिभ-सी स्थिति में दवाई लेने से हिचकिचा रही थी, अतः चिकित्सक ने बच्चे को अपने हाथों में ले लिया और उसे दवाई पिला दी। तुरन्त औषधि का प्रभाव  दिखाई दिया तथा चिकित्सक के वचन पूरे होते दिखाई दिए। बच्चे की सिसकियां समाप्त हो गईं, शरीर की ऐंठन खत्म हुई तथा बच्चा अपने स्वभाव के अनुरूप कुछ ही क्षणों में निद्रा की सुखद गोद में झूलने लगा। अब चिकित्सक कहलाने के पूर्णतः अधिकारी उस व्यक्ति ने बच्चे की मां की ओर ध्यान दिया। उसने ध्यानपूर्वक देखा, नाड़ी की गति को अनुभव किया तथा दृष्टि में दृष्टि डालकर देखता रहा। उस तीक्ष्ण दृष्टि से आहत रमणी का हृदय डूबने लगा और वह सिहर उठी।

"पाताल की नदी के विस्मृति दिलानेवाले पेय का तो मुझे पता नहीं, परन्तु शोक दूर करनेवाली जड़ी-बूटी का मुझे ज्ञान है। मैंने जंगलों में रहकर नई रहस्यपूर्ण वस्तुओं की जानकारी प्राप्त की है और उनमें एक यह औषधि है। मैंने जंगल में रहते हुए एक इंडियन का पढ़ना-लिखना सिखाया था, जिसके बदले में उसने मुझे यह नुस्खा दिया था, इसे पी जाओ। संभवतः यह औषधि निष्पाप आत्मा से कम शान्तिप्रद होगी, किन्तु इससे तुम्हारे आवेशपूर्ण भाव इस प्रकार शान्त हो जाएंगे जैसे तूफानी सागर पर तेल डाल देने से उसकी तरंगें शान्त हो जाती हैं।"

वह बोली, "मैंने मृत्यु की बात भी सोची है, उसकी कामना भी की है, उसके लिए प्रार्थना भी करूंगी, किन्तु यदि इस प्याले में मृत्यु है तो मेरे

पी लेने से पूर्व तुम एक बार अवश्य सोच लो। देखो ! मैंने इसे अपने होंठों पर रख लिया है।"

"तो पी जाओ," उसी प्रकार भावशून्य मुद्रा में चिकित्सक ने उत्तर दिया, "तुम्हारा मुझसे क्या इतना कम परिचय है? क्या तुम समझती हो कि मेरी इच्छाएं इतनी नीच हो सकती हैं? यदि मैं तुमसे बदला लेने की बात भी सोचूं, तो मेरे उद्देश्य की पूर्ति तो इसी में है कि तुम जीवित रहो—तुम्हारे जीवन को खतरे में डालने की बजाय तो यह कहीं अच्छा है कि तुम जीओ और यह ज्वलन्त कलंक तुम्हारी छाती पर जलता रहे।" यह कहते हुए उसने अपनी उंगली 'रक्तिम अक्षर' पर रख दी जिससे हेस्टर के वक्ष में ऐसी जलन पैदा हुई, मानो किसी ने उसके वक्ष पर लोहे की सलाख लगा दी हो।

उसने हेस्टर की निश्चेष्ट अवस्था को देखा और वह मुसकराया, "तुम जीवित रहो और प्रत्येक स्त्री—पुरुष की दृष्टि में तथा उस व्यक्ति की दृष्टि में भी जिसे तुमने कभी पति कहा था, और इस बच्चे की दृष्टि में भी मृत्यु-पर्यन्त इस कलंक को ढोती रहो, तुम जीवित रह सको इसीलिए यह औषधि पी डालो।" और हेस्टर ने प्याला पी लिया।

"हेस्टर !" वह बोला, "मैं यह नहीं पूछता कि तुम क्यों और किस प्रकार गर्त में गिरीं। कारण स्पष्ट ही है। यह मेरी मूर्खता का और तुम्हारी कमज़ोरी का परिणाम है। मैं बुद्धि-प्रधान जीव हूं—बड़े-बड़े पुस्तकालयों का किताबी कीड़ा। लोग मुझे विवेकशील कहते हैं, किन्तु यदि साधुजन अपने हितचिन्तन में विवेकशील होते, तो सम्भवतः मैं पहले ही जान जाता कि उस विस्तृत तथा भयानक जंगल से बाहर निकलकर ईसाइयों की इस बस्ती में पहुंचते ही मैं सर्वप्रथम तुम्हें ही—हेस्टर प्राइन को ही—लोगों के सामने कलंक की मूर्ति बने देखूंगा। प्रत्युत तुम्हारे साथ विवाहित दम्पती के रूप में प्राचीन गिरजाघर की सीढ़ियों से उतरते हुए ही मुझे अपने मार्ग की समाप्ति पर ज्वलन्त 'रक्तिम अक्षरवाली धधकती ज्वाला दिखाई देती।''

''तुम तो जानते ही हो,'' हेस्टर ने कहा। वह व्यथा से इतनी उद्विग्न थी कि वह अपने कलंक के अन्तिम आघात को सहन न कर सकी, ''तुम



तो जानते ही हो कि मैंने स्पष्ट बता दिया था कि न तो मुझे तुमसे प्रेम था और न ही मैं प्रेम का बहाना करती थी।''

''सच है,'' उसने उत्तर दिया, ''मैं तो पहले ही कह चुका हूं कि यह मेरी भूल थी। किन्तु तब तक मेरा जीवन व्यर्थ ही रहा। विश्व में प्रसन्नता का इतना अभाव था कि मेरा हृदय अनेक लोगों के लिए सहानुभूति का आगार बना हुआ था, किन्तु मैं स्वयं एकाकी और स्नेह की स्निग्धता से सर्वथा वंचित था। मैं भी प्रेम की दीपशिखा से अंतस् को प्रकाशित करने की कामना करता था। यह स्वप्न व्यर्थ नहीं था—यद्यपि मैं बूढ़ा था—मेरी प्रकृति में गहन उदासी थी तथा शरीर विकृत, फिर भी संसार-भर में लोगों को मिले हुए साधारण वरदान किसी दिन पुंजीभूत होकर मेरे हो जाएंगे। इसीलिए हेस्टर ! मैंने तुम्हें अपने हृदय में बिठाया था। उसके निभृत कोने में तुम्हें स्थान दिया था और तुम्हारी उपस्थिति से उत्पन्न स्निग्धता को तुम्हें प्रदान कर दिया था।''

''मैंने तुम्हारे साथ बहुत अन्याय किया है।'' धीमे शब्दों में हेस्टर बोली।

''हम दोनों ने ही एक-दूसरे के साथ अन्याय किया है।'' उसने उत्तर दिया, ''सर्वप्रथम दोष मेरा ही था कि मैंने तुम्हारे विकासोन्मुख उद्दाम यौवन का झूठा और अप्राकृतिक सम्बन्ध अपने ढलते जीवन से जोड़कर उसके प्रति धोखे का व्यवहार किया था, अतः मैंने तुम्हारे अरमानों पर कुठाराघात किया तथा कभी भी विवेक से काम न लेकर दर्शन की समस्याओं को सुलझाने में ही लगा रहा, इसलिए तुमसे कोई बदला नहीं लेना चाहता, न ही तुम्हारे प्रति कोई बुराई करने की कामना करता हूं, क्योंकि तुम्हारे और मेरे अपराध समान हैं। किन्तु हेस्टर ! क्या वह व्यक्ति जीवित है, जिसने तुम्हारे और मेरे दोनों के प्रति यह अन्याय किया है? वह कौन है ?"

"यह मुझसे मत पूछो," हेस्टर ने उसके चेहरे पर कठोर दृष्टि गड़ाते हुए कहा, "यह तुम कभी भी नहीं जान सकोगे !"

"कभी नहीं, ऐसा तुम कहती हो?" उसने गहरी मुसकान और आत्मविश्वासपूर्ण विवेकशीलता के साथ उत्तर दिया, "मैं कभी उसे जान

नहीं सकूंगा, इस दृश्य जगत् में अथवा विचार की गहनतम वीथिका में शायद ही कोई वस्तु रहस्यान्वेषण में दत्तचित व्यक्ति की दृष्टि से छिपी रह सकती है। भले ही उत्सुक जनसमूह से तुम अपना रहस्य छिपा सकती हो; तुम पादरियों तथा दण्डाधीशों से भी अपने रहस्य को गुप्त रख सकती हो, जैसाकि तुमने आज उस समय किया था जब वे तुम्हारे मन से उस व्यक्ति का नाम कुरेदकर उसे मंच पर तुम्हारा साथी बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। किन्तु मैं उस रहस्य की खोज अपनी विकसित और प्रबुद्ध चेतना से करूंगा जिससे वे सब लोग वंचित थे। मैं उसी प्रकार उस व्यक्ति को ढूंढ़ निकालूंगा, जैसे मैंने पुस्तकों में से सत्य की खोज की है और रसायनों से सोना निकालने का प्रयत्न किया है। मेरे अन्तस् की सहानुभूति ही मुझे बता देगी कि वह कौन है।

उस विद्वान की झुर्रियों-भरी आंखों से प्रखर तेज की किरणें फूट रही थीं जिससे घबराकर हेस्टर प्राइन ने दोनों हाथ हृदय पर रख लिए कि कहीं वह उसमें अंकित रहस्य को न पढ़ ले।

"तो तुम उसका नाम नहीं बताओगी? तब भी मुझे पता लग जाएगा," उसने बात जारी रखते हुए कहा, "उसके वस्त्रों पर तुम्हारी तरह लांछन का चिह्न तो नहीं होगा, किन्तु मैं उसे उसके हृदय से पढ़ लूंगा। उसके लिए तुम निश्चिन्त रहो। यह विचार मत करो कि मैं विधि के दण्ड-विधान में हस्तक्षेप करूंगा अथवा उसे कानून के हाथों में देकर स्वयं अपनी हानि कर बैठूंगा, और यह तो कभी कल्पना भी मत करना कि मैं उसके जीवन पर आघात करूंगा अथवा—जैसा मेरा अनुमान है कि वह अवश्य एक विख्यात व्यक्ति है—मैं उसकी ख्याति को नष्ट करने का प्रयास करूंगा।

"तुम्हारे कार्यों में दया दृष्टिगोचर होती है," हेस्टर ने आश्चर्य और आतंक भाव से कहा, "तुम्हारे शब्द भयभीत कर देनेवाले हैं।"

"तुम कभी मेरी पत्नी थीं, इसलिए एक प्रार्थना तुमसे अवश्य करूंगा।" विद्वान ने कहा, "तुमने अपने प्रेमी का रहस्य गुप्त रखा है, उसी प्रकार मेरे रहस्य को भी रखो। इस प्रदेश में कोई भी मुझे नहीं जानता, किसी भी व्यक्ति को यह मत बताना कि तुम कभी मुझे पति कहकर पुकारा



करती थीं। पृथ्वी के इस वन्य-प्रदेश में मैं अपना शिविर डाल दूंगा, क्योंकि अन्यत्र मैं मानव-सुलभ रुचियों से वंचित घुमक्कड़ ही बना रहूंगा; किन्तु यहां एक पुरुष, एक स्त्री और बच्चा है जिसके साथ मेरे घनिष्ठतम सम्बन्ध जुड़ चुके हैं। इस सम्बन्ध का कारण प्रेम हो या घृणा, आधार ठीक हो या गलत, किन्तु हेस्टर प्राइन, तुम और तुम्हारा प्रेमी दोनों मेरे हो चुके हैं। मेरा घर वही है जहां तुम हो—जहां वह है। परन्तु कभी भी किसी को मेरा रहस्य मत बताना।"

"तुम ऐसा क्यों चाहते हो?" न जाने क्यों इस गुप्त बन्धन से घबराते हुए हेस्टर ने पूछा, "तुम क्यों खुलेतौर पर यह घोषणा करके कि तुम मेरे पति हो, मुझे सदा के लिए नहीं छोड़ देते?

उसने उत्तर दिया, "सम्भवतः मैं उस अपमान से भयभीत हूं जिसका सामना एक विश्वासघातिनी पत्नी के पति को करना पड़ता है। कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं। मेरा प्रयोजन केवल यह है कि मैं मृत्यु-पर्यन्त अज्ञात जीवन व्यतीत करूं। अतः संसार को यही समझने दो कि तुम्हारा पति मर चुका है, जिसका कोई समाचार मिलने की आशा नहीं। शब्द, संकेत अथवा दृष्टि किसी भी प्रकार से यह व्यक्त न करो कि तुम मुझे पहचानती हो। तुम जिसे चाहती हो, उसे भी मेरा रहस्य मत बताओ। यदि तुमने मेरे साथ विश्वासघात किया, तो याद रखो, उसकी मान-मर्यादा सभी कुछ मेरे हाथ में होगी।"

"मैं तुम्हारे रहस्य को इसी प्रकार गुप्त रखूंगी, जिस प्रकार मैंने इस रहस्य को रखा है।" हेस्टर बोली।

"शपथ लो।" उसने उत्तर दिया।

और हेस्टर ने शपथ ले ली।

"और अब श्रीमती प्राइन," बूढ़े रोज़र चिलिंगवर्थ ने—इसी नाम से उसका आगे उल्लेख किया जाएगा—कहा, "अब मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चे तथा उस 'रक्तिम अक्षर' को अकेला छोड़ रहा हूं। यह कैसा रहेगा हेस्टर? क्या तुमको सोने के समय भी इस लांछन को पहने रखना होगा? क्या तुम्हें इससे बुरे-बुरे स्वप्न आने का भय नहीं?"

"इस प्रकार क्यों मुझ पर हंस रहे हो?" हेस्टर ने उसकी दृष्टि के क्षोभपूर्ण भाव को भांपते हुए पूछा, "क्या तुम उस ब्लैकमैन के समान हो जो इस बस्ती के आसपास के जंगल में घूमा करता है? क्या तुमने मुझे शपथ के ऐसे बंधन में बांध लिया है, जो मेरी आत्मा का विनाशक होगा?"

"नहीं, तुम्हारी आत्मा नहीं।" उसने पुनः मुसकराते हुए उत्तर दिया, "नहीं ! नहीं !! तुम्हारी नहीं···कदापि नहीं !"

## पांच

हेस्टर की कारावास की अवधि समाप्त हुई। जेल से बाहर आकर उसने उन्मुक्त आकाश के नीचे खुली धूप और प्रकाश में सांस ली।

वह न्यू इंगलैण्ड में रहने के लिए अपने-आपको जो विश्वास दिलाने का प्रयत्न कर रही थी और अन्त में जो उसने तर्क निकाला, वह अर्धसन्य और भुलावा-मात्र था। उसने मन ही मन कहा था कि यहीं उसने अपराध किया था और यहीं उसे सांसारिक दण्ड भोगना चाहिए और लांछन की नित्यप्रति की यातना से आखिर उसकी आत्मा पुनः परिष्कृत होगी और उसमें नई पवित्रता का प्रादुर्भाव होगा और यह बलिदान उसे देवों की कोटि में पहुंचा देगा।

अतः हेस्टर प्राइन भागी नहीं। नगर के बाहर प्रायद्वीप की सीमा के समीप सभी बस्तियों से अलग-अलग एक छोटी-सी फूस की झोंपड़ी थी। बस्ती को बसानेवालों में से किसी ने उसे बनाया था। वहां की भूमि बंजर होने से और दूर होने के कारण वह मनुष्यों की चहल-पहल से रहित थी, इसलिए बनानेवाले स्वामी ने उस स्थान को छोड़ दिया था। उस झोंपड़ी के सामने ठाठें मारता हुआ समुद्र था और पश्चिम की ओर पहाड़ियों पर घने जंगल थे। हेस्टर के पास जो कुछ भी थोड़ा-बहुत सामान था, उसे लेकर, दण्डाधीशों की अनुमति से उन्हीं की संदेहपूर्ण निगरानी में, वह उस एकान्त



गृह में अपने बच्चे के साथ रहने लगी। उसी दिन से वह स्थान सन्देह की रहस्यमयी कालिमा से आवेष्टित हो गया।

उस एकाकिनी हेस्टर का संसार में कोई मित्र नहीं था, जो साहस करके उसके पास आ सकता; किन्तु उसे किसी अभाव से पीड़ित होने का खतरा नहीं था, क्योंकि उसके पास एक ऐसी कला थी जिसके सहारे वह अपनी तथा बच्चे की आजीविका भली भांति चला सकती थी। वह सिलाई के काम में बड़ी सिद्धहस्त थी; जिस पर उस युग में नारी का पूर्ण आधिपत्य था और आज भी है। उसकी छाती पर विचित्र प्रकार से कढ़ा हुआ वह अक्षर सुकोमल भावनाओं तथा सजीव कल्पना-भरी कला का प्रतीक था। किसी को पादरी-जीवन की दीक्षा देने या दण्डाधीशों को पदारूढ़ करने आदि के सार्वजनिक उत्सवों पर अथवा ऐसे अवसरों पर जब नई सरकारें अपनी गरिमा और प्रतिष्ठा को प्रदर्शित करती हैं, नीति के रूप में ऐसी रस्में मनाई जाती थीं, जिनमें पूर्ण गाम्भीर्य होते हुए भी पूरी शान दिखाई जाती थी। शासक-वर्ग के सभी लोगों के लिए गहरे कालर, सुन्दर टाइयां और अत्यधिक कढ़ाईवाले दस्ताने आवश्यक समझे जाते थे और यद्यपि सामान्य लोगों को इस प्रकार की खर्चीली वेश-भूषा की कानून द्वारा अनुमति नहीं थी, किन्तु ऊंचे दर्जे के और धनाढ्य लोगों को इसकी पूरी छूट थी। मातम के समय में भी मृतक-शरीर के परिधान—काले कपड़े—सफेद चादर तथा सम्बन्धियों के शोक में भी हेस्टर प्राइन के श्रम से बनी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती।

शनैः-शनैः उसकी हस्तकला फैशन बन गई—या तो उस विपत्तिग्रस्त नारी के प्रति सहानुभूति के कारण अथवा ऐसी विकृत उत्सुकता के कारण जिससे सामान्य और निम्नतम वस्तुओं को भी मूल्यवान समझ लिया जाता है, अथवा अन्य कुछ अस्पष्ट कारणों से। सम्भवतः हेस्टर ने इस श्रम-कार्य से अपने अभाव की पूर्ति कर ली थी। निश्चय ही उसके पास इतना अधिक काम था कि वह जितने घण्टे उचित समझती, काम में लगी रह सकती थी। उसके पाप से दूषित हाथों से बने वस्त्रों को शाही उत्सवों पर पहनकर मिथ्याभिमान को नष्ट किया जाता था। उस समय उसकी सिलाई गवर्नर

के कालर में, सैनिकों के रूमालों और पादरियों की टाइयों में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती थी। इसी सिलाई से बच्चों की टोपियां सुशोभित होती थीं। यह सिलाई मृतक के कफन के साथ भूगर्भ में गलने-सड़ने के लिए डाल दी जाती थी। किन्तु कभी भी नववधू की लज्जा पर आवरण डालनेवाले सफेद घूंघट पर उससे सिलाई नहीं करवाई जाती थी। इससे पता चलता था कि समाज कितनी निर्दयता से उससे घृणा करता था।

उसके अपने वस्त्र मोटे तथा सफ़ेद रंग के थे और आभूषण के रूप में था केवल 'रक्तिम अक्षर', जिसे पहने रखना उसकी कुटिल भाग्य-लिपि में बदा था। अपनी बच्ची की सजावट पर व्यय के बाद बचे हुए अतिरिक्त पैसों को अपने से कम विपत्तिग्रस्त उन स्त्रियों को दान दे देती थी, जो प्रायः अपने पालनकर्ता का ही अपमान कर दिया करती थीं। इस तरह बहुत-सा समय जो वह कला के उत्कृष्ट कार्य में लगा सकती थी, गरीबों के मामूली कपड़े सीने में ही व्यय कर देती थी।

हेस्टर के लिए अपने जीवन की समस्त वासना को अभिव्यक्त करने तथा शान्त करने का वह एकमात्र साधन हो सकता था, किन्तु वह उसकी आनन्दानुभूति को अन्य सुखों की तरह पाप ही समझती थी। इस प्रकार इस मामूली बात से भी चेतना की विकृति के कारण यह भय होता था कि वह वास्तविक प्रायश्चित्त नहीं कर रही, प्रत्युत उसके स्थान पर कुछ और ही सन्देहजनक तथा गलत बात उसके मन में है।

इस प्रकार हेस्टर प्राइन भी संसार के कार्य-व्यापार में अपना योग दे रही थी। चरित्र के स्वाभाविक बल और अपूर्व क्षमता के कारण वह अपने दायित्व की अवहेलना नहीं कर सकी। किन्तु कठोर श्रम और विरक्ति ने उसकी आकृति पर हत्यारे की कुटिल भौंहों से भी कठोर चिह्न अंकित कर दिए थे। समाज के साथ सम्पर्क और व्यवहार में कोई भी तो ऐसी बात नहीं थी, जिससे वह अनुभव करती कि वह स्वयं भी समाज का अंग है। प्रत्येक दृष्टि, प्रत्येक भंगिमा, प्रत्येक शब्द यहां तक कि उसके सम्पर्क में आनेवालों के मौन में भी उपेक्षा का भाव निहित था और प्रायः यह व्यक्त भी किया जाता था कि वह समाज से निर्वासित है और है सर्वथा परित्यक्त,



मानो वह किसी अन्य नक्षत्र-लोक की अभिशप्ता हो और उसके कार्य मानवेतर प्राणियों के से हों।

हेस्टर ने चिर-अभ्यास से अपने स्वभाव को ऐसा बना लिया था कि वह कभी इन प्रहारों का उत्तर नहीं देती थी। बस, केवल लाली की एक रेखा उसके पीले कपोलों पर दौड़ जाती और फिर हृदय की गहराइयों में विलीन हो जाती थी। समाज ने उसे अपने क्रोध का शिकार बनाया था, किन्तु वह कभी भी अपने शत्रुओं की हानि के लिए प्रार्थना नहीं करती थी, और इस बात के लिए चिन्तित रहती थी कि कहीं उसकी क्षमा की कामनाओं पर भी उसके वरदान-भरे शब्द अभिशाप में न बदल जाएं। प्यूरिटनों के न्यायालय ने उसके लिए जो चिरकाल तक सालनेवाले दण्ड का कुटिल विधान किया था, उसकी व्यवस्था निरन्तर तथा अनेक प्रकार से उसकी अगणित धड़कनों में व्याप्त रहती थी। पादरी लोग उसे देखते ही गली में खड़े होकर उपदेश करने लगते थे और उस बेचारी के चारों ओर क्रूर तथा कुटिल दृष्टिवाले लोगों की भीड़ लग जाती थी। यदि वह गिरजे में परमपिता के ध्यान में थोड़ी देर के लिए सुखद शान्ति का प्रसाद पाने के हेतु प्रवेश करती, तो वहां भी दुर्भाग्यवश यही देखती कि पादरी उसी के जीवन को धर्मोपदेश का विषय बना रहे हैं। उसे बच्चों से भी डर लगने लगा था, क्योंकि सब बच्चों के हृदयों में उनके माता-पिताओं ने उसके प्रति, जो अपनी एकमात्र बच्ची के साथ नगर की गलियों में मौन भाव से घूमा करती थी, कुछ अस्पष्ट तथा आतंकपूर्ण भावनाएं भर दी थीं। पहले तो बच्चे उसे गली में से निकल जाने देते और फिर कुछ दूरी पर खड़े होकर चीखें मारते और एक शब्द का उच्चारण करते, जिसका तात्पर्य उन्हें स्वयं तो मालूम नहीं होता था, किन्तु वह शब्द उस नारी के हृदय पर बाण की तरह लगता और उसे ऐसा अनुभव होता, मानो समस्त संसार को उसके कुकर्म का पता चल चुका है। यदि वृक्षों के पत्ते उसकी पाप भरी कहानी को आपस में कहते, ग्रीष्म ऋतु की वायु यह कहानी सुनाती तथा सर्दियों का अंधड़ भी इसका वर्णन करता, तो भी उसे इतनी व्यथा न होती जितनी इन निष्पाप बच्चों के मुंह से कहलाए शब्दों के भार से होती थी। इतना

ही नहीं, प्रत्येक नई दृष्टि का आघात उसकी वेदना को असह्य बना देता और विशेषतः जब कोई परदेसी उस 'रक्तिम अक्षर' की ओर आश्चर्य भाव से देखता, तो हेस्टर को ऐसा प्रतीत होता, मानो उसकी आत्मा को कचोटा जा रहा हो। वह प्रायः उस कलंक-चिह्न को अपने हाथ से छिपाना चाहती, किन्तु छिपा न पाती थी। इसके अतिरिक्त परिचित दृष्टि का आघात और भी अधिक सालनेवाला होता था और वह निर्दय दृष्टि अत्यन्त असहनीय व्यथा जगा देती थी। इतने आघात सहने पर भी उसका हृतल कठोर नहीं हुआ था, प्रत्युत प्रत्येक दृष्टि से वेदना के अंकुरों को नया जीवन मिलता था।

किन्तु कई दिन बीत जाते, महीनों गुज़र जाते और फिर किसी दिन उसके इस लांछन पर कोई ऐसी दृष्टि भी पड़ती थी जिससे उसको क्षण-भर के लिए आराम मिल जाता और उसे ऐसा लगता मानो किसी ने उसकी पीड़ा बांट ली हो। किन्तु दूसरे ही क्षण उसके हृदय में गहन वेदना उमड़ आती और वह समझने लगती कि मानो उस क्षण उसने दुबारा पाप किया हो। पर क्या अकेली हेस्टर ने ही पाप किया था? तभी उसके विचारों पर एक दुष्प्रभाव पैदा हो जाता। यदि उसका नैतिक तथा बौद्धिक बल क्षीण होता, तो एकाकी जीवन की इस व्यथा का प्रभाव और भी अधिक होता। जिस अपनी छोटी-सी दुनिया से उसका बाह्य सम्पर्क था, उसमें घूमते-फिरते हेस्टर को कभी-कभी ऐसा लगता—यद्यपि यह कल्पना-मात्र थी, किन्तु थी इतनी सशक्त कि उसे रोका नहीं जा सकता था; या तो ये कल्पनाएं ही थीं अथवा अनुभूति—कि इस 'रक्तिम अक्षर' ने उसमें नवचेतना का संचार किया है। वह अपने इस विश्वास पर भयभीत होकर कांपने लगती कि उसे दूसरों के अन्तस् के पापों का ज्ञान हो गया है। किन्तु बरबस यह विश्वास उसके मन में घर कर लेता था। आत्मा की इस नई शक्ति के द्वारा उसे जिन बातों का ज्ञान होता था, उनसे वह आतंकित हो उठती थी। आखिर वे बातें क्या थीं? सम्भवतः शैतान ही उससे कानाफूसी किया करता था और यद्यपि वह अपना पूरा प्रभाव नहीं डाल सका था, किन्तु वह उसे यही समझाना चाहता था कि बाह्य पवित्रता केवल धोखा है और झूठ है। यदि



सत्य को ढूंढ़ा जाए, तो अनेक नारियों की छाती पर हेस्टर की तरह 'रक्तिम अक्षर' चमकता दिखाई दे। या फिर उसे कुछ अस्पष्ट किन्तु वास्तविक सूचनाएं कहीं से मिल जाती थीं। उसके दुःख-भरे अनुभव में कोई भी बात इन भावोद्वेगों से अधिक कष्टप्रद तथा घृणित नहीं थी। जब कभी कुसमय में ऐसा आवेग उठता, तो उसका हृदय घबराहट और व्यथा से व्याप्त हो जाता था और जब वह सदाचार और न्याय के पुतले किसी माननीय मन्त्री या दण्डाधीश के पास से गुज़रती, तो उसके उस रक्तिम लांछन से एक सहानुभूतिपूर्ण उच्छ्वास निकलता, क्योंकि दुनिया के लोग इन पदाधिकारियों को उस युग में देवताओं के समान समझते थे। हेस्टर अपने हृदय में कहती—क्या मूर्तिमन्त बुराइयां उसके ही समीप हैं? परन्तु जब वह अनिच्छा से उधर देखती, तो उसे उन पादरियों में भी मानवता का सर्वथा अभाव दिखाई देता। इसी प्रकार जब वह किसी धर्म-प्रचारक भिक्षुणी के पास से गुज़रती, जो किंवदन्ती के आधार पर आजन्म कुंवारी रही है और जिसने वासनाओं को अपने हृदय में हिम की तरह शीतल कर रखा है, तब वह भिक्षुणी भी अत्यन्त घृणा की दृष्टि से उसकी ओर देखती, तो यूं प्रतीत होता जैसे उस आजन्म कुंवारी के अन्तस् की ऊष्मा से पिघलती हुई हिम और हेस्टर प्राइन के वक्ष पर चमकते हुए उस लांछन में बहुत समानता है। अथवा उसे अकस्मात् एक चेतावनी मिलती, 'देखो हेस्टर, यह भी तुम्हारी ही साथिन है।' और ज्योंही वह ऊपर देखती, तो उसे पता लगता कि कोई नवयुवती उसके 'रक्तिम अक्षर' को देख रही है। फिर वह देखती कि उस नवयुवती के कपोलों पर रक्तिमा दौड़ गई है, मानो इस क्षणिक दृष्टिपात से ही उसकी सच्चरित्रता पर धब्बा लग गया हो। हे शैतान ! क्या तुम्हारे तिलस्म का यह चिह्न यौवन तथा वृद्धावस्था में भी इस बेचारी पापात्मा के लिए कुछ न छोड़ेगा? श्रद्धा का अभाव पाप का दुःखद परिणाम होता है। सच तो यह है कि अपनी ही दुर्बलता से आहत इस बेचारी अभागिनी के चरित्र में भी तो सदाचार का कुछ अंश अवश्य होगा, किन्तु मनुष्य का कठोर कानून यही कहता था कि कोई भी प्राणी इससे अधिक अपराधी नहीं है।

उस हृदयहीन शुष्क युग में लफंगे लोग अपनी कल्पना के आधार पर वातावरण में एक विचित्र आतंक फैला देते थे और 'रक्तिम अक्षर' के सम्बन्ध में एक कहानी सुनाया करते थे। उनका कहना था कि यह चिह्न किसी रंग में डालकर रंगा हुआ केवल रक्तिम वस्त्र नहीं है। इसकी रक्तिमा नरक की जला देनेवाली आग की द्योतक है और जब हेस्टर प्राइन रात्रि के समय कहीं निकलती है, तो उसके वक्षस्थल पर उसको दहकते हुए देखा जा सकता है। और हमें यह अवश्य ही कहना पड़ता है कि इस अक्षर से हेस्टर की छाती पूर्ण रूप से दग्ध होती होगी। उन लफंगों की किंवदन्तियों में सम्भवतः पर्याप्त सत्य था, चाहे आधुनिक युग के लोग भले ही स्वीकार न करें।

## छः

हमने अब तक उस नन्हे शिशु के बारे में बहुत कम कहा है, जिसके निष्पाप जीवन का आविर्भाव विधाता के अज्ञात आदेश से हुआ था और जो सुन्दर अनश्वर कमल के समान अपराधपूर्ण वासनाओं की कीच में से उत्पन्न हुआ था। उसके विकास तथा दिन-प्रतिदिन उसकी निखरती हुई सौंदर्य-प्रभा और उस—पर्ल—के सुकोमल और नन्हे अंगों में प्रस्फुटित होनेवाली प्रतिभा की आभा को निहारना उस दुःखी स्त्री को कितना विचित्र लगता था ! हेस्टर ने उसका नाम पर्ल ही रखा था। यद्यपि यह नाम इस बात का द्योतक नहीं था कि उसमें मोती की सी शांत और दुग्ध-धवल कांति थी, किंतु वह इसलिए बच्ची को पर्ल (मोती) कहकर पुकारा करती थी कि उसका मूल्य अत्यधिक था, क्योंकि उसे मां ने अपनी समस्त एकमात्र निधि लुटाकर पाया था। उसी बच्ची का स्थान उसके लांछित वक्ष पर था, वही उसके जीवन का सम्पर्क नश्वर मानव की जाति और आनेवाली पीढ़ियों से जोड़ रही थी तथा वही उसे स्वर्ग की पवित्रात्मा बनानेवाली थी। किन्तु इन विचारों से हेस्टर के मन में आशा की बजाय आतंक ही उत्पन्न होता



था। वह तो यही जानती थी कि उसका कार्य पापपूर्ण था, जिसका परिणाम शुभ नहीं हो सकता। वह बच्ची के उत्तरोत्तर विकास को देखती हुई भयभीत हुआ करती थी और उसे उसमें बच्ची को जन्म देनेवाले अपने अपराध की कालिमा का आभास मिलता था। बच्ची में एक प्रकार की गरिमा थी जिससे प्रायः अनुपम सौंदर्य वंचित रहता है। उसके वस्त्र यदि साधारण भी होते, तो भी प्रत्येक देखनेवाले को ऐसा प्रतीत होता कि वे अत्यधिक सुन्दर बने हुए हैं। किन्तु पर्ल को मोटे कपड़े नहीं पहनाए जाते थे। उसके गंवारू खेलों द्वारा फटे और धूलि-धूसरित, मोटे गाढ़े के गाउन से भी वह उतनी ही सुन्दर लगती थी। पर्ल के अनेक प्रकार के वस्त्र थे। इस एक बच्ची में ही हेस्टर को अनेक बच्चों का आभास मिलता था। अतः उसमें किसी किसान की बेटी का जंगली फूल जैसा निखार भी था और किसी शिशु राजकुमारी की शान भी। किन्तु इस सबमें एक उत्कट भावना थी—एक प्रकार का रंग, जो कभी भी समाप्त नहीं होता था, पर यदि किसी परिवर्तनवश उसका रंग पीला पड़ गया, तो उसकी विशेषता ही नष्ट हो जाएगी और वह पर्ल नहीं रहेगी।

इस बाह्य परिवर्तनशीलता से उसके आंतरित जीवन के अनेक गुणों का स्पष्ट पता चलता था। उसकी प्रकृति में गम्भीरता भी थी और अनेकरूपता भी, किन्तु हेस्टर की आशंकाओं ने ही उसे धोखा दिया था—न तो उसमें संसार के प्रति आग्रह था और न ही संसार के साथ मिलकर चलने की भावना। वह सामाजिक नियम का पालन करनेवाली न बन सकी। उसे जन्म देने में एक महान नियम का उल्लंघन किया गया था और उसके परिणामस्वरूप इसका आविर्भाव हुआ था, जिसमें गुण और विशेषताएं अति सुन्दर थीं, किन्तु उनमें कोई व्यवस्था नहीं थी या फिर यदि कोई व्यवस्था थी भी, तो वह भी अनियमित-सी और उसकी विशेष प्रकृति के अनुकूल ही। उन गुणों की विविधता तथा व्यवस्था को आंकना अत्यंत कठिन अथवा असम्भव था। हेस्टर ही बालिका के चरित्र का विश्लेषण उस काल की अपनी जीवन-स्थिति के अवलोकन द्वारा कर सकती थी, जब वह अपनी आध्यात्मिक भावनाओं से उस बच्ची की आत्मा को तथा अपने मांस-मज्जा

से उसके शरीर को पोषित कर रही थी। जन्म से पूर्व ही उस बालिका को मां की आवेशपूर्ण स्थिति से नैतिक जीवन की किरणें मिली थीं और यद्यपि उन किरणों का मूलरूप कितना ही श्वेत और प्रखर था, किन्तु उनमें गहरे लाल-सुनहरे धब्बे, अग्निशिखा की सी चमक, एक काली परछाईं और मध्य में स्वच्छ प्रकाश से प्रकाशित तत्त्व अवश्य था। इसके अतिरिक्त हेस्टर की आत्मा को उन दिनों जिस संघर्ष का सामना करना पड़ रहा था, उसका स्पष्ट प्रभाव पर्ल पर अंकित हो गया था। वह पर्ल के स्वभाव में तेज़ी, उपेक्षा, उद्दण्डता, तीव्र उतार-चढ़ाव और हृदय पर छाए हुए उदासी के घने काले बादलों को स्पष्ट देख सकती थी। वे सब गुण अब नवोदित बालिका के उषा जैसे दिव्य प्रकाश में चमक रहे थे—और कौन जाने दोपहरी के ढल जाने पर वहां अंधड़ और तूफान का प्रकोप हो।

हेस्टर प्राइन एक ऐसी मां थी, जो अपनी एकमात्र बच्ची पर अनुचित सख़्ती करने से घबराती थी। किन्तु अपनी गलतियों और विपत्तियों का ध्यान रखते हुए अपने अधीन इस अनश्वर शैशव पर दयापूर्ण किन्तु कठोर नियन्त्रण रखा करती थी। उसने मधुर मुसकान और तीखी भृकुटी दोनों का प्रयोग करके देख लिया था कि उपचार के इन दोनों साधनों का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। अतः वह पास खड़ी होकर बालिका को अपनी प्रवृत्ति के अनुसार चलने देती थी। शारीरिक बाध्यता और नियन्त्रण जितनी देर रहता, उतनी ही देर उसका प्रभाव भी रहता था। मन अथवा बुद्धि पर प्रभाव डालने वाले अन्य प्रकार के अनुशासन में नन्हीं पर्ल की वृत्ति में क्षणिक परिवर्तनों के कारण उसके अन्तस् की थाह ही नहीं मिलती थी। पर्ल के शैशवकाल में ही हेस्टर को उसकी उस विशेष दृष्टि का ज्ञान हो गया था जिससे उसे चेतावनी मिल जाती थी कि यदि अब उससे कोई आग्रह या अनुरोध किया गया, तो सब परिश्रम व्यर्थ ही होगा। इस दृष्टि में विवेकशीलता होती थी, किन्तु अस्पष्ट तथा कभी-कभी विकृति और घृणा की रेखाएं अंकित होती थीं और प्रायः चेतना का उद्दाम प्रवाह होता था, जिसे देख हेस्टर यह प्रश्न किए बिना न रहती थी कि क्या सचमुच पर्ल मानव-जगत् की ही है? वह आकाश में विहार करने वाली अप्सरा-सी लगती



थी, जो झोंपड़ी के दरवाजे पर कल्पनापूर्ण खेल खेलकर एक पसरिहासपूर्ण मुसकान फेंकती हुई भाग जाती थी। जिस निधि को हेस्टर ने अपना सब कुछ गंवाकर पाया था और जो उसका समस्त संसार थी, उसके तथा अपने मध्य इस आश्चर्य और उलझन में डालनेवाले तिलस्म ने उसका हृदय विदीर्ण कर दिया था। जब बच्ची सुखद निद्रा में विश्राम कर रही होती, तो उसे वास्तविक सुख का अनुभव होता था। तब वह घण्टों एक विशेष सुख आह्लाद का रसास्वादन करती रहती और फिर उसे ऐसा लगता कि पर्ल की खुली पलकों में विकृत भाव की व्यंजना हो रही है और उसकी तंद्रा टूट जाती।

कितनी जल्दी और निस्सन्देह किस तीव्र गति से पर्ल बड़ी हो गई और उसमें समाज से सम्पर्क पैदा करने की योग्यता आ गई ! यदि हेस्टर अपनी बच्ची की स्पष्ट चहचहाहट को दूसरे बच्चों की तुमुल ध्वनि में सुन पाती और इस प्रकार खेल में मग्न बच्चों की किलकारियों में अपनी प्रिय बच्ची की मधुर ध्वनि को पहचानती, तो उसे कितनी प्रसन्नता होती ! किन्तु यह तो असम्भव था। अभागी पर्ल जन्म से ही बहिष्कृत थी। उसे मूर्तिमन्त कलंक और पाप का चिह्न समझा जाता था। तथा उसे अन्य बच्चों के साथ खेलने का कुछ भी अधिकार नहीं था। यह कितने महत्त्व की बात है कि एक अद्भुत प्रवृत्तिजन्य योग्यता के आधार पर उस बच्ची ने अपनी एकाकी स्थिति को समझ लिया था। उसने इस अटूट वर्तुलाकार रेखा को पहचान लिया जो उसके चहुं ओर खींच दी गई थी।

घर पर तथा मां की झोंपड़ी के आसपास कहीं भी पर्ल किसी से सम्पर्क स्थापित करना नहीं चाहती थी। उसकी सृजनकारी आत्मा से जीवन की ज्योति बिखर रही थी, और हज़ारों वस्तुओं से उसका आन्तरिक परिचय हो रहा था। ठीक उसी प्रकार जैसे एक मशाल चहुं ओर प्रकाश फैला देती है। पर्ल के खेल के साथी थे कुछ चीथड़े, एक-आध फूल, एक छड़ी। इन्हीं वस्तुओं के संयोग से वह अपने नन्हे-से हृदय की प्रत्येक भावना को तृप्त किया करती थी। उसकी एकाकी आवाज़ मां की कुटिया में तुमुल ध्वनि के समान गूंजा करती थी। कल्पना के योग से और एक उदीयमान शिशु के विशेष गुणों की दृष्टि से पर्ल में सम्भवतया अपनी ही उम्र के अन्य

प्रतिभाशाली बच्चों से अधिक गुण दिखाई देते थे। कारण यह था कि साथ खेलनेवाले साथियों के अभाव के कारण पर्ल कल्पना का ही अधिक आश्रय लेती थी। अन्तर केवल इतना था कि वह अपने हृदय तथा मन की इस सृष्टि को एक अकथनीय विरोध की भावना से देखती थी। उसने अपनी कल्पना की सृष्टि में कभी मित्र का सृजन नहीं किया था। किन्तु ऐसा प्रतीत होता था मानो वह किसी शैतान के तेज़ दांतों की कल्पना कर रही हो, जिसमें से असंख्य सशस्त्र सैनिक निकलकर आ रहे हों और वह उनसे लोहा लेने को तत्पर हो।

कभी-कभी पर्ल पर दृष्टि गड़ाए हेस्टर की ऐसी स्थिति हो जाती कि वह सिलाई का काम घुटनों पर टेक आहत हृदय की तीक्ष्ण व्यथा से चीख पड़ती। वह अपनी वेदना को छिपा न सकती थी। उसकी दर्द भरी आवाज़ सिसकियों में बदल जाती। हेस्टर प्राइन कहती, "ओ आकाशवासी परमपिता ! यदि तू अब भी मेरा पिता है, तो यह बता कि इस नन्ही बच्ची के रूप में मैंने किसे जन्म दिया है?" पर्ल इस करुणा-भरी प्रार्थना को सुनती अथवा किसी अज्ञात आंतरिक शक्ति से मां के व्यथित हृदय की धड़कनों को अनुभव कर लेती और अपना हंसता हुआ नन्हा फूल-सा मुखड़ा मां की ओर फेंककर एक बालसुलभ शरारत से मुसकराती और दुबारा खेल में लग जाती।

जब कभी हेस्टर अपनी बच्ची की आंखों में अपना प्रतिबिम्ब देख रही होती—जैसा कि माताओं को इसका शौक होता है, क्योंकि एकाकी और व्यथित माताओं का इसी में इसीमें कुछ सुखद भुलावा मिलता है—तो अकस्मात् उसे ऐसा लगता कि पर्ल की आंखों की काली-काली पुतलियों में अपने प्रतिबिम्ब के स्थान पर कोई और ही शैतान से मिलता-जुलता, घृणा-भरी मुसकान से पूर्ण किन्तु परिचित-सा चेहरा, जिसमें उसने पहले कभी मुसकराहट और घृणा का मिश्रण नहीं देखा था, दिखाई दे रहा है। तब वह अनुभव करती थी कि जैसे इस नन्ही-सी बच्ची पर किसी दूषित आत्मा का प्रभाव है, जो ठीक उसी समय घृणापूर्ण उपहास करने के लिए झांक रही हो। बाद में भी उस छाया-सी स्मृति-मात्र से हेस्टर को अत्यधिक मानसिकता वेदना होती रहती थी।



ग्रीष्म ऋतु में एक दिन, जब पर्ल खेलने-कूदने के योग्य हो गई थी, उसने मुट्ठी-भर जंगली फूल इकट्ठे किए और उन्हें अपनी मां की छाती पर मार-मारकर अपना मन बहलाना आरम्भ किया। जब-जब भी वह उस 'रक्तिम अक्षर' पर फूल प्रहार करती, तो प्रसन्नता से उछल पड़ती। इस पर हेस्टर ने पहले तो अपने दोनों हाथों से उस लांछन को ढकना चाहा, किन्तु न जाने स्वाभिमान के कारण वह विरक्त-सी होकर अथवा यह सोचकर कि इस अकथनीय वेदना से ही उसके पाप का प्रायश्चित्त होगा, उसने अपनी इच्छा को रोका और सीधी बैठी रही। उस समय उसका रंग मृतक के समान पीला पड़ गया था। वह अत्यन्त दुःखी मन से पर्ल की नन्ही-नन्ही आंखों में देखती रही। फूलों के प्रहार फिर भी होते रहे और उस 'रक्तिम अक्षर' पर निशाने पड़ते रहे जिनसे उसे इस प्रकार की असह्य वेदना की अनुभूति हुई, जिसका उपचार संसार में कहीं पर भी नहीं हो सकता था। अन्त में उस लड़की के सारे फूल समाप्त हो गए और बच्ची निश्चिन्त भाव से खड़ी अपनी मां हेस्टर को बड़े ध्यान से देखती रही। उसकी काली आंखों की अतल गहराई में अट्टहास करते हुए शैतान की आकृति दिखाई दे रही थी अथवा मां इस प्रकार की कल्पना कर रही थी।

मां चिल्लाई, "बच्ची, तुम क्या हो?"

बच्ची ने कहा, "मां मैं तुम्हारी नन्ही पर्ल हूं।" किन्तु यह कहते समय पर्ल मुसकराई और एक नन्ही अप्सरा के समान परिहासपूर्ण भाव से उछलने-कूदने लगी। ऐसा प्रतीत होता था कि अभी वह उड़ने भी लगेगी। हेस्टर ने पूछा, "क्या सचमुच ही तुम मेरी बच्ची हो?" उसने यह प्रश्न यूं ही नहीं पूछा था, वरन् उसमें एक सात्त्विक भाव था। क्योंकि पर्ल की प्रतिभा ऐसी अद्‌भुत थी कि उसकी मां को भी कभी-कभी यह सन्देह होने लगता था कि संभवतः इस नन्ही बच्ची को अपने जन्म की गोपनीय बात का पता है और कहीं वह उस भेद को खोल न दे।

बच्ची ने उसी मुद्रा में उत्तर दिया, "हां मां, मैं तुम्हारी ही नन्ही बच्ची पर्ल हूं।"

"तुम मेरी बच्ची नहीं हो—तुम मेरी पर्ल नहीं हो।" मां ने परिहास

करते हुए कहा; क्योंकि प्रायः गंभीर से गंभीर स्थिति के बीच भी उसमें परिहासपूर्ण कौतुक-भावना का आवेग पैदा हो जाता था।

"तब मुझे यह तो बताओ कि तुम कौन हो और तुम्हें किसने भेजा है?"

बच्ची गम्भीरता से हेस्टर के पास आई और उसके घुटनों के निकट बैठकर बड़े प्रेम से बोली, "मां, तुम्हीं बताओ।"

"तुम्हें भगवान ने यहां भेजा है मेरी बच्ची।" हेस्टर ने उत्तर दिया।

उसने हिचकिचाहट के साथ यह कहा जो उस तीक्ष्ण बुद्धि बच्ची से छिपा न रहा या अपनी स्वाभाविक शरारत से अथवा किसी दुरात्मा से प्रभावित हो उसने अपने नन्ही-सी अंगुली से पुनः उस 'रक्तिम अक्षर' को छू दिया।

फिर उसने चिल्लाकर कहा, "उस भगवान ने मुझे नहीं भेजा। आकाश में रहने वाले भगवान मेरे पिता नहीं हैं।"

"चुप ! पर्ल, तुम ऐसी बातें न किया करो।" मां ने उत्तर दिया।

मां ने अपने दर्द को दबा लिया था। उसने पर्ल को कहना जारी रखा, "हम सब लोगों को ही उसने यहां भेजा है। मुझे भी उसी ने भेजा है। यदि उसने न भेजा होता तो—ए—नन्ही-सी मूर्ख बच्ची, तू यहां कैसे आ जाती?"

अब गंभीरता से नहीं, बल्कि, हंसते-हंसते और फर्श पर नाचते हुए पर्ल ने पुनः कहा, "बताओ मां, तुम मुझे यह अवश्य ही बताओ।"

हेस्टर स्वतः संदेह के गहन गोरखधन्धे में फंसी थी, इस कारण वह इस समस्या का समाधान न कर सकी—उसे स्मरण था कि पर्ल के कुछ विचित्र भाव को देखकर ग्रामवासियों में यह बात चला करती थी कि वह अवश्य शैतान की बेटी है, और प्राचीन कैथोलिक युग से लेकर आज तक कभी भी ऐसी शैतानी सन्तान का जन्म कुछ पापपूर्ण कार्य करने के लिए संसार में हुआ करता है। लूथर के शत्रु तुच्छ पादरी उसे भी शैतान की सन्तान ही कहा करते थे, अतः न्यू इंगलैण्ड के प्यूरिटनों में पर्ल ही केवल एक ऐसी दुर्भागिनी बच्ची नहीं थी, जिसके जन्म के सम्बन्ध में ऐसी घृणित धारणाएं फैलाई गई थीं।



# सात

एक दिन हेस्टर प्राइन एक जोड़ी दस्ताने लिए गवर्नर वेलिंगम के महल में पहुंची, जिनपर उनके आदेशानुसार उसने झालर लगाई थी और कढ़ाई की थी। ये दस्ताने गवर्नर को एक महान राजकीय उत्सव के अवसर पर पहनने थे। यद्यपि चुनाव में लोकमत ने उसे शासक के उच्च पद से कुछ नीचे उतार दिया था, किन्तु अब भी बस्ती के दण्डाधीशों में उसका बड़ा सम्मानित और प्रभावपूर्ण स्थान था।

कढ़ाई किए हुए इन दस्तानों को देने के अलावा एक और महत्त्वपूर्ण कारण भी था, जिससे बाध्य होकर वह उस महान व्यक्ति से मिलने गई थी जिसका बस्ती के कार्यों में इतना अधिक योग और अधिकार था। उसके कानों तक यह बात पहुंची थी कि बस्ती के कुछ प्रमुख लोग जो धर्म और शासन के कठोर सिद्धान्तों को माननेवाले हैं, उसे उसकी बच्ची से वंचित करने का विचार कर रहे हैं। वे श्रेष्ठ जन यह तर्क उपस्थित कर रहे हैं कि चूंकि पर्ल का सृजन शैतान की कृति से हुआ था, अतः मां की आत्मा में निहित ईसाई मत के आंशिक तत्त्वों के मार्ग से इस बड़ी बाधा को दूर कर देना आवश्यक था। दूसरी ओर यदि बच्ची में नैतिक और धार्मिक विकास की योग्यता थी और यदि मुक्ति पाने के लिए आवश्यक तत्त्व उसकी प्रकृति में विद्यमान थे, तो भी उसे हेस्टर प्राइन की अपेक्षा किसी अधिक विवेकशील और अच्छे अभिरक्षक के पास भेजना आवश्यक था। इस विचार का समर्थन करने में गवर्नर वेलिंगम ने सबसे प्रमुख भाग लिया था।

हेस्टर बहुत चिन्तित थी—किन्तु हेस्टर को अपने अधिकार का ज्ञान था। वह अपनी एकान्त कुटिया से निकल पड़ी। उसकी साथिन थी नन्ही पर्ल। मां ने बच्ची के वस्त्रों के निर्माण में अपनी विपुल कल्पना को संजोया था और उसे एक विशेष कटाईवाले लाल रंग के वेल्वेट के ट्यूनिक से सजाया था, जिस पर उसने अपनी कल्पना और तिल्ले के मधुर संयोग से कढ़ाई कर रखी थी। वस्त्र के रंग इतने उजले थे कि यदि उसके सौन्दर्य की आभा क्षीण होती, तो वह इनकी चमक से फीकी और पीली दिखाई

देती। ये रंग पर्ल के सौन्दर्य के सर्वथा अनुकूल थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो पृथ्वी पर इन्द्रधनुष ही उतर आया हो। किन्तु इन वस्त्रों और इन्हें पहने हुए बच्ची में एक विशेषता यह थी कि उसे देखनेवाले को कलंकधारिणी हेस्टर प्राइन की छाती पर सदा के लिए अंकित चिह्न का अनायास स्मरण हो जाता था।

जब वे दोनों नगर के समीप पहुंचीं तो अपने खेल में मग्न प्यूरिटनों के बच्चों ने—जिसे वे गम्भीर प्रकृति के बालक खेल ही कहा करते थे—उनकी ओर दृष्टि घुमाई और एक-दूसरे से गम्भीर मुद्रा में कहा :

"देखो, यह 'रक्तिम अक्षर' वाली स्त्री आ रही है और 'रक्तिम अक्षर' जैसी ही वह बालिका उसके साथ-साथ चल रही है, इसलिए आओ उन पर कीचड़ फेंकें।" परन्तु पर्ल ने, जो एक निर्भीक बच्ची थी, क्रोध से पांव पटकते हुए, उन्हें डराने के लिए हाथ हिलाते हुए शत्रुओं की टोली पर धावा बोल दिया और उन्हें भगा दिया। उनका इस प्रकार पीछा करती हुई वह बच्चों के संक्रामक रोग—रक्तिम बुखार अथवा निर्णायक फरिश्ते के समान अथवा आनेवाली पीढ़ियों के पाप का दंड देने के उद्देश्य से अवतरित हुई देवी प्रतीत होती थी। वह अत्यन्त भयावह तीखी आवाज़ से चिल्लाती थी—जिससे भागनेवालों के हृदयों में कंपकंपी-सी पैदा हो जाती थी। विजय पाने के पश्चात् पर्ल मां के पास लौट आई और उसकी ओर देखते हुए मुसकराने लगी।

गवर्नर वेलिंगम के निवास तक पहुंचने में और कोई दुर्घटना नहीं हुई।

पर्ल इस भवन की तड़क-भड़क देखकर नाचने लगी और उसकी यह इच्छा होने लगी कि सारी धूप उसके सामने एकत्र कर दी जाए और वह उससे खेले।

"नहीं मेरी प्यारी पर्ल," मां ने उससे कहा, "तुम्हें स्वयं अपने में प्रकाश पैदा करना है, वह मैं तुम्हें नहीं दे सकती।"

वे द्वार पर पहुंचीं जो महराब की तरह भवन के छोटे-से बुर्ज के दोनों ओर बढ़ा हुआ था। दोनों ओर खिड़कियां थीं, जिनपर लकड़ी के दरवाजे थे, जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर बन्द किया जा सकता था। बरामदे में पड़े



लोहे के हथौड़े को उठाकर हेस्टर ने एक संकेत किया, जिसका उत्तर गवर्नर के एक नौकर ने दिया, जो जन्म से स्वतन्त्र अंग्रेज था, किन्तु अब सात वर्ष के लिए दास था। उसने हरा कोट पहन रखा था, जो उस युग के दासों की पोशाक थी और इंगलैण्ड के प्राचीन दरबारों की प्रथा के रूप में आज भी विद्यमान थी।

"क्या पूजनीय गवर्नर वेलिंगम अन्दर हैं?" हेस्टर ने पूछा।

"हां, अवश्य।" इस देश में नवागन्तुक होने के कारण दास के लिए 'रक्तिम अक्षर' एक नई विचित्र-सी बात थी। अतः उसने आश्चर्य से फटी हुई आंखों से उसकी ओर देखते हुए कहा, "हां, माननीय महोदय भीतर हैं, किन्तु उनके पास इस समय दो पादरी और एक चिकित्सक बैठे हैं। अतः आप इस समय उनसे नहीं मिल सकतीं।"

"कुछ भी हो, मैं उनसे मिलूंगी।" हेस्टर ने उत्तर दिया। उसके निश्चय के भाव को देखकर और उसकी छाती के चमकदार चिह्न को देख उसे देश की कोई संभ्रान्त महिला समझ उसने मार्ग छोड़ दिया।

इस प्रकार मां और नन्ही पर्ल बड़े कमरे में प्रविष्ट हुईं। गवर्नर वेलिंगम ने इस नए भवन का भिन्न प्रकार की सामग्री तथा यहां की जलवायु और सामाजिक जीवन की परम्पराओं के अनुसार कुछ परिवर्तनसहित, अपनी जन्मभूमि के धनाढ्य लोगों के महलों के नमूने पर बनाया था।

हाल में लगे हुए सागवान के फट्टों के बीच में एक कवच टंगा हुआ था, जो कि लंदन के प्रवीण कवच-निर्माता ने उस वर्ष बनाया था, जब गवर्नर वेलिंगम न्यू इंगलैंड आए थे।

नन्ही पर्ल उस कवच के आगे लगे हुए चमकदार शीशे को बहुत ध्यान से देखती रही। उसने एकदम चिल्लाकर कहा, "मां देखो ! देखो !! मैं तुम्हें यहां देख रही हूं।"

हेस्टर ने उस बच्ची को प्रसन्न करने के लिए उधर देखा और उधर देखते ही उसे ज्ञात हुआ कि इस बीच में उभरे हुए शीशे के विशेष प्रभाव से वह 'रक्तिम अक्षर' अत्यधिक विशाल रूप में दिखाई दे रहा है और ऐसा

लग रहा है मानो उसके स्वरूप में सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु यही हो। सिर पर पहननेवाले टोप में दिखाई देनेवाले उसी प्रकार के चित्र की ओर पर्ल ने मुसकराते हुए और अपने स्वाभाविक शरारत-भरे ढंग से ऊपर को संकेत किया। इस शरारत से भरी प्रसन्नता का प्रतिबिम्ब एकदम शीशे में झलका और उसका यह प्रभाव हुआ कि हेस्टर प्राइन महसूस करने लगी कि यह उसकी बच्ची का प्रतिबिम्ब नहीं हो सकता, अपितु अन्य किसी शैतान के से बच्चे का चित्र है, जो कि पर्ल का रूप धारण करने का प्रयत्न कर रहा है।

उसे परे खींचते हुए वह बोली, "पर्ल, इधर आओ और इस सुन्दर उद्यान की ओर देखो। सम्भव है कि यहां हमें जंगली फूलों की अपेक्षा अधिक सुन्दर फूल देखने को मिलें।"

मां के कहने पर पर्ल हाल के दूसरे कमरे में चली गई और खिड़की में से उद्यान में बने हुए छोटे-छोटे भागों को देखने लगी, जिन पर सुन्दर कटी हुई घास उगी हुई थी और जिनके दोनों ओर गुलाब की झाड़ियां थीं।

गुलाब की झाड़ियों को देखकर पर्ल एक रक्तिम पुष्प लेने के लिए चिल्लाने लगी और चुप न हुई।

मां ने गम्भीरता से कहा, "बच्ची, चुप हो जाओ, प्यारी बच्ची, मत चिल्लाओ ! बाग में से कुछ आवाजें आ रही हैं। गवर्नर अपने सम्माननीय साथियों के साथ चले आ रहे हैं।"

वास्तव में उद्यान के मार्ग से होते हुए कई आदमी उस भवन की ओर आ रहे थे। अपनी मां के चुप कराने के प्रयत्नों की अवहेलना करते हुए पर्ल ने एक ज़ोर की चीख मारी और उसके पश्चात् चुप हो गई। वह इस कारण चुप नहीं हुई थी कि मां की आज्ञा का पालन करे, किन्तु इन नये व्यक्तियों के प्रकट होने से उसकी बालसुलभ तथा चपल उत्सुकता जागृत हो गई थी।



## आठ

गवर्नर वेलिंगम एक ढीला-ढाला गाउन और टोपी पहने हुए थे, जैसी कि प्रायः वृद्ध लोग आराम के समय घर में पहना करते हैं। अपने अतिथियों के साथ अपना भवन और बाग दिखाने के लिए वे सबसे आगे-आगे चल रहे थे और उसमें किए जानेवाले सुधारों के प्रति अपना सन्तोष प्रकट कर रहे थे। उनकी सफेद भव्य दाढ़ी थी। वे सम्राट जेम्स के युग के पुराने फैशन का एक बड़ा कालर लगाए हुए थे, जिससे उनका सिर बैप्टिस्ट जॉन सरीखा नहीं लगता था। उनकी अधेड़ अवस्था की तुलना में कहीं अधिक गम्भीरता और संयम उनके व्यक्तित्व में लक्षित होता था और एकत्र की गई विलास की वस्तुओं से उस व्यक्तित्व का कोई सामंजस्य दिखाई नहीं देता था। यद्यपि हमारे पूर्वज कठिनाइयों और संघर्ष को ही जीवन कहा करते थे और इच्छा अथवा अनिच्छा से अपनी धन-सम्पत्ति और जीवन तक को कर्त्तव्य की बलिवेदी पर चढ़ाने के लिए तैयार रहते थे, किन्तु यह समझना गलती होगी कि वे उपलब्ध सुख और विलास की उपेक्षा करते थे। जान विलसन भी, जिनकी हिम-सी शुभ्र दाढ़ी गवर्नर वेलिंगम के कन्धों पर उड़ती दिखाई दे रही थी, इस मत के प्रचारक नहीं थे। वे तो सुख और समृद्धि के ही समर्थक थे। उन्होंने सुझाव दिया कि नाशपाती और आड़ू भी न्यू इगंलैण्ड की जलवायु में उगाए जा सकते हैं और बाग की दीवार के समीप धूपवाले भाग में अंगूरों की बेल लगाई जा सकती है। इंगलैण्ड के वैभवशाली चर्च द्वारा पोषित इस वृद्ध पादरी के हृदय में भी समस्त सुखप्रद तथा विलास की वस्तुओं के लिए परम्परागत और स्वाभाविक रुचि थी। चाहे गिरजे के मंच पर खड़े हुए वह कितना ही कठोर हो जाए या ऐसे पाप की कठोर आलोचना करे जो हेस्टर ने किया था, किंतु वह व्यक्तिगत जीवन में नितान्त सहानुभूतिशील तथा नम्र था। अपने इसी स्वभाव के कारण वह अन्य पादरियों से अधिक लोकप्रिय हो गया था।

गवर्नर वेलिंगम तथा विलसन के पीछे अन्य दो अतिथियों में से एक का नाम माननीय डिम्सडेल था। उन्होंने हेस्टर प्राइन के अपमान के उस

अवसर पर बहुत ही थोड़ा और अन्यमनस्क भाव से भाग लिया था, और उन्हीं के साथ दूसरे अतिथि थे श्रीमान रोजर चिलिंगवर्थ, जो कि चिकित्साशास्त्र में प्रवीण थे। वे पिछले दो-तीन वर्षों से इसी नगर में रह रहे थे। यह समझा जाता था कि यह विद्वान चिकित्सक होने के अतिरिक्त युवक पादरी का मित्र भी है, जिसका स्वास्थ्य अत्यन्त श्रम के कारण गिर चुका था।

इन लोगों के आगे-आगे गवर्नर सीढ़ी पर एक-दो कदम चढ़ा और बड़े हाल का दरवाज़ा खोल नन्ही पर्ल के अत्यन्त समीप पहुंच गया। दरवाजे के पर्दों की छाया हेस्टर प्राइन पर पड़ रही थी जिससे वह दिखलाई नहीं दे रही थी।

"अरे तुम कौन हो?" उस नन्ही अरुण कपोलोंवाली बच्ची को आश्चर्य से देखते हुए गवर्नर वेलिंगम बोले।

"सच कहता हूं, सम्राट जेम्स के युग के पश्चात् पहली बार ऐसा दृश्य देखने को मिला है। उन दिनों छुट्टी के दिन सम्राट के दरबार में ऐसे बहुत-से बच्चे इकट्ठे हुआ करते थे, जिन्हें हम नटखट राजा कहा करते थे, किंतु मेरे हाल में यह आश्चर्य कैसे?"

"ओह, क्या यह सच है !" वृद्ध विलसन ने कहा, "यह पंखों वाला नन्हा-सा पक्षी कौन है? जब सूर्य की किरणें रंग-बिरंगी चित्रकारी वाली खिड़की में से गुज़रती हुई फर्श पर कुछ सुनहले और अरुणिम आकार बना देती हैं तो वे कुछ-कुछ इसके समान ही होते हैं, किंतु ये दृश्य पुराने इंगलैण्ड की ही बातें हैं।"

"प्रिय बच्ची, तुम कौन हो, तुम्हारी मां को क्या कष्ट है, जिस कारण उसने तुम्हें इस विचित्र ढंग से सजाया है? क्या तुम ईसाई हो? कुछ धर्म की बातें भी जानती हो, अथवा तुम उन शरारती अप्सराओं में से हो जिनकी स्मृति प्राचीन रूढ़ियों से सम्बद्ध है।"

उस बच्ची ने उत्तर दिया, "मैं अपनी मां की बेटी हूं, और मेरा नाम पर्ल है।"

उस वृद्ध पादरी ने छोटी पर्ल के गाल पर हलकी-सी चपत लगाते हुए



कहा, "पर्ल—'मोती', पन्ना अथवा मूंगा या लाल गुलाब कुछ भी हो, परन्तु तुम्हारी मां कहां है? ओह वह···,"—मुड़कर गवर्नर वेलिंगम के कान में धीमी आवाज़ में फुसफुसाया, "यह वही बच्ची है जिसके बारे में हमने आपस में बातचीत की थी और देखो यह उसकी अभागी मां हेस्टर प्राइन है।"

गवर्नर ने ऊंची आवाज़ में कहा, "तुम ठीक ही कहते हो। हमें तो पहले ही अनुमान लगा लेना चाहिए था कि ऐसे बच्चे की मां बेबीलोन की 'रक्तिम अक्षर' धारिणी नारी के समान ही कोई स्त्री होनी चाहिए। खैर, तुम ठीक समय पर आई हो। हम अभी तुम्हारे ही विषय में विचार-विनिमय करेंगे।"

गवर्नर वेलिंगम अपने तीनों अतिथियों के साथ बड़े कमरे में पहुंचे और उन्होंने एकदम मुड़कर कहा, "हेस्टर प्राइन !" उनकी भंगिमा में क्रूरता टपक रही थी और उस लज्जित नारी के प्रति उपेक्षा भाव दर्शाते हुए वे बोले, "कुछ समय पूर्व तुम्हारे बारे में ही चर्चा हो रही थी। हमने इस बात पर बहुत विचार किया है कि हम अधिकारी-वर्ग के प्रभावशाली लोग इस बच्ची की अनश्वर आत्मा एक ऐसे व्यक्ति के हाथ में छोड़कर निश्चिन्त नहीं हो सकते, जो ठोकर खाकर वासना के गर्त में गिर चुकी है। तुम ही बताओ—तुम तो बच्ची की मां हो। क्या तुम यह नहीं सोचती कि इस नन्ही बच्ची के सांसारिक तथा स्थायी कल्याण के लिए इसे तुमसे अलग हो जाना चाहिए, इसे सादे वेश में रहना चाहिए और इसे स्वर्ग तथा संसार के सत्य की शिक्षा मिलनी चाहिए? आखिर तुम अपनी बच्ची के लिए क्या नहीं कर सकतीं?"

"मैंने जो कुछ इस चिह्न से सीखा है, वह नन्ही पर्ल को सिखा सकती हूं।" हेस्टर ने अपनी अंगुली 'रक्तिम अक्षर' पर लगाते हुए कहा।

"हे नारी ! यह तुम्हारे लांछन का चिह्न है।" दण्डाधीश ने कठोरता से कहा, "इस अक्षर के धब्बों से ही बचाने के लिए हम इसे तुमसे अलग करना चाहते हैं।"

"तो भी," मां का मुख पीला पड़ गया, किन्तु उसने शान्त भाव से कहा, "इस चिह्न ने मुझे शिक्षा दी है। प्रतिदिन मैं इससे कुछ सीखती हूं—इस

समय भी मैं इससे कुछ सीख रही हूं—अतः इसके सिखाए हुए पाठों से मेरी बच्ची अधिक अच्छी और योग्य बनेगी, अन्यथा इसका मुझे कोई लाभ नहीं होगा।"

"हम ठीक ही निर्णय करेंगे," वेलिंगम ने कहा, "और देखेंगे कि क्या करना चाहिए। मान्यवर विलसन, मैं तुमसे निवेदन करता हूं कि तुम इस बच्ची पर्ल की परीक्षा लो और देखो कि क्या इस अवस्था के बच्चों की तरह उसे ईसाई धर्म के संस्कार मिले हैं।

बूढ़ा पादरी एक कुर्सी पर बैठ गया और उसने बच्ची को अपने दोनों घुटनों के बीच लाने का प्रयत्न किया, किन्तु क्योंकि वह अपनी मां के अतिरिक्त किसी अन्य के प्रेम-भरे स्पर्श से सर्वथा अपरिचित थी, अतः वह बचकर निकल गई और खिड़की के पास ऊपर की सीढ़ी पर इस प्रकार खड़ी हो गई, जैसे घने पंखोंवाला एक जंगली पक्षी हो और आकाश में उड़ने की तैयारी कर रहा हो। विलसन को इससे किंचित् भी आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि उसे बच्चे बहुत प्यारे थे और बच्चे भी उससे हिलमिल जाया करते थे। उसने परीक्षा आरम्भ की।

"पर्ल !" उसने गम्भीरता से कहा, "तुम्हें शिक्षा की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए, ताकि उचित समय आने पर तुम अपने गले में अत्यधिक मूल्य का पर्ल (मोती) पहन सको। प्यारी बच्ची ! क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हें किसने बनाया है ?"

पर्ल ने तीन वर्ष की अल्पावस्था में ही इतना कुछ सीख लिया था कि न्यू इंग्लैण्ड के धर्म-शिक्षा के प्रथम खण्ड की परीक्षा सुगमता से दे सकती थी। यद्यपि उसे रचनाओं के बाह्य स्वरूप का भी ज्ञान था, किन्तु एक प्रकार की शरारत—जो प्रायः सभी बच्चों में होती है, जिसका पर्ल में भी अभाव नहीं था—इस अवसर पर किसी भाव के वशीभूत होकर उग्र हो उठी। उसने अपने होंठ भींचे और ऊटपटांग शब्दों में जवाब देना आरम्भ कर दिया और कई बार अशिष्टतापूर्ण ढंग से विलसन के प्रश्नों का उत्तर देने से इनकार भी कर दिया। और अन्त में बच्ची ने बताया कि उसका जन्म नहीं हुआ है, अपितु उसकी मां ने कारागार के द्वार के समीप लगी हुई गुलाब की



झाड़ी से उसको तोड़ लिया है।

पर्ल खिड़की के बाहर खड़ी थी, उसका ध्यान गवर्नर के बाग में लगे लाल गुलाब के फूलों की ओर था। उसने इस महल में आते समय रास्ते में जेल-द्वार पर गुलाब की झाड़ी पर लगा एक फूल देखा था। शायद उसी का उसके मन में स्मरण हो आया हो, जो इस उत्तर के रूप में प्रस्फुटित हुआ था।

बूढ़े रोजर चिलिंगवर्थ ने मुसकराते हुए नवयुवक पादरी के कान में कुछ कहा। हेस्टर प्राइन ने उस विद्वान व्यक्ति की ओर देखा। यद्यपि वह स्वयं एक विपत्ति में फंसी हुई थी, किन्तु वह उसकी आकृति में भारी परिवर्तन देखकर कि वह कितना भद्दा हो रहा था और उसकी मुखाकृति काली पड़ चुकी थी, आश्चर्यचकित रह गई। क्षण-भर के लिए उसकी आंखें विद्वान की आंखों से मिलीं, किन्तु तुरन्त वह अपनी वर्तमान स्थिति में वापस लौट आई।

गवर्नर उसके उत्तर से कुछ क्षण भौचक्का-सा रहा और फिर कुछ स्वस्थ होकर उसने कहा, "कितनी अजीब बात है कि तीन वर्ष की अवस्था होने पर भी यह बच्ची नहीं बता सकती कि इसको किसने जन्म दिया है ! इसमें कोई संदेह नहीं कि इसकी आत्मा कलुषित है, दुर्गुणों से परिपूर्ण है—भद्रजनो ! मैं समझता हूं कि अब और अधिक पूछने की आवश्यकता नहीं है।"

हेस्टर ने पर्ल को पकड़ लिया और जोर से अपने आलिंगन में कस लिया। उस समय बूढ़े प्यूरिटन दण्डाधीश के सामने खड़ी हेस्टर की आकृति से भय टपक रहा था। यद्यपि वह संसार में अकेली थी, किन्तु इस अमूल्य निधि के सहारे वह सम्पूर्ण संसार का मुकाबला करने में अपने को समर्थ समझती थी, उसका विचार था कि इस बच्ची पर उसका पूर्ण अधिकार है और वह मृत्यु-पर्यन्त उसकी रक्षा करेगी।

"ईश्वर ने मुझे बच्चा दिया है," उसने पुकार की, "मुझसे सब कुछ छीनकर उसके बदले में इसे दिया है। यह बच्ची मेरी प्रसन्नता है, मेरी विपत्ति भी है, इसी के कारण मैं जीवित हूं, यह मुझे दण्ड भी देती है, क्या

आप देखते नहीं कि यह बच्ची मूर्तिमन्त 'रक्तिम अक्षर' ही है। जहां यह प्यार के योग्य है, वहां इसमें मेरे पाप का दण्ड देने की अगाध शक्ति भी है। नहीं ! नहीं !! आप इसे मुझसे नहीं छीन सकते। इसके छिन जाने से पहले ही मैं मृत्यु का आलिंगन कर लूंगी।''

''अभागी नारी !'' बूढ़े दयालु पादरी ने कहा, ''बच्ची की देखभाल बहुत अच्छी तरह की जाएगी–जितनी अच्छी कि तुम भी नहीं कर सकतीं।''

''ईश्वर ने इसे मेरी देखभाल में छोड़ दिया था, मैं इसे नहीं दूंगी।'' हेस्टर ने प्रायः चीखती हुई आवाज में कहा, और इस समय अकस्मात् उसकी दृष्टि नवयुवक पादरी डिम्सडेल की ओर गई, जिसकी ओर अब तक देखना उसने आवश्यक नहीं समझा था। ''तुम्हीं मेरे लिए कुछ कहो,'' वह बोली, ''तुम तो मेरे धर्मोपदेशक थे, और मेरी आत्मा का भार तुम्हीं पर था। तुम इन लोगों की अपेक्षा मुझे अधिक जानते हो ; मैं बच्ची को नहीं दूंगी, मेरी सहायता करो। तुम जानते हो, क्योंकि तुममें सहानुभूति का वह भाव है जो इन लोगों में नहीं है। तुम्हें ज्ञात है कि मेरा हृदय कैसा है तथा मां का अधिकार क्या होता है अपनी एकमात्र सन्तान के लिए। उसकी भावनाएं कितनी प्रबल होती हैं अपनी बच्ची के लिए। इसमें तुम मेरी सहायता करो। मैं इसके बिना नहीं रह सकती।''

इस कातर प्रार्थना से ऐसा प्रतीत होता था कि हेस्टर प्राइन पागल हो गई है। नवयुवक पादरी इन दयनीय वचनों से प्रभावित हुआ और वह अपना पीला मुख लिए और हृदय पर हाथ रखे आगे बढ़ा। उसका स्वभाव ही था, जब भी वह किसी आवेशपूर्ण स्थिति में होता था, तो हृदय पर हाथ रख लिया करता था। हेस्टर को जब सार्वजनिक रूप में अपमानित किया गया था, उस दिन डिम्सडेल की जैसी स्थिति का वर्णन किया गया था, आज वह उसकी अपेक्षा कहीं अधिक चिन्ताग्रस्त तथा दुःखी था। शायद उसका स्वास्थ्य गिर गया या किसी अन्य कारण से उसकी बड़ी-बड़ी काली आंखों से वेदना और उदासी टपक रही थी।

''वह जो कुछ कहती है उसमें सचाई है।'' पादरी ने मधुर, कम्पित तथा सशक्त वाणी में कहना शुरू किया।



''हेस्टर का कहना सत्य है और उसकी यह प्रेरक भावना भी। ईश्वर ने उसे बच्ची दी है और बच्ची की प्रकृति और आवश्यकता का वह ज्ञान भी उसे प्रदान किया है, जो पृथ्वी के अन्य किसी भी प्राणी को प्राप्त नहीं। क्या बच्ची और मां के पवित्र सम्बन्ध में किसी प्रकार की आपत्ति की जा सकती है ?''

''ओह ! यह कैसे, मान्यवर डिम्सडेल !'' गवर्नर ने बीच ही में कहा, ''मेरा निवेदन है कि आप इस बात को कुछ अधिक स्पष्ट कीजिए।''

''ऐसा ही है,'' पादरी ने बात जारी रखी, ''क्योंकि यदि हम अन्यथा सोचते हैं तो क्या हमारा अभिप्राय यह नहीं होगा कि उस परम पिता ने जो विश्व का स्रष्टा है, इसके पाप को नहीं पहचाना और पवित्र प्रेम तथा वासना में कोई अन्तर नहीं समझा ? अपने पिता के अपराध और मां के लांछन के रूप में यह बच्ची भगवान ने स्वयं उसे दी है, उसे ही इसे रखने का अधिकार भी दिया है जो इस प्रकार अनुनय-विनय कर रही है तथा जिसकी आत्मा अत्यन्त दुःखी है। उसके समस्त जीवन में केवल यही तो एक वरदान है, जैसा इसकी मां ने स्वयं हमें बताया है कि यह वरदान उसे इसी हेतु मिला था कि वह निरन्तर पश्चात्ताप करती रहे। अज्ञात क्षणों में भी उसे इस वेदना का अनुभव हो, जीवन के क्षुब्ध हर्ष में भी उसके अन्तस् में एक टीस, एक कसक और निरंतर सालनेवाली व्यथा जागरित रहे। इस चिह्न की ओर हमारा ध्यान दिलाकर जो उसके अन्तस् को विदीर्ण कर रहा है, क्या उसने इस बच्ची के बहाने अपने इसी भाव की अभिव्यक्ति नहीं की ?''

''आपने खूब कहा !'' विलसन ने आवेश में आकर कहा, ''मैं तो समझा था कि वह अपनी बच्ची को एक ढोंगी हकीम-मात्र बनाना चाहती है !''

''ओह ! नहीं, ऐसा नहीं।'' डिम्सडेल ने बात को जारी रखते हुए कहा, ''मेरा विश्वास है, वह अवश्य इस चमत्कार को पहचानती है जो ईश्वर ने इस बच्ची के रूप में दिखाया है। और मैं समझता हूं कि सच तो यह है कि वह यह अनुभव करती है कि इन सब बातों के अतिरिक्त भगवान

के इस वरदान का लक्ष्य यही था कि वह इसके सहारे जीती रहे और शैतान उसे पाप की जिन अंधकारपूर्ण गहराइयों की ओर प्रेरित करे, उनसे यह बची रहे। अतः इस बेचारी के लिए यह अच्छा है कि निरन्तर सुख अथवा दुःख को प्रदान करनेवाला एक शिशु उसकी देखरेख में रहे, जिसे वह पुण्य का पथ प्रदर्शित करे, और वह उसे प्रत्येक गिरावट पर चेतावनी दे। ऐसा लगता है कि विधाता का यही विधान है कि यदि वह बच्ची को स्वर्ग के रास्ते पर ले जाए, तो यह बच्ची भी अपने माता-पिता की मोक्ष-प्राप्ति में सहायक हो। यह पापिनी मां पापी पिता से अधिक प्रसन्न है। अतः हेस्टर प्राइन की खातिर उससे भी अधिक इस बच्ची के लिए हमें विधाता के विधान को इसी प्रकार बने रहने देना चाहिए।''

''मेरे मित्र, तुम्हारे कथन में कैसे विचित्र सत्य की अभिव्यक्ति है।'' वृद्ध रोजर चिलिंगवर्थ ने मुसकराते हुए कहा।

आदरणीय विलसन बोले, ''मेरे युवक बन्धु ने जो कुछ कहा है वह युक्तियुक्त है। मान्यवर वेलिंगम, आपका क्या मत है ? क्या इन्होंने इस बेचारी के पक्ष का ठीक-ठीक समर्थन नहीं किया।''

''निश्चय ही इन्होंने ठीक कहा है,'' दण्डाधीश ने उत्तर दिया, ''उन्होंने ऐसे तर्क दिए हैं कि हमें तब तक बच्ची को इसके पास रहने देना चाहिए, जब तक यह स्त्री और कोई पापपूर्ण कृत्य नहीं करती। धर्मोपदेश के संबंध में भी तुम्हें और मास्टर डिम्सडेल को पूरा-पूरा ध्यान रखना होगा। इसके अतिरिक्त इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि उचित अवस्था प्राप्त करने पर बच्ची को स्कूल भेजा जाए और वह धार्मिक गोष्ठियों में भाग ले।''

अपना भाषण समाप्त करने के पश्चात् युवक पादरी उन लोगों से कुछ पग पीछे हटकर खिड़कियों पर टंगे हुए परदों के पीछे अपना मुख छिपाकर खड़ा हो गया, किन्तु उसकी आकृति के बिम्ब से, जो कि सूर्य की किरणों से फर्श पर पड़ रहा था, कम्पन दृष्टिगोचर हो रहा था। नन्हीं शरारती बच्ची पर्ल चुपके से उसके निकट पहुंच गई और अपने दोनों हाथों से उसका हाथ पकड़कर अपने रक्तिम कपोलों से लगा लिया और अत्यन्त करुण तथा



स्वतःस्फूर्त प्रेम से उसके निकट खड़ी रही। उसे देखकर उसकी मां ने, जो पास ही खड़ी थी, अपने हृदय से पूछा, 'क्या यह मेरी बच्ची पर्ल है ?' वह जानती थी कि बच्ची के हृदय में प्रेम है और उसका प्रदर्शन भावुकता से हुआ है। उसके मन में करुणा का ऐसा आवेग उठा जिससे कभी भी उसका जीवन व्याप्त नहीं हुआ था। पादरी की आत्मा से स्वाभाविक स्नेह का सृजन हुआ और उसके हृदय में बच्ची के लिए अगाध प्रेम उमड़ आया। उसने चहुं ओर देखा और अपना कांपता हुआ हाथ बच्ची के सिर पर रख दिया तथा कुछ समय के बाद बच्ची के माथे को चूम लिया। छोटी पर्ल की भावुकता अधिक समय तक न रही, वह मुसकराई और फिर हाथों में उछलने-कूदने लगी। उसकी उछल-कूद इतनी सजीव थी कि वृद्ध विलसन भी चकित रह गए और उन्होंने कहा, ''क्या इस छोटी बच्ची के पंख जमीन पर नहीं लगते?'' श्री डिम्सडेल को सम्बोधित करते हुए वे बोले, ''मैं समझता हूं, इस नन्ही में जादू है और इसे मार्ग-दर्शन के लिए किसी वृद्ध स्त्री की प्रतारणा की आवश्यकता नहीं है।''

''बड़ी ही विचित्र बच्ची है !'' रोजर विलिंगवर्थ ने कहा, ''मां का स्वभाव तो इसमें स्पष्टतः दिखाई देता है। भद्रजनो ! क्या आप समझते हैं कि इस बच्ची के रूप और आकार का विश्लेषण करके इसके पिता के बारे में सकुशल अनुमान लगाना एक दार्शनिक की गवेषणा की सामर्थ्य से बाहर है ?''

श्रीमान विलसन ने कहा, ''नहीं, निंदित दर्शन से समस्या को समझाना पाप है। अच्छा तो यही होगा कि हम सब लोग प्रार्थना करें और उससे अच्छा यह होगा कि हम इस रहस्यपूर्ण बात को उस समय तक ऐसे ही छोड़ दें, जब तक सर्वशक्तिमान परमात्मा स्वतः अपनी इच्छा से इस भेद को न खोल दे। अब तो प्रत्येक भद्र ईसाई का यह कर्तव्य है कि वह इस असहाय तथा परित्यक्त बच्ची पर पितातुल्य सहानुभूति दर्शाए।''

इस समस्या के सन्तोषजनक रूप में हल हो जाने पर हेस्टर प्राइन पर्ल को साथ लेकर उस भवन से चली। ज्योंही वे दोनों सीढ़ियों से नीचे उतरीं, कहते हैं कि आंगनवाले कमरे की खिड़की का दरवाजा खुला और

सूर्य के प्रखर प्रकाश में गवर्नर वेलिंगम की कटु स्वभाववाली बहन मिस्ट्रेस हिबिन्स उनके सामने आ गई। यह वही हिबिन्स थी जिसे कुछ वर्ष पश्चात् जादूगरनी का आरोप लगाकर फांसी दे दी गई थी।

उसने कहा, "हेस ! हेस !" और उसके अपशकुनसूचक आकार से भवन की नवीनता पर एक विचित्र-सी छाया पड़ रही थी। "क्या तुम आज रात हमारे साथ चलोगी ! जंगल में हम बहुत-से लोग इकट्ठे होकर आनन्द मनाएंगे। मैंने ब्लैकमैन को वचन दे दिया है कि सुन्दरी हेस्टर प्राइन भी आएगी।"

हेस्टर ने विजयसूचक मुसकान अपने होंठों पर लाकर कहा, "कृपया उसको मेरी विवशता से अवगत करा दीजिएगा। मुझे तो अब घर पर ही रहना है और छोटी पर्ल की देख-रेख करनी है। यदि आज ये लोग मेरी बच्ची को मुझसे छीन लेते, तो मैं अवश्य जंगल में तुम्हारे साथ चली जाती और ब्लैकमैन की पुस्तक में अपने हस्ताक्षर अपने ही रक्त से करती।"

जादूगरनी ने भयंकर मुखाकृति बनाकर सिर को पीछे की ओर करते हुए कहा, "हम तुम्हें वहां ले ही चलेंगे।"

## नौ

रोजर चिलिंगवर्थ का वास्तविक नाम दूसरा था और उसने यह संकल्प किया था कि भविष्य में वह अपने पुराने नाम से न पुकारा जाए। जिस समय हेस्टर प्राइन को अपमान के उस मंच पर खड़े लोगों की अपार भीड़ देख रही थी, तो उन लोगों के बीच यात्रा से थका-मांदा वृद्ध, जो कि अभी-अभी गहन वनों से निकलकर आया था, खड़ा उस स्त्री को देख रहा था, जिसमें वह गृहस्थ की सुखद तथा उष्ण भावनाओं को देखने की आशाएं करता था। सब लोग उस नारी पर हंस रहे थे और गलियों तथा बाजारों में हेस्टर के पाप की चर्चा हो रही थी। उसके सम्बन्धियों तथा उसके पूर्व निष्कलंक जीवन के संगियों को अब हेस्टर से कुछ आशा न



थी। ऐसी परिस्थिति में क्योंकर वह व्यक्ति–जिसका उस पतिता से घनिष्ठतम तथा पवित्रतम सम्बन्ध था–आगे बढ़कर उस अवांछनीय स्त्री को अपना कह सकता था ! क्योंकि यह बात उसकी मर्जी पर निर्भर थी, अतः उसने यह निश्चय किया कि वह उस लज्जा का पात्र न बने जिसको हेस्टर वहन कर रही है। हेस्टर के अतिरिक्त कोई भी उसे नहीं जानता था। और हेस्टर को चुप रखने का रहस्य उसके पास था, अतः उसने समाज से अपना नाम छिपाना ही उचित समझा और उसने अपने पूर्व-सम्बन्धों से स्वतः अलग रहने में ही भलाई समझी। उसने अपने पूर्व-जीवन को पूर्णतया समाप्त कर दिया। उसकी स्थिति ठीक उसी प्रकार हो गई, मानो वह समुद्र की गहन तह में लुप्त हो चुका है, जैसाकि पर्याप्त समय पूर्व उसके सम्बन्ध में यह किंवदन्ती फैली थी। जब एक बार ये सब बातें हो गईं, तो उसने नवीन रुचियों और एक नवीन उद्देश्य के लिए अपने को लगाया। यह सच है कि वह उद्देश्य अंधकारमय था, किन्तु इसमें ही उसकी सारी मानसिक शक्तियां लगी रह सकती थीं।

इस संकल्प की पूर्ति के लिए वह रोजर चिलिंगवर्थ का नाम रखकर प्यूरिटनों की इस बस्ती में रहने लगा। इससे अधिक इसके विषय में कोई भी नहीं जानता था कि वह एक महान विद्वान है और असाधारण प्रतिभा का स्वामी है। उसने बहुत पहले चिकित्साशास्त्र का अध्ययन किया था, अतः उसने अपना परिचय एक चिकित्सक के रूप में लोगों को दिया और लोगों ने भी उसका इस रूप में स्वागत किया। बस्ती में चिकित्साशास्त्र में प्रवीण लोगों का बहुत अभाव था। बोस्टन के उस नगर के सभी लोग एक वृद्ध वयस् के चिकित्सक से औषधि लेते थे और उसके अच्छे व्यवहार तथा सहृदयता ने इतना अधिक प्रभाव पैदा कर लिया था जितना कि चिकित्सा की अर्हताएं तथा प्रमाणपत्र रखनेवाले भी नहीं कर सकते। एक शल्य चिकित्सक भी था, जो अपनी चिकित्सा के साथ-साथ नाई का काम भी करता था। ऐसे व्यावसायिक लोगों के बीच रोजर चिलिंगवर्थ का आगमन बड़ा ही लाभप्रद था। उसने शीघ्र ही प्राचीनकाल के चिकित्साशास्त्र में अपनी योग्यता दिखानी आरम्भ कर दी जिसके अनुसार प्रत्येक उपचार के

लिए तैयार की जानेवाली औषधियों में अनेक प्रकार की जड़ी-बूटियों का योग होता था। उसके पश्चात् उस विचित्र सम्मिश्रण को अमृत के समान जीवन देनेवाली औषधि माना जाता था। इंडियनों के पास कैद में रहकर उसने देसी जड़ी-बूटियों के सम्बन्ध में भी पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया था और वह यह बात कभी छिपाता भी नहीं था कि इन इंडियनों को प्रकृति ने जो उपहार दिए हैं उनमें से बहुत-सी चीजें बड़ी लाभप्रद हैं, और यह कि मुझे उनपर उतना ही विश्वास है, जितना यूरोप के विद्वान चिकित्सकों को शताब्दियों के परिश्रम के पश्चात् प्राप्त अपनी औषधियों पर है।

जहां तक धर्म के बाह्य सिद्धान्तों का सम्बन्ध है, यह विद्वान परदेसी धर्म के समस्त नियमों का बड़ी कठोरता से पालन करता था, और अपने आगमन के शीघ्र पश्चात् ही इसने श्री डिम्सडेल को अपना धर्मगुरु चुना था। उस नवयुवक पादरी को जिसकी विद्वत्ता की ख्याति अभी तक आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में गूंजती थी, उसके उत्साही शिष्य उसे ईश्वरीय सन्देशवाहक से कुछ थोड़ा ही कम समझते थे और वे सोचते थे कि यदि भगवान की कृपा से वह जीवित रहा, तो वह नये इंगलैंड के चर्च के लिए उतना ही काम कर जाएगा, जितना कि ईसाई धर्म के आविर्भाव में प्राचीन ईसाई सन्तों ने किया था। किन्तु अब तो स्पष्टतया डिम्सडेल का स्वास्थ्य खराब रहने लगा था। जो लोग उसके स्वभाव से पूर्णतया परिचित थे, वे युवक पादरी के पीलेपन का कारण यह समझते थे कि वह शास्त्रों के अध्ययन में पूरे मन से व्यस्त है तथा अपने धार्मिक कर्तव्यों का पालन बड़े ही योग्य तथा कठोर ढंग से करता है।

दूसरी ओर वह अपनी स्वभावगत नम्रता से यह कहता था कि यदि भगवान उसे इस संसार से उठाना ही चाहता है, तो उसका यही कारण है कि वह इस पृथ्वी पर निम्नतम कार्य करने के भी योग्य नहीं। उसका शरीर दिन-प्रतिदिन कृश होता जा रहा था। उसकी आवाज़ यद्यपि अब तक मीठी और सुरीली थी, किन्तु अब उसके शब्दों से भी एक प्रकार की अज्ञात उदासी-सी टपकने लगी थी। सामान्यतया देखा जाता था कि तनिक-सी घबराहट के अवसर पर या किसी प्रकार की आकस्मिक घटना के घटते ही



वह अपना हाथ अपने दिल पर रख लेता था। पहले तो ऐसा करते हुए लज्जा के भाव उसके मुख पर आते थे और बाद में उसका चेहरा पीला हो जाता था जिससे उसके हृदय की वेदना स्पष्ट हो जाती थी।

नगर में रोजर चिलिंगवर्थ के आगमन के समय नवयुवक पादरी की ऐसी स्थिति थी और यह समझा जाने लगा था कि वह उदीयमान ज्योति असमय में ही बुझ जाएगी। हेस्टर के दंड के दृश्य में रोजर का प्रथम प्रवेश एक रहस्यपूर्ण घटना थी और कोई नहीं जानता था कि यह आकाश से गिरा है अथवा पृथ्वी के किस छोर से आया है। अब उसे अपनी कला में प्रवीण माना जाता था और प्रायः देखा जाता था कि वह जंगली फूलों की कलियों और जड़ी-बूटियां एकत्र कर रहा है या जड़ें खोद रहा है अथवा वन के वृक्षों की टहनियां तोड़ रहा है, क्योंकि वह इनके वास्तविक गुणों को जानता था। लोगों ने उससे सुना था कि श्री केनेलम डिगबी जैसे विख्यात लोगों से—जिनका विज्ञान का ज्ञान आध्यात्मिक शक्ति की कोटि तक पहुंच गया है—उसका परिचय तथा पत्र-व्यवहार रहा है। विद्वानों में ऐसा स्थान प्राप्त होने पर भी वह वहां क्यों आया ? उसके व्यवसाय-क्षेत्र तो नगर हो सकते हैं। अतः वह इस जंगल में क्या ढूंढ़ने आया है ? इस प्रश्न के उत्तर में एक बात लोगों में फैल गई कि भगवान के चमत्कार से जर्मन विश्वविद्यालय का एक विद्वान चिकित्साशास्त्री वायु में उड़ता हुआ आकर डिम्सडेल के अध्ययन-कक्ष के पास उतरा है। जो लोग विवेकपूर्ण श्रद्धा रखते थे और यह समझते थे कि ईश्वर बिना चमत्कार दिखाए अपने प्रयोजन सिद्ध कर लेता है, उनका विश्वास था कि रोजर चिलिंगवर्थ के इस प्रकार उपयुक्त समय पर आगमन में ईश्वर का ही हाथ है।

नवयुवक पादरी के प्रति चिकित्सक के अत्यधिक लगाव से यह विश्वास और भी अधिक पुष्ट हो गया था। वह उसी की सभा में जाने लगा और अपनी स्वभावतः गंभीर प्रकृति के कारण शीघ्र ही उसका मित्र तथा विश्वासपात्र बन गया। उसने अपने धर्मोपदेशक के सम्बन्ध में बहुत चिन्ता प्रकट की और उसका उपचार करने की उत्सुकता दिखाते हुए यह आश्वासन दिलाया कि यदि इलाज शीघ्र आरम्भ कर दिया जाए, तो निश्चय

ही आशाप्रद परिणाम होगा। उसकी सभा में आनेवाले पदाधिकारियों, गिरजाघर के कर्मचारियों, बड़ी-बूढ़ी महिलाओं और सुंदर युवतियों– सभी ने आग्रह किया कि चिकित्सक द्वारा स्वेच्छा से प्रस्तुत सेवाओं का लाभ उठाना चाहिए। किन्तु डिम्सडेल ने नम्र भाव से उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर दिया।

"मुझे किसी औषधि की आवश्यकता नहीं।" उसने कहा।

परन्तु नवयुवक पादरी ने ऐसा क्यों कहा जबकि नित्यप्रति उसका मुख अधिकाधिक पीला और दुबला होता जा रहा था; उसकी आवाज में कम्पन बढ़ रहा था तथा अन्तस् का दर्द उठने पर हृदय को हाथ से दबाना पड़ता था ? क्या वह अत्यधिक परिश्रम से श्रान्त था अथवा क्या वह जीवन का अवसान चाहता था ?–बड़े पादरी और डीकन उससे यही प्रश्न पूछा करते थे और यहां तक कह देते थे कि उस चिकित्सक के रूप में ईश्वरप्रदत्त सहायता को अस्वीकार करना पाप है। वह यह सब चुपचाप सुनता और अन्त में चिकित्सक से सलाह करने का वचन देता था। "यदि ईश्वर की यह इच्छा होती," अपने वचन का पालन करते हुए डिम्सडेल ने रोजर चिलिंगवर्थ से अपने उपचार के सम्बन्ध में परामर्श किया और कहा, "तो मुझे इसमें बहुत सन्तोष होता कि मेरा सब परिश्रम, सब दुःख, सब पाप और सभी कथाओं का मेरे जीवन के साथ ही शीघ्र अवसान हो जाता और उनमें जो कुछ भौतिक है, वह कब्र में दबा रह जाता तथा जो कुछ आध्यात्मिक है, वह अमरलोक में मेरी निधि बनता और तुम्हें मेरे ऊपर अपनी योग्यता की परीक्षा न करनी पड़ती।"

"ओह !" स्वाभाविक अथवा कृत्रिम शान्त भाव से, जो रोजर चिलिंगवर्थ का स्वभाव ही था, उसने उत्तर दिया, "क्या एक नवयुवक पादरी को इस प्रकार कहना चाहिए ? जिसके यौवन की जड़ें अभी गहरी नहीं गईं, क्या उसे इस प्रकार जीवन से निराश हो जाना चाहिए ? और जो पुण्यात्माएं पृथ्वी पर ईश्वर की सहचर हैं, क्या उन्हें यरुसलीम की सुनहरी सीढ़ियों पर ही भगवान की सहचरता की कामना करनी चाहिए ?"

"नहीं," भौंहों पर तीव्र व्यथा की रेखाएं बनाकर हृदय पर हाथ रखते



हुए पादरी ने उत्तर दिया, "यदि मैं वहां घूमने का पात्र होता, तो मैं यहां के श्रम में भी सन्तोष का अनुभव करता।"

"अच्छे लोग अपने-आपको इसी प्रकार क्षुद्र जीव कहा करते हैं।" चिकित्सक बोला।

इस प्रकार वह रहस्यपूर्ण बूढ़ा रोजर चिलिंगवर्थ आदरणीय डिम्सडेल का चिकित्सक बन गया। चिकित्सक को रोगी के रोग से भी अधिक उसके चरित्र और गुणों में अभिरुचि थी, अतः अवस्था में इतना अधिक अन्तर होने पर भी ये लोग शनैः-शनैः बहुत समय इकट्ठे बिताने लगे।

समय बीतता गया और दोनों विकसित प्रतिभाओं में स्नेह-संबंध बढ़ता गया। किंतु जैसाकि पादरी के अन्तस् में किसी गुप्त रहस्य की कल्पना चिकित्सक किया करता था, वह कभी भी उस पर प्रकट न हुआ। चिकित्सक को सन्देह अवश्य था कि डिम्सडेल के शारीरिक रोग का वह पूर्ण रूप से निदान नहीं कर सका। यह स्थिति बहुत ही विचित्र थी।

कुछ समय पश्चात् रोजर चिलिंगवर्थ द्वारा ऐसा संकेत करने पर डिम्सडेल के मित्रों ने उन दोनों के लिए एक ही मकान में रहने का प्रबन्ध कर दिया और इस प्रकार पादरी के जीवन-प्रवाह की प्रत्येक लहर पर वह उत्सुक चिकित्सक अपनी दृष्टि रखने लगा। ऐसा होने पर नगर के सभी लोग बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि वे सभी समझते थे कि नवयुवक पादरी के कल्याण के लिए उस समय तक यह सर्वोत्तम प्रबन्ध है, जब तक कि वह अधिकृत लोगों के अनुरोध पर अपनी धर्मानुयायी सुन्दर नवयुवतियों में से किसी एक को चुनकर अपनी पत्नी नहीं बना लेता। अभी तक ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि आर्थर डिम्सडेल विवाह के लिए तैयार हो जाएगा। वह ऐसे सब सुझावों से इनकार कर दिया करता था।

इन दोनों मित्रों का वह नया घर उस सदाचारिणी विधवा का मकान था, जिसका समाज में बहुत प्रतिष्ठित स्थान था। आज उसके मकान के स्थान पर गिरजाघर बना हुआ है। इसमें एक ओर कब्रिस्तान भी था जो कि पहले इसाक जानसन के घर का आंगन था। पादरी और चिकित्सक दोनों के व्यवसायों के लिए जिस गंभीर चिन्तन की आवश्यकता होती है.

उसके लिए यह स्थान बहुत ही अनुकूल था। उस अच्छी विधवा ने मां के से भावों से प्रेरित होकर डिम्सडेल को सामने का कमरा दिया जिसमें खूब धूप आती थी और खिड़की पर भारी परदे लगे हुए थे, ताकि इच्छानुसार उससे छाया की जा सके। पादरी ने अपनी पुस्तकें, जिनमें चमड़े की जिल्द की पत्रिकाएं व पुरातन गाथाएं और पादरियों के पाण्डित्यपूर्ण उपदेश की रचनाएं थीं, एकत्र कर लीं, जिनका प्रोटेस्टेंट धर्मोपदेशक विरोध करते थे, किन्तु फिर भी उनके लिए इन्हें पढ़ना आवश्यक समझा जाता था। भवन के दूसरी ओर रोजर चिलिंगवर्थ ने अपना पुस्तकालय और प्रयोगशाला बनाई। यद्यपि आधुनिक वैज्ञानिक की दृष्टि से वह प्रयोगशाला सर्वथा अपूर्ण थी, किंतु उसमें आसव और अर्क निकालने के यन्त्र तथा रसायन और द्रव्यों को मिलाने के लिए आवश्यक उपकरण थे जिनसे उस समय का रसायनशास्त्री अपना प्रयोजन सिद्ध कर सकता था।

डिम्सडेल का वह सूक्ष्मद्रष्टा मित्र यह कल्पना करता था कि ईश्वर ने ही पादरी के स्वस्थ होने के लिए, अत्युत्तम प्रबंध कर दिया था। परन्तु अब यह अवश्यक बता देना चाहिए कि इस नगर के जन-समुदाय के एक विभाग का डिम्सडेल और रहस्यपूर्ण वृद्ध चिकित्सक के सम्बन्ध में अपना ही मत बन गया था। जब कोई जनसमूह किसी के बताए बिना किसी विषय में अपना दृष्टिकोण बनाता है, तो निश्चय ही यह सम्भावना होती है कि वह कोई बड़ी भूल कर बैठेगा; किन्तु जब वह अपने विशाल तथा सहानुभूतिशील हृदय की अन्तश्चेतना की सहायता से किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है, तो वह निष्कर्ष इतना पूर्ण और त्रुटिहीन होता है कि उसमें आध्यात्मिक सत्य की अभिव्यक्ति होती है। उक्त जनसमूह में रोजन चिलिंगवर्थ के प्रति एक द्वेष-भावना फैली हुई थी, यद्यपि इसके लिए कोई युक्तियुक्त तर्क नहीं था। नगर में एक वृद्ध शिल्पकार था, जिसने जीवन का बहुत समय लंदन में बिताया था। उसने आज से कोई तीस वर्ष पूर्व रोजर चिलिंगवर्थ को अन्य नामधारी व्यक्ति के रूप में देखा था। यद्यपि वह नाम उसे याद नहीं था, परन्तु उसे यह अवश्य याद था कि इस चिकित्सक की वहां विख्यात शपथाधिकारी डाक्टर फोरमन से बहुत



घनिष्ठता थी जिसका ओवरबरी की हत्या से बहुत गहरा सम्बन्ध था। कुछ-एक ने तो यहां तक कहा कि उसने उन दिनों, जबकि वह इंडियनों के पास बन्दी था, यन्त्र-मन्त्र सीख लिए थे। बहुत-से लोग इस मत के थे कि रोजर चिलिंगवर्थ के इस नगर में रहने और विशेषतः डिम्सडेल के साथ रहने के बाद उसमें बहुत परिवर्तन आ गया था। पहले तो उसकी मुखमुद्रा गंभीर और शान्त थी, किन्तु अब उसमें विकृति पैदा हो गई है जो पहले दिखाई नहीं देती थी।

दुःख की बात है कि बेचारे पादरी की आंखों की गहराई में जिस खेद और भय की अभिव्यक्ति थी उससे पता चलता था कि संघर्ष बहुत कटु है और विजय भी पूर्णतः निश्चित नहीं है।

## दस

वृद्ध रोजर चिलिंगवर्थ का स्वभाव आरम्भ से ही शान्त और सहानुभूतिपूर्ण था। किन्तु जब उसने यह जांच आरम्भ की, तो एक भयानक विचार ने उसके मन में घर कर लिया और अन्त में उसके आदेश को पूर्णतः पालन करने के पश्चात् ही वह उससे मुक्त हो सका। वह बेचारे पादरी के हृदय को इस प्रकार कुरेद रहा था, जैसे कोई खान में से सोना निकालने का प्रयत्न कर रहा हो।

"यह व्यक्ति...," उसने एक अवसर पर मन ही मन कहा था, 'यद्यपि लोग उसे पवित्र समझते हैं, और वह पूर्णतः आध्यात्मिक व्यक्ति प्रतीत होता है, किन्तु उसे अपने पिता अथवा माता से पाशविक प्रकृति के संस्कार मिले थे।'

एक दिन कब्रिस्तान के ओर की खिड़की की देहलीज पर कुहनी टेके हाथ पर अपना माथा टिकाए वह रोजर चिलिंगवर्थ के साथ बातें कर रहा था, जबकि वह वृद्ध चिकित्सक बूटियों की जांच कर रहा था।

"कहां से ?" उसने प्रश्न-भरी दृष्टि से पूछा, जो कि पादरी के

विशेषता थी। क्योंकि आजकल वह इतना विभ्रान्त था कि चेतन अथवा जड़ किसी भी वस्तु की ओर सीधी दृष्टि से नहीं देखा करता था, ''दयालु डाक्टर, ये काले और भद्दे पत्तोंवाली बूटियां आपने कहां से ढूंढ़ीं ?''

''यहीं कब्रिस्तान में से।'' चिकित्सक ने अपनी खोज जारी रखते हुए उत्तर दिया, ''मैंने भी इन्हें पहली बार देखा है। ये उस कब्र पर उगी हुई थीं, जिस पर कोई पत्थर अथवा स्मारक नहीं है। ये मृतक के हृदय से पैदा हुई हैं और उसके अन्तस् का कोई भयानक रहस्य इनमें झलक रहा है। यदि वह अपने पाप को जीवनकाल में मान लेता, तो बहुत अच्छा होता।''

''सम्भवतः।'' डिम्सडेल ने कहा। यह अवश्य अपने रहस्य को बताना चाहता था, किन्तु ऐसा कर नहीं सका।

''और इसी कारण,'' चिकित्सक ने उत्तर दिया, ''क्योंकि प्रकृति में रहस्य स्वीकार कराने की शक्ति होती है, उसके हृदय से ये काली जड़ी-बूटियां इस गुप्त अपराध को बताने के लिए पैदा हुई हैं।''

''श्रीमान, वह तो आपकी कल्पना मात्र है।'' पादरी ने उत्तर दिया, ''मेरा मत तो यह है कि सिवाय विधाता की दया के, प्रकृति की कोई भी शक्ति शब्द अथवा संकेत द्वारा मानव-हृदय के रहस्य को व्यक्त नहीं कर सकती। अपराधी हृदय ऐसे गुप्त रहस्य को पूर्ण शक्ति से उस दिन तक छिपाए रखता है, जिस दिन सभी रहस्य प्रकट हो जाते हैं। नहीं, मैंने आध्यात्मिक आदेशों में यह पढ़ा है कि प्रायश्चित्त के लिए मानव के कार्य अथवा विचार प्रकट होने ही चाहिए। यह दृष्टिकोण संकुचित है। यह समझना भी भूल होगी कि सभी बुद्धिजीवी प्राणियों को गुप्त रहस्य के प्रकटीकरण द्वारा मानसिक सन्तोष प्राप्त होता है, क्योंकि उस अन्तिम दिन को ही उन्हें जीवन की अंधकारमयी समस्या का ज्ञान होगा। समस्या को पूर्णतः सुलझाने के लिए लोगों के हृदय का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है और मैं समझता हूं—जिन हृदयों में कोई पीड़ा छिपी होती है, वे उस अन्तिम दिन बिना किसी संकोच के अवर्णनीय प्रसन्नता के साथ अपने रहस्य को खोल देंगे।''

''तो क्यों न उस रहस्य को यहां ही व्यक्त कर दिया जाए ?'' रोजर



चिलिंगवर्थ ने चोरी से उसकी ओर दृष्टि घुमाते हुए देखा, ''क्यों न वह अपराधी शीघ्रातिशीघ्र अपने रहस्य खोलकर उस अकथनीय शान्ति को प्राप्त करे ?''

''वे प्रायः ऐसा करते हैं।'' पादरी ने अपनी छाती को ऐसे दबाते हुए, मानो किसी उठती टीस को दबाने का असफल प्रयत्न कर रहा हो, कहा, ''बहुत सी हीन आत्माओं ने न केवल अपनी मृत्यु के समय प्रत्युत पूर्णतः स्वस्थ तथा ख्याति-प्राप्त जीवन में अपने रहस्यों का उद्घाटन किया है और मैंने देखा है कि सब कुछ उगल देने के पश्चात् उन्हें एक विशेष प्रकार की शान्ति अनुभव हुई, जैसे कि कोई अपनी ही दूषित सांसों में घुटन महसूस कर रहा हो और अकस्मात् खुली हवा में सांस लेने लगे। यह तो स्वाभाविक ही है, क्योंकि हत्या का अपराधी व्यक्ति लाश को अपने हृदय में संजोए रखे, उसकी अपेक्षा अच्छा तो यह होगा कि वह उसे निकालकर बाहर फेंक दे और फिर उसकी बजाय लोग उस लाश की देखभाल करें।''

''शान्त मेरे दोस्त !'' चिकित्सक ने कहा, ''फिर भी कुछ लोग अपनी गुप्त बातों को समेटे रखते हैं।''

''सच है, ऐसे लोग भी हैं,'' डिम्सडेल ने उत्तर दिया, ''किन्तु इसके कुछ अन्य विशेष कारणों की बजाय एक यही कारण होता है कि उनकी प्रकृति ही उन्हें मौन के लिए बाध्य करती है। शायद ऐसा भी हो सकता है कि अपराधी के मन में भगवान की दया के प्रति श्रद्धाभाव हो और वह लोक-कल्याण के हेतु ही लोगों के सामने अपने अपराधों को प्रकट न करता हो, क्योंकि उससे लोगों पर बुरे संस्कार पड़ने की संभावना होती है। पुण्यकार्यों से भी विगत पाप का प्रायश्चित नहीं हो सकता। अतः वे लोग अपने अन्तस् में अकथनीय वेदना छिपाए समाज में घूमते-फिरते हैं और हिम के समान पवित्र दिखाई देते हैं, जबकि उनके हृदयों पर पाप के ऐसे धब्बे लगे होते हैं, जिनसे वे छुटकारा नहीं पा सकते।''

''वे लोग अपने-आपको धोखा देते हैं।'' रोजर चिलिंगवर्थ ने अंगुली से संकेत करते हुए और पहले से भी अधिक आग्रह के साथ कहा, ''वे उस लज्जा को अपनाने से घबराते हैं जिसके वे पात्र हैं, मानव-प्रेम और

ईश्वर की सेवा की पवित्र भावनाओं के साथ ही सम्भवतः अपराध से पैदा होनेवाली कलुषित भावनाएं भी होती हैं, जो अवश्य उनमें शैतान के जगत् का सृजन करती हैं। किन्तु यदि वे भगवान की सेवा करना चाहते हैं, तो उन्हें अपने पापपूर्ण हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ाने चाहिए। यदि वे मानव-समाज की सेवा करना चाहते हैं, तो उन्हें पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त के द्वारा अन्तरात्मा की वास्तविक शक्ति का प्रदर्शन करना चाहिए। हे विद्वान और धर्मपरायण मित्र, क्या ईश्वरीय सत्य की अवहेलना करके केवल झूठे प्रदर्शन-मात्र से प्रभु की महत्ता बढ़ाई जा सकती है और मानव का कल्याण हो सकता है ? मेरा विश्वास करो, ऐसे लोग अपने-आपको धोखा दे रहे हैं।''

''सम्भवतः ऐसा ही हो,'' पादरी ने उपेक्षा-भाव से कहा जैसे कि वह इस चर्चा को अप्रासंगिक तथा अयुक्तियुक्त समझता हो। उसमें ऐसी प्रवृत्ति थी कि जिस विषय से उसकी भावुक प्रकृति क्षुब्ध हो जाती, वह उससे तुरन्त छुटकारा पा लेता था, ''परन्तु अब मैं अपने योग्य चिकित्सक से पूछता हूं कि उनकी सहानुभूतिपूर्ण देखभाल से मेरे इस कृश शरीर को कुछ लाभ भी हुआ है अथवा नहीं?''

रोजर चिलिंगवर्थ द्वारा कोई उत्तर देने से पूर्व ही उन्हें पास के कब्रिस्तान में से किसी बच्चे की खिलखिलाहट सुनाई दी। उसने देखा कि हेस्टर प्राइन और पर्ल उस चारदीवारी में से गुजर रही हैं।

इस समय रोजर चिलिंगवर्थ भी खिड़की के पास पहुंच गया था और बहुत शुष्क हंसी हंसता हुआ उधर देख रहा था।

''यह बच्ची किसी विधि-विधान या आदेश अथवा मनुष्य के कठोर अनुशासन को नहीं जानती और न ही इसे पता है कि गलत क्या है और ठीक क्या।'' उसने धीरे से कहा जिसे शायद ही उसके साथी ने सुना हो, ''एक दिन मैंने देखा था कि इस लड़की ने स्प्रिंग लेन में गवर्नर को पानी से भिगो दिया था। ईश्वर जाने यह बच्ची कैसी है ! उसमें न जाने कितनी शरारत भरी हुई है ! क्या इसे उचित प्यार मिलता है ? क्या इसमें प्राणीसुलभ कोई सिद्धान्त भी है ?''



''कोई नहीं, सिवाय इसके कि इसे कानून के उल्लंघन की पूर्ण स्वतन्त्रता है।'' डिम्सडेल ने साधारण भाव से कहा जैसे कि वह इस बात पर मन-ही-मन विचार कर रहा हो, ''वह कोई अच्छा कार्य भी कर सकती है, इसे कौन जाने !''

बच्ची ने सम्भवतः उसकी बात को सुन लिया, क्योंकि उसने बड़ी शरारत और हर्ष-भरी मुसकान से खिड़की की ओर देखा और कांटेदार फूल डिम्सडेल की ओर फेंके। उसने कहा, ''इधर आ जाओ मां ! वह काला बूढ़ा आदमी तुम्हें पकड़ लेगा। उसने पहले ही पादरी को पकड़ रखा है। चली आओ मां ! नहीं तो अवश्य पकड़ लेगा, किन्तु वह छोटी पर्ल को नहीं पकड़ सकता।''

''इस स्त्री को देखिए,'' रोजर चिलिंगवर्थ ने कुछ रुकते हुए कहा, ''इसमें चाहे कितने ही दुर्गुण क्यों न हों, किन्तु इसने अपने मन में किसी पाप के रहस्य को नहीं छिपा रखा, जैसा कि तुम्हारे अन्तस् में छिपा हुआ प्रतीत होता है। क्या तुम समझते हो कि इस 'रक्तिम अक्षर' को अपनी छाती से लगाए घूमनेवाली हेस्टर प्राइन कम दुःखी है ?''

''मैं विश्वास करता हूं, वह अवश्य दुःखी है,'' पादरी ने कहा, ''किन्तु मैं उसके स्थान पर इस बात का उत्तर नहीं दे सकता। उसके चेहरे से अवश्य पीड़ा प्रकट होती थी और मेरी यही इच्छा हो रही थी कि मैं उसे न देखूं। परन्तु मैं समझता हूं कि जिस प्रकार यह बेचारी हेस्टर स्वतन्त्रता से अपनी पीड़ा दिखा सकती है, इसी प्रकार प्रत्येक पीड़ित के लिए अपनी पीड़ा को अपने अन्तस् में छिपाने की बजाय उसे प्रकट कर देना कहीं अच्छा है।''

वातावरण में फिर एकदम शान्ति छा गई। बूढ़े चिकित्सक ने अपनी जड़ी-बूटियों को फिर देखना और इकट्ठा करना आरम्भ कर दिया। ''अभी थोड़ी देर पहले तुमने मुझसे पूछा था,'' आखिर उसने कहा, ''कि तुम्हारे स्वास्थ्य के बारे में मेरी क्या राय है।''

''हां ! मैंने यह पूछा था।'' पादरी ने उत्तर दिया, ''और मुझे यह जानकर हर्ष ही होगा कि तुम मुझे साफ-साफ बता दोगे, भले ही वह मेरी

निकट मृत्यु का ही संवाद क्यों न हो।''

''स्वतन्त्र भाव से और स्पष्टतः,'' चिकित्सक ने उसी प्रकार जड़ी-बूटियों के काम में लगे हुए, किन्तु अपनी तीखी दृष्टि को डिम्सडेल की ओर घुमाते हुए कहा, ''तुम्हारा रोग विचित्र है। जैसा वह दिखाई देता है, कोई रोग है ही नहीं, लक्षणों से तो मैं इसी निष्कर्ष पर पहुंचा हूं। महीनों से मैं तुम्हें भली प्रकार देख रहा हूं और मुझे यही समझना चाहिए कि तुम बहुत रुग्ण हो और वास्तव में तुम इतने बीमार भी नहीं कि एक योग्य चिकित्सक तुम्हारे उपचार की आशा ही छोड़ बैठे, किन्तु समझ में नहीं आता कि क्या कहूं, मुझे ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारे रोग को समझता हुआ भी नहीं समझता।''

''तुम तो पहेलियां बुझा रहे हो।'' उस रुग्ण पादरी ने अपनी दृष्टि खिड़की से बाहर डालते हुए कहा।

''तो मैं और स्पष्ट कहता हूं,'' चिकित्सक ने बात जारी रखी, ''और ऐसा कहते हुए मैं क्षमाप्रार्थी हूं–सम्भवतः मुझे इसके लिए क्षमा मांगनी ही पड़ेगी– क्योंकि मेरे लिए स्पष्ट कहना बहुत आवश्यक है। तुम्हारा मित्र होते हुए और तुम्हारा चिकित्सक होते हुए–क्योंकि ईश्वर ने ही मुझे तुम्हारे स्वास्थ्य का ध्यान रखने की प्रेरणा दी है–मैं तुमसे यह पूछना चाहता हूं कि जिस कारण यह रोग पैदा हुआ है, क्या उसे आपने मुझे स्पष्टतः बता दिया है ?''

''तुम यह कैसे पूछ सकते हो ?'' पादरी ने कहा, ''चिकित्सक को उपचार के लिए बुलाना और फिर उससे अपना रोग छिपाए रखना क्या बच्चों का खेल है ?''

''तो मैं जो कुछ जानता हूं, तुम मुझे बताओगे ?'' रोजर चिलिंगवर्थ ने तीखी और विवेकपूर्ण दृष्टि पादरी के चेहरे पर गड़ाते हुए पूछा, ''यह ठीक है, परन्तु जिस चिकित्सक को केवल शारीरिक रोग बता दिया जाए, वह प्रायः अन्तस् की आधी बीमारी को जान लेता है। शरीर के रोग को हम पूरी तरह बीमारी समझ बैठते हैं। वह तो वस्तुतः अन्तस् के आध्यात्मिक भाग के किसी रोग के चिह्न होते हैं। मैं पुनः आपसे



क्षमा-प्रार्थना करता हूं, क्योंकि सम्भवतः मेरे इस कथन से आपको कुछ क्षोभ हो। आज तक मैंने जितने लोगों को देखा है, उनमें से एक आप ही ऐसे हैं जिनके शरीर तथा आत्मा में पूर्ण ऐक्य तथा सामंजस्य है।''

''तब मैं और कुछ नहीं कहना चाहता।'' पादरी ने अपनी कुर्सी से जल्दी से उठते हुए कहा, ''मैं समझता हूं कि तुम आत्मा की चिकित्सा नहीं करते।''

''इस प्रकार एक रोग !'' रोजर चिलिंगवर्थ ने पूर्ववत् भाव से ही कहा, जैसे कि उसने पादरी की बात की ओर ध्यान ही न दिया हो। वह उस पीले चेहरेवाले पादरी के सामने अपनी काली और कुरूप आकृति के साथ सामने आकर खड़ा हो गया, ''एक ऐसा रोग तुम्हारी आत्मा में है जिसके स्पष्ट चिह्न तुम्हारे शरी से लक्षित होते हैं। क्या तुम यह चाहते हो कि तुम्हारा चिकित्सक तुम्हारे शारीरिक रोग को ठीक कर दे ? जब तक अपनी आत्मा की व्यथा को उसे न बताओगे, वह तुम्हारा उपचार कैसे कर सकता है ?''

''नहीं ! नहीं !! तुम्हें नहीं !!! एक सांसारिक चिकित्सक के सामने नहीं !'' डिम्सडेल ने आवेशपूर्ण दृष्टि से देखते हुए चिलिंगवर्थ को कहा, ''तुम्हें कदापि नहीं ! यदि यह आत्मा का ही रोग है, तो आत्मा के चिकित्सक से ही इसका निदान कराऊंगा। वही इसका उपचार करेगा या मुझे मार देगा। वह भगवान ही है। वह मुझसे जो भी न्याय कराना चाहे करे। वही मेरे रोग को ठीक पहचान सकता है। तुम कौन हो जो इस मामले में हाथ डाल रहे हो, जो एक पीड़ित और उसके भगवान के बीच आने का प्रयास कर रहे हो ?''

इसी क्रुद्ध मुद्रा में वह कमरे से बाहर चला गया।

वह अर्धस्फुट शब्दों में कहता, 'यह असाधारण रोगी है। अतः मुझे इसके अन्तस् में गहरे प्रवेश करके ही रोग का निदान करना होगा। शरीर और आत्मा में कितना अद्‌भुत सान्निध्य है और नहीं तो चिकित्सा के लिए ही मुझे इसका अध्ययन करने की आवश्यकता है।'

उपर्युक्त घटना के पश्चात् एक दिन दोपहर को डिम्सडेल पत्रों का

एक खुला पुलिंदा अपनी छाती पर रखे कुर्सी पर बैठा हुआ गहरी निद्रा में सो रहा था। उस पुलिंदे में निद्रा दिलानेवाले साहित्य की रचना होगी, क्योंकि डिम्सडेल की नींद इतनी कच्ची थी कि पक्षी के पंख फड़फड़ाने-मात्र से टूट जाती थी। किन्तु आज वह इतनी गहरी नींद में सो रहा था कि रोजर चिलिंगवर्थ के बिना किसी सावधानी के कमरे में प्रवेश करने पर भी वह हिला तक नहीं। चिकित्सक सीधा अपने रोगी के सामने पहुंचा और उसने अपना हाथ उसकी छाती पर रखा और कुर्ती को खोल दिया, यद्यपि पादरी ने कभी उपचार-हेतु भी चिकित्सक के सामने छाती को नहीं खोला था।

तब डिम्सडेल ने कुछ कंपकंपी का अनुभव किया और वह कुछ हिला। क्षण-भर रुकने के बाद चिकित्सक चला गया।

## ग्यारह

जिस घटना का वर्णन किया जा चुका है, उसके पश्चात पादरी और चिकित्सक का बाह्य सम्बन्ध तो वैसा ही रहा, किन्तु आंतरिक सम्बन्ध सर्वथा बदल चुका था।

डिम्सडेल के साथ उसके सम्बन्धों में न केवल उसका बाह्य किन्तु अंतःकरण भी चिकित्सक को दृष्टिगोचर होने लगा था। यहां तक कि वह उसकी प्रत्येक गतिविधि को समझ सकता था।

यों शारीरिक रोग से पीड़ित और आत्मा में निहित किसी वेदना से व्यथित तथा अपने घोर शत्रु के जाल में फंसा हुआ डिम्सडेल अपने धार्मिक व्यवसाय में अधिकाधिक लोकप्रिय होता गया।

निस्सन्देह डिम्सडेल के चरित्र में ऐसे गुण थे जिनसे वह आध्यात्मिकता तथा पवित्रता के उच्चतम शिखर तक पहुंच सकता था; किन्तु वह किसी अपराध अथवा व्यथा से प्रपीड़ित होने के कारण, जो उसके भाग्य की कुटिल रेखा बन चुकी थी, पृथ्वी का निम्न प्राणी ही रहा।



उसकी इच्छा होती कि वह मंच पर खड़ा होकर उच्च स्वर से घोषणा करते हुए लोगों को बताए कि वह क्या है।

अनेक बार डिम्सडेल यही विचार करके मंच पर जाता था कि वह उन शब्दों को कहे बिना नीचे नहीं उतरेगा, किन्तु वह कभी इन्हें व्यक्त न कर पाता।

पादरी भली प्रकार जानता था कि इस चतुराई, पूर्णतया दुःख-भरे शब्दों में की गई आत्मश्लाघा से—जिस दृष्टि से उसकी अस्पष्ट स्वीकृति को देखा जाता था—उसने अपने-आपको धोखा दिया था और इस प्रकार वह एक और अपराध का तथा स्वानुभूत लज्जा का भागी बन गया था। इससे उसको इतनी क्षणिक शांति भी नहीं मिली थी।

एक रात को पादरी अपनी कुर्सी से घबराकर उठा। उसके मन में एक नवीन विचार आया। उसे क्षणिक शान्ति का आभास हुआ। तब उसने ऐसे कपड़े पहने जैसे कि वह सभा में पूजा के समय पहना करता था, और तब वह धीरे-धीरे सीढ़ियों से नीचे उतरा। उसने द्वारा खोला और कहीं चला गया।

## बारह

स्वप्नावस्था में या अर्धसुषुप्ति में चलते हुए डिम्सडेल उस स्थान पर पहुंचा, जहां हेस्टर ने अपने सार्वजनिक अपमान के प्रारम्भिक कुछ घण्टे बिनाए थे। यह वही दंड-मंच था जहां गत सात वर्ष के लम्बे काल में आंधी, पानी और ताप ने अपने निर्दय प्रहारों के चिह्न छोड़ दिए थे। सभा-भवन की बालकनी के नीचे उस स्थान पर अनेक अपराधी आ चुके थे। पादरी सीढ़ियों के ऊपर चढ़ गया।

आखिर वह यहां क्यों आया ? क्या केवल पश्चात्ताप का उपहास करने के लिए ? यह उपहास ही था, किन्तु उसकी अपनी आत्मा को ही उस हीन भाव से संघर्ष करना पड़ रहा था। यह ऐसा उपहास था, जिसपर

देवता भी लज्जा अनुभव करते और रोने लगते, किन्तु शैतान अट्टहासपूर्ण हंसी हंसते। उसे निरंतर प्रेरणा देनेवाली उसकी अन्तर्वेदना ही उसे यहां खींच लाई थी।

इस प्रकार प्रायश्चित्त का व्यर्थ प्रदर्शन करते हुए डिम्सडेल के मन में भय पैदा हुआ और ऐसा लगा कि सारा संसार उसकी नंगी छाती पर हृदय के पास लगे 'रक्तिम अक्षर' को देख रहा है।

'यह क्या हो गया !' पादरी ने हाथों से मुंह ढांपकर धीरे से कहा, 'सारा शहर जाग पड़ेगा और लोग उस ओर भाग खड़े होंगे तथा उसे वहां पाएंगे।'

किन्तु ऐसा नहीं हुआ। सम्भवतः उसकी चीख इतनी जोर की नहीं थी जितनी कि उसके अन्तस् के भय के कारण उसे स्वयं लगी थी। जब पादरी को कोई आहट सुनाई नहीं दी, तो उसने आंखों पर से हाथ हटाए और अपने चारों ओर देखा। उसकी दृष्टि गवर्नर वेलिंगम के महल पर पड़ी और उसने देखा कि एक खिड़की में गवर्नर वेलिंगम स्वयं हाथ में लैम्प लिए सिर पर टोपी पहने सफेद गाउन डाले खड़े हैं। वे किसी कब्र से निकले प्रेत के समान दिखाई देते थे। वे उस चीख की आवाज से चकित हो गए थे। उसी घर की दूसरी खिड़की पर गवर्नर की बहिन हिबिन्स हाथ में लैम्प लिए खड़ी थी। यद्यपि वह दूर थी, तथापि उसकी आकृति से कटुता और असन्तोष स्पष्ट दिखाई देता था। उसने सिर खिड़की से बाहर निकालते हुए उत्सुकता के साथ देखा, निस्सन्देह उस जादूगरनी ने डिम्सडेल की चीख को सुना और उससे पैदा होने वाली गूंज से यही समझा था कि शैतान और जादूगरनियां शोर मचा रहे हैं, जिनके साथ उनका घूमना सर्वविख्यात हो चुका है।

गवर्नर वेलिंगम के प्रकाश को देख हिबन्स ने अपना लैम्प तुरन्त बुझा दिया और स्वयं कहीं गायब हो गई। लगा कि वह बादलों में उड़ गई है। गवर्नर ने अंधेरे में दूर तक दृष्टि दौड़ाई, किन्तु वह मील के पत्थर से आगे कुछ भी न देख सका। वह कमरे में लौट गया।

पादरी ने देखा कि एक प्रकाश समीप आया। उसने प्रकाश के उस



घेरे में देखा कि उसके पादरी बन्धु अथवा यूं कहना चाहिए धर्मपिता आदरणीय जान विल्सन हैं। डिम्सडेल ने अनुमान लगाया कि श्री विल्सन अब तक किसी मृतक के सिरहाने प्रार्थना करते रहे होंगे। सच में ही वे बूढ़े पादरी गवर्नर विंथरांप के मकान से निकल रहे थे जहां उसी समय उसकी मृत्यु हुई थी। वे उस लैम्प के प्रकाश की सहायता से अपना मार्ग देखते हुए घर की ओर जा रहे थे। उस धीमे प्रकाश में डिम्सडेल भावुकता से परिपूर्ण उपर्युक्त कल्पनाओं में संलग्न था। वह मुसकराया—नहीं-नहीं, हंसा और उसे आश्चर्य हुआ कि कहीं वह पागल तो नहीं हो गया।

जिस समय श्री विल्सन जनेवा से बना हुआ कोट पहने हाथ के लैम्प को छाती तक उठाए उस मंच के पास से गुजर रहे थे, तो नवयुवक पादरी बोले बिना नहीं रह सका, "नमस्कार आदरणीय पिता विल्सन, मेरी प्रार्थना है, आओ यहां, एक घंटा बैठकर आनन्द मनाएं।" आदरणीय विल्सन कीचड़ से बचते हुए अपने रास्ते पर दृष्टि गड़ाए चलते रहे और उन्होंने उस दंड-मंच की ओर मुंह तक भी नहीं किया। जब वह धुंधला प्रकाश उसकी दृष्टि से ओझल हो गया, तो पादरी को कुछ होश आया। वे थोड़े-से क्षण उसके लिए अत्यधिक भयावह और आतंकपूर्ण थे; यद्यपि उसने सरल-सुगम मानसिक कल्पनाओं द्वारा अपने को शांत करने का प्रयास किया था।

"पर्ल, नन्हीं पर्ल !" उसने थोड़ी देर रुककर आवाज दी, "हेस्टर प्राइन, क्या तुम यहां हो ?"

"हां, मैं हेस्टर प्राइन हूं !" उसने आश्चर्यचकित होकर उत्तर दिया और पादरी ने उसके कदमों की आहट अपनी ओर आती हुई सुनी, "मैं और मेरी छोटी पर्ल—दोनों यहां हैं।"

"तुम कहां से आ रही हो हेस्टर ?" पादरी ने पूछा, "तुम इधर कहां आई थीं ?"

"मैं एक मरणासन्न व्यक्ति के पास बैठी थी," हेस्टर प्राइन ने उत्तर दिया, "गवर्नर विंथराप की मृत्यु हो गई है। मुझे उसके वस्त्रों का माप लेना था। अब घर लौट रही हूं।"

"हेस्टर, तुम और नन्हीं पर्ल इधर आओ," डिम्सडेल ने कहा, "तुम दोनों पहले यहां आई थीं, किन्तु मैं तुम्हारे साथ नहीं था। एक बार फिर यहां आओ और हम तीनों यहां खड़े होंगे।"

वह चुपचाप सीढ़ियों पर चढ़ गई और नन्ही पर्ल को अंगुली से पकड़े मंच पर खड़ी हो गई। पादरी ने बच्चे का दूसरा हाथ टटोलकर पकड़ लिया। ज्योंही उसने ऐसा किया, उसके सारे शरीर में एक नये जीवन की लहर दौड़ गई।

"पादरी !" नन्ही पर्ल ने धीरे से कहा।

"बच्ची, तुम क्या कहना चाहती हो ?" डिम्सडेल ने पूछा।

"क्या कल दोपहर के समय तुम मां और मेरे साथ यहां खड़े होओगे ?" पर्ल ने पूछा।

"नहीं, ऐसा नहीं नन्ही पर्ल !" पादरी ने उत्तर दिया, क्योंकि उस क्षण जो नई शक्ति उसे मिल गई थी, उसके तिरोहित हो जाने के कारण उस पर पुनः भेद खुलने का वही आतंक छा गया था जिससे वह आज तक प्रपीड़ित था। इस मिलन से ही उसका शरीर कांप रहा था, यद्यपि उसमें एक विचित्र प्रकार का आनन्द-मिश्रित भय था। "नन्हीं, ऐसा नहीं मेरी बच्ची, मैं अवश्य तुम्हारी मां और तुम्हारे साथ एक दिन इस स्थान पर खड़ा होऊंगा, परन्तु कल नहीं, मेरी नन्ही बच्ची।"

पर्ल हंसी और उसने हाथ खींचने का प्रयत्न किया, किन्तु पादरी ने उसे नहीं छोड़ा।

"थोड़ी-सी देर और मेरी बच्ची।"

पर्ल ने पूछा, "पर क्या तुम वचन दोगे कि कल तुम मेरा और मेरी मां का हाथ पकड़े दोपहर के समय यहां खड़े होगे ?"

"उस समय नहीं पर्ल," पादरी ने कहा, "किंतु किसी और दिन।"

"और किस दिन ?" बच्ची ने पुनः पूछा।

"उस महानिर्णय के दिन !" पादरी ने कहा, और कितनी विचित्र बात है कि सत्य के उपदेशक को यह उत्तर बच्ची को देना पड़ा, "उस समय न्यायाधीश के सामने तुम्हारी मां और मुझे अवश्य इकट्ठे खड़ा होना होगा।



किन्तु दिन के प्रकाश में कभी नहीं।"

पर्ल पुनः हंसी।

डिम्सडेल ने अभी बात पूरी भी नहीं की थी कि अन्धकारमय आकाश के एक छोर से प्रकाश दिखाई दिया।

नन्ही पर्ल की आंखों और चेहरे में एक जादू भरा हुआ था और जब वह पादरी की ओर गई, तो उसके मुंह पर एक शरारत-भरी मुसकराहट खिली हुई थी।

पादरी के मन और दृष्टि के रोग के ही कारण उसे ऊपर आकाश में लाल प्रकाश की रेखा से 'ए' अक्षर अंकित हुआ दिखाई दे गया।

उसी क्षण एक ऐसी घटना हुई जिसका प्रभाव डिम्सडेल की मानसिक स्थिति पर विशेष रूप से पड़ा। डिम्सडेल जब आकाश की ओर निहार रहे थे, तो उन्हें कुछ भी पता नहीं था कि नन्हीं पर्ल बूढ़े चिलिंगवर्थ की ओर संकेत कर रही है जो मंच के बहुत समीप खड़ा था।

"वह व्यक्ति कौन है हेस्टर ?" भयभीत डिम्सडेल के मुख से इतना निकला, "उसे देखकर मैं कांपने लगता हूं। क्या तुम इस व्यकित को जानती हो ? मैं इससे घृणा करता हूं हेस्टर।"

उसे अपनी शपथ की याद आई और वह चुप रही।

"उसे देखते ही मेरी आत्मा कांपने लगती है।" पुनः उसने कहा, "वह कौन है ? कौन है वह ? क्या तुम मेरे लिए कुछ नहीं कर सकतीं ? मुझे इस व्यक्ति से एक अज्ञात भय का आभास मिलता है।"

"पादरी," नन्ही पर्ल बोली, "मैं तुम्हें बता सकती हूं कि वह कौन है।"

"तो जल्दी करो बच्ची।" पादरी ने अपने कान उसके होठों तक ले जाते हुए कहा, "शीघ्र बताओ और अत्यन्त आहिस्ता से बोलो।"

पर्ल ने उसके कान में कुछ कहा जो मनुष्य की भाषा प्रतीत होती थी, किंतु वह बच्चों का सा गुनगुनाना-मात्र था, जिसका वे प्रायः खिलवाड़ के लिए प्रयोग किया करते हैं। यदि उसने रोजर चिलिंगवर्थ के बारे में ही कोई बात कही थी, तो उस विद्वान पादरी को उसकी कुछ भी समझ नहीं

आई और मानसिक घबराहट और भी बढ़ गई। तब वह शरारती बच्ची जोर से हंसी।

''क्या तुम मेरा परिहास करती हो ?'' पादरी ने कहा।

''तुम साहसी और सच्चे नहीं थे !'' बच्ची ने उत्तर दिया, ''तुम यह वचन नहीं दे सके तो कल दोपहर को तुम मेरा और मां का हाथ पकड़ोगे।''

''आदरणीय महोदय !'' चिकित्सक अब तक मंच के बिलकुल पास पहुंच चुका था, उसने कहा, ''क्या तुम धर्मपरायण श्री डिम्सडेल हो ? हां ! हां !! ठीक है। हम जैसे जिन अध्ययनशील व्यक्तियों का दिमाग पुस्तकों में लगा रहता है, उन्हें ठीक समझने की आवश्यकता है, क्योंकि हम तो जागते हुए स्वप्न देखते हैं और सोते हुए घूमने लगते हैं। मेरी प्रार्थना है कि नीचे उतर आओ, मैं तुम्हें घर पहुंचा दूं।''

''तुम्हें कैसे पता लगा कि मैं यहां हूं।'' पादरी ने भयभीत होकर पूछा।

''सच तो यह है,'' रोजर चिलिंगवर्थ ने उत्तर दिया, ''मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। मैं बहुत रात गए तक गवर्नर विंथराप की चिकित्सा में लगा रहा और मैंने जो थोड़ा-बहुत सीखा है उसकी सहायता से उन्हें स्वस्थ करने का प्रयत्न करता रहा, किंतु वे तो चिरशांति की गोद में सो गए और मैं अपने घर को लौट पड़ा। तब मैंने इस विचित्र प्रकाश को देखा। आदरणीय महोदय, मेरा निवेदन है कि आप मेरे साथ चलें अन्यथा आप प्रातः गिरजाघर में ठीक प्रकार से प्रार्थना नहीं कर सकेंगे। ओह ! देखो तो, ये पुस्तकें मानव-मस्तिष्क को कितना कष्ट पहुंचाती हैं ! आप कुछ कम पढ़ा करें और विश्राम किया करें अन्यथा रात्रि के समय इस प्रकार उठनेवाले मनोद्वेग बुरा प्रभाव डालेंगे।''

''मैं तुम्हारे साथ घर चलूंगा।'' डिम्सडेल ने कहा।

जैसे कोई व्यक्ति भयानक स्वप्न देखकर उठे, उसी तरह हताश और निश्चेष्ट वह चिकित्सक के साथ चला गया।

अगला दिन छुट्टी का था और गिरजाघर में प्रार्थना होनी थी। उस दिन वहां उसने जो उपदेश दिया, उसके बारे में कहा गया था कि आज तक उसने कभी भी इतना भावपूर्ण, ओजस्वी तथा आध्यात्मिक भाषण नहीं



दिया। किन्तु जब वह मंच से नीचे उतरा, तो उसे सफेद दाढ़ीवाला सेक्सटन मिला जिसके हाथ में काला दस्ताना था, जिसे पादरी ने पहचान लिया कि वह उसका है।

सेक्सटन बोला, ''यह आज प्रातः उस दंडमंच पर मिला है, जहां अपराधियों को लोगों के सामने लज्जित करने का दण्ड दिया जाता है। मैं समझता हूं कि शैतान ने आपका उपहास करने के लिए वहां फेंक दिया था। किंतु वह नित्य की ही तरह अंधा और मूर्ख ही सिद्ध हुआ है। पवित्र हाथों को ढांपने की आवश्यकता नहीं होती।''

''तुम्हारा धन्यवाद, मेरे अच्छे मित्र !'' पादरी ने गम्भीरता तथा भयभीत हृदय से कहा। उसकी स्मरणशक्ति क्षीण हो गई थी कि उसने यही समझ लिया था कि रात की घटना स्वप्न थी, ''हां, यह दस्ताना मेरा ही प्रतीत होता है।''

''और क्योंकि शैतान ने इसे चुराने का प्रयत्न किया है, अतः आज के बाद आप बिना दस्ताने के ही रहा करें।'' सेक्सटन ने कठोर हंसी हंसते हुए कहा, ''परन्तु क्या आपने सुना है कि रात को एक बड़ा अक्षर आकाश पर दिखाई दिया था और हम समझते हैं कि वह किसी देवता का प्रतीक था, क्योंकि हमारा श्रेष्ठ गवर्नर विंथराप रात को देवताओं की कोटि में पहुंच गया है, अतः हम समझते हैं कि उसकी सूचना प्रकृति से मिलना उपयुक्त ही था।''

''नहीं !'' पादरी ने उत्तर दिया, ''मैंने नहीं सुना।''

## तेरह

उस रात डिम्सडेल से मिलने पर हेस्टर को उसकी दुःखद स्थिति देखकर बहुत चिन्ता हुई। पादरी का मानसिक संतुलन बिगड़ने लग गया था। उसे लोगों से छिपी हुई जिन घटनाओं का ज्ञान था, उनके आधार पर वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि डिम्सडेल के जीवन पर कोई

भयानक प्रयोग किया जा रहा है, जिसने उसकी शांति को नष्ट कर दिया है।

इस समय हेस्टर प्राइन की ठीक वैसी स्थिति नहीं रही थी जैसी उस लांछन की घटना के प्रारम्भिक दिनों में थी। कई वर्ष बीत गए, पर्ल की अवस्था अब सात वर्ष की थी।

विधाता ने इस बच्ची के रूप में हेस्टर को नारीत्व का पौधा सौंपा था, ताकि वह सभी प्रकार की कठिनाइयों के बीच उसे विकसित और पल्लवित करे। सभी कुछ उसके प्रतिकूल था। सम्पूर्ण संसार उसका शत्रु था। बच्ची की प्रकृति में भी कुछ गड़बड़ी थी, जिससे निरन्तर इस बात का पता लगता था कि उसके जन्म में ही कुछ अव्यवस्था है। मां की असंयत वासना से उसका प्रादुर्भाव हुआ था और प्रायः हेस्टर दुःखी होकर सोचती कि यदि वह नन्ही बच्ची पैदा ही न होती, तो उसमें भलाई होती या बुराई ?

'रक्तिम अक्षर' तो उसके दंड के लिए पर्याप्त नहीं था। उस रात डिम्सडेल से जो उसकी भेंट हुई उससे वह एक और ही विषय पर विचार करने लगी और वह समझने लगी कि उसके सामने एक ऐसा उद्देश्य है जिसकी उपलब्धि के लिए वह प्रयत्नशील हो सकती है और बलिदान कर सकती है। उसने अनुभव किया था कि पादरी असह्य विपत्ति में से गुजर रहा है अथवा उसके प्रहारों से परास्त हो चुका है।

कोई गुप्त शत्रु मित्र और सहायक के छद्मवेश में निरन्तर उसके साथ लगा रहता था और उसने अवसर पाकर डिम्सडेल की प्रकृति के मृदुल तन्तुओं को अस्तव्यस्त कर दिया था। हेस्टर के मन में तो अपने ही बारे में प्रायः यह प्रश्न उठता था कि क्या मैंने सत्य की अवहेलना की है? क्या मेरा साहस दुर्बल रहा है ? क्या मैं कर्तव्यपरायण नहीं रही और पादरी को ऐसी स्थिति में गिरने दिया जिससे किसी अच्छाई के स्थान पर बुराई की ही आशा थी। वह अपने मन को केवल यह कहकर सन्तोष देती थी कि अपनी विपत्ति से भी अधिक भयावह विपदा से वह उसे बचा न सकती थी और उसे रोजर चिलिंगवर्थ की छद्मता की योजना को ही अपनाना पड़ा



था। वर्षों के कठिन जीवन ने उसे इतना सुदृढ़ बना दिया था कि वह अपने-आपको रोजर चिलिंगवर्थ का मुकाबला करने के योग्य समझने लगी थी। उसका उस रात की बात याद आई जब रोजर चिलिंगवर्थ उसे जेल की कोठरी में मिले थे। उस समय लांछन और बदनामी से प्रपीड़ित उन्माद की सी स्थिति में उसने अपने आपको सर्वथा हताश पाया था। उसके पश्चात् जीवन-परीक्षा ने उसे ऊंचा उठाया था जबकि वह बूढ़ा आदमी प्रतिकार की कलुषित भावना से प्रताड़ित होकर उस गर्त में गिर चुका था जिसमें कभी हेस्टर ने अपने-आपको पाया था अथवा यह गिरावट उससे भी नीचे रसातल की गहराई के समान थी।

हेस्टर ने संकल्प किया कि वह अपने त्यक्त पति से मिलेगी और डिम्सडेल को उस चंगुल से छुड़ाने का प्रयत्न करेगी। ऐसे अवसर की अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। एक दिन सायंकाल के समय वह एकांत प्रदेश में पर्ल के साथ घूम रही थी। उसने देखा बूढ़ा चिकित्सक एक हाथ में टोकरी लिए हुए झुक-झुककर दूसरे हाथ से जड़ी-बूटियां इकट्ठी कर रहा था।

## चौदह

हेस्टर ने नन्ही पर्ल को सागर-तट पर पत्थरों और समुद्री झाड़ियों के साथ खेलने के लिए भेज दिया और स्वयं जड़ी-बूटियां एकत्र करने वाले व्यक्ति से कुछ बातें करने के लिए आगे बढ़ी।

"मैं आपसे एक बात कहना चाहती हूं," उसने कहा, "इस बात का हम दोनों से बहुत सम्बन्ध है।"

"ओह ! और ये मिस्ट्रेस हेस्टर हैं जो बूढ़े चिलिंगवर्थ से बात करना चाहती हैं।" झुके हुए चिकित्सक ने सीधा खड़े होते हुए कहा, "यह तो मेरे लिए हर्ष की बात होगी। मैं सभी से तुम्हारे सम्बन्ध में अच्छी बातें सुना करता हूं। कल ही एक योग्य दंडाधीश तुम्हारी बात कर रहा था और उसने मुझे चुपके से बताया कि तुम्हारे सम्बन्ध में परिषद् में प्रश्न पूछा गया

था कि तुम्हारी छाती से उस 'रक्तिम अक्षर' को उतार देने से समाज को हानि तो नहीं होगी। मुझे अपनी सौगन्ध हेस्टर, मैंने उस माननीय दंडाधीश से यही प्रार्थना की थी कि यह बात तुरन्त कर देनी चाहिए।''

''इस चिह्न को उतार देना दंडाधीशों के अधिकार में नहीं है।'' हेस्टर ने शान्त भाव से कहा, ''यदि मैं इससे मुक्त होने के योग्य हो गई तो यह स्वयं गिर पड़ेगा अथवा इसका स्वरूप ही बदल जाएगा और उससे कुछ और ही अर्थ समझे जाने लगेंगे।''

''तब तो ठीक है, यदि तुम्हें अच्छा लगता है तो इसे पहने रखो।'' वह बोला, ''अपनी सजावट की बात में नारी को अपनी इच्छा का ही पालन करना चाहिए। इसकी कढ़ाई भी तो सुन्दर हुई है और तुम्हारी छाती पर खूब जंचता भी है।''

इस बातचीत में निरन्तर हेस्टर उसकी ओर देखती रही। उसे यह देखकर बहुत दुःख और आश्चर्य हुआ कि गत सात वर्षों में उस व्यक्ति में बहुत परिवर्तन हो गया था।

इधर हेस्टर के वक्ष पर 'रक्तिम अक्षर' की धधकती ज्वाला थी। इस विनाश की वह अंशतः उत्तरदायी थी।

''तुम मेरे चेहरे में क्या देख रही हो ?'' चिकित्सक ने पूछा, ''तुम इस प्रकार क्यों घूर रही हो ?''

''कुछ ऐसी वस्तु देख रही हूं जिस पर मुझे रोना आता है।'' उसने उत्तर दिया, ''खैर, इसे रहने दो। मैं तो उस दुःखी व्यक्ति की बात करना चाहती हूं।''

''उसके बारे में क्या ?'' रोजर चिलिंगवर्थ ने बहुत उत्सुकता से पूछा। ऐसा प्रतीत होता था कि वह यह चर्चा करने का अवसर पाकर बहुत प्रसन्न हुआ था क्योंकि वह इस चर्चा के लिए हेस्टर को ही विश्वासपात्र समझता था। ''मैं सत्य को छिपाना नहीं चाहता, मिस्ट्रेस हेस्टर, मैं अभी उस महानुभाव की बात ही सोच रहा था। अतः बिना संकोच के बात करो; मैं उत्तर दूंगा।''

''जब पिछली बार हमारी बातचीत हुई थी,'' हेस्टर ने कहा, ''आज



से सात वर्ष पूर्व, तो तुमने हमारे आपस के पुराने सम्बन्ध को गुप्त रखने के बारे में सौगन्ध दिलाई थी क्योंकि उस व्यक्ति की ख्याति और जीवन तुम्हारे हाथों में था, अतः तुम्हारी आज्ञा के अनुसार मुझे मौन रहना पड़ा और मैं कुछ न कर सकी। किन्तु मैंने बहुत भूल की जो अपने आपको इस प्रकार बांधे रखा क्योंकि अन्य लोगों के प्रति अपने कर्तव्य के अतिरिक्त मेरा उस व्यक्ति के प्रति भी कुछ कर्तव्य था। मेरे मन में यह बात उठी कि तुम्हारे परामर्श को स्वीकार करके मैं अपने उस कर्तव्य से च्युत हो रही हूं। उस दिन से तुम जितने उसके समीप हो उतना कोई भी नहीं है। सोते-जागते तुम्हीं उसके पास रहते हो। तुम उसके विचारों की खोज करते हो, तुम उसके हृदय को कचोटते रहते हो। उसका जीवन तुम्हारी दया पर है। और तुम उसे घुला-घुलाकर मार रहे हो और फिर भी वह तुम्हें नहीं जानता। मैंने उस व्यक्ति के प्रति अपने कर्तव्य की अवहेलना की, जिसने मुझे सच्चे जीवन की दीक्षा दी थी।''

''तुम और कर ही क्या सकती थीं ?'' रोजर चिलिंगवर्थ ने पूछा, ''इस व्यक्ति की ओर मेरी अंगुली के संकेत-मात्र से उसको गिरजे के मंच से उतारकर जेल की कोठरी में फेंक दिया जाता और वहां से फांसी के तख्ते पर लटका दिया जाता।''

''यह कहीं अच्छा होता !'' हेस्टर प्राइन बोली।

''तो मैंने ही उस व्यक्ति के प्रति क्या बुराई की है ?'' रोजर ने पुनः पूछा, ''मैं तुम्हें सच बताता हूं हेस्टर, मैंने दुःखी पादरी की जितनी देखभाल की है, यदि किसी सम्राट की करता तो मुंहमांगे पैसे ले सकता था। यदि मैं उसकी सहायता न करता तो तुम लोगों ने जो अपराध किया था उसके दो ही वर्ष बाद वह वेदना की ज्वाला में जलकर भस्म हो जाता। उसकी आत्मा में वह शक्ति नहीं है जो 'रक्तिम अक्षर' से भाराक्रान्त होते हुए भी तुम्हारे अन्तस् में है। मैं रहस्य को खोल सकता था, परन्तु मैंने ऐसा नहीं किया। मैंने उसके लिए अनथक प्रयत्न किया है। मेरे ही कारण आज वह इस पृथ्वी पर चलता-फिरता और सांस लेता दिखाई देता है।''

''यह कहीं अच्छा होता कि वह तुरन्त मर जाता !'' प्राइन ने कहा।

"नारी तुम ठीक कहती हो !" रोजर चिलिंगवर्थ ने अपने हृदय की आग को अपनी आंखों में झलकाते हुए ऊंचे स्वर में कहा, "उसका तुरन्त मर जाना कहीं अच्छा था। शायद की किसी प्राणी ने कभी इतनी पीड़ा सही होगी जितनी इसके अन्तस् को साल रही है। वह अनुभव करता है कि मैं उसका घोर शत्रु हूं। वह यह समझता है कि कोई प्रभाव अभिशाप की तरह उस पर मंडरा रहा है। वह किसी आध्यात्मिक शक्ति से ही यह जानता था, क्योंकि ईश्वर ने उसके समान भावुकता किसी भी व्यक्ति को नहीं दी। वह जानता था कि किसी शत्रु का हाथ उसके हृदय को दबोच रहा है और वे हाथ मेरे ही थे जो वहां किसी अच्छाई के स्थान पर बुराई ढूंढ़ रहे थे। किन्तु वह नहीं जानता था कि मैं ही ऐसा कर रहा हूं। पादरियों में प्रायः जो अंधविश्वास पाया जाता है उसी के आधार पर वह समझता था कि शैतान ने उसे फांस रखा है और जो भयावह स्वप्नों तथा निराशापूर्ण भावों और पश्चात्ताप की आग में उसे जलाता रहता है। अतः उसने अनुभव किया कि वह विकराल काल के गाल में प्रवेश कर रहा है। किन्तु वह शैतान नहीं था वरन् निरन्तर उस पर मंडराने वाली मेरी छाया ही थी अर्थात् उस व्यक्ति की जिसके प्रति उसने घोर अनाचार किया था—जो प्रतिकार के विष के सहारे ही जी रहा था। निस्सन्देह वह गलत नहीं समझा। उसके पास शैतान ही था—एक नश्वर प्राणी, जिसमें कभी मानव-सुलभ हृदय था, जो अब अत्यधिक वेदना को अपने अन्तस् में संजोए शैतान बन चुका था।"

"क्या तुम उसे काफी दुःख नहीं पहुंचा चुके ?" हेस्टर ने चिकित्सक की आंखों में आंखें डालते हुए कहा, "क्या तुम उससे पूरा बदला नहीं ले चुके ?"

"नहीं ! नहीं !! उसने तो अपना ऋण बढ़ा दिया है।" चिकित्सक ने उत्तर दिया। उसकी आकृति से पाशविक चिह्न अब विलीन हो रहे थे, "हेस्टर, तुम्हें याद होगा कि नौ वर्ष पूर्व मैं क्या था। उन दिनों भी मेरी आयु अधेड़ थी, किन्तु मैं जीवन-भर सत्यशील, विचारवान, अध्ययनशील और शान्तिप्रिय रहा हूं। मैं पूर्ण निष्ठा से अपनी ज्ञानवृद्धि में संलग्न रहा हूं। मेरा लक्ष्य मानव-कल्याण की कामना था, मेरा जीवन निर्दोष और



शान्तिपूर्ण था। क्या तुम्हें यह सब स्मरण है ? तुम भले ही मुझे निष्ठुर समझती रहो, किन्तु मेरे मन में अपने लिए कोई इच्छा नहीं थी और मैं सदा दूसरों के लिए दया, सद्भावना और न्याय के विचार रखता था। भले ही उत्कट प्रेम की भावनाएं मुझमें न रही हों। तुम ही बताओ, क्या मैं ऐसा नहीं था ?"

"तुम ऐसे ही थे वरन् इससे भी अधिक।" हेस्टर ने उत्तर दिया।

"और अब मैं क्या हूं ?" उसने अपने पूर्ण पाप को अपने चेहरे पर लक्षित करते हुए और उससे नजरें मिलाते हुए पूछा, "मैं पहले ही तुम्हें बता चुका हूं—एक शैतान ! मुझे ऐसा किसने बना दिया ?"

"इसकी अपराधिनी मैं हूं !" हेस्टर कांपती हुई बोली, "यह दोष मेरा है, उसका नहीं। तुमने अपना बदला मुझसे क्यों नहीं लिया ?"

"मैंने तुम्हें तुम्हारे, 'रक्तिम अक्षर' पर छोड़ दिया था।" रोजर चिलिंगवर्थ ने उत्तर दिया, "यदि उससे मेरा बदला नहीं चुकाया जा सका तो मैं इससे अधिक कुछ भी न कर सकता था।" उसने हंसते हुए अपनी अंगुली 'रक्तिम अक्षर' पर रख दी।

"इसने तुम्हारा पूरा बदला चुकाया है।" प्राइन ने उत्तर दिया।

"मैंने भी यही समझा था," चिकित्सक बोला, "और अब तुम इस व्यक्ति के बारे में मुझसे क्या चाहती हो ?"

"मुझे अवश्य रहस्य खोल देना चाहिए," हेस्टर ने दृढ़ भाव से उत्तर दिया, "ताकि वह तुम्हारा वास्तविक रूप जान सके। इसका क्या परिणाम निकलेगा मैं नहीं जानती, किन्तु मुझे उसके प्रति अपना यह कर्तव्य पालन करना ही होगा जो कि मुझे बहुत पहले कर देना चाहिए था, क्योंकि मेरे इस दोष के कारण ही वह विपत्ति के गर्त में गिर रहा है। जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि उसकी ख्याति नष्ट हो जाएगी, और बहुत संभव है कि जीवन नष्ट हो जाएगा, वह सब तुम्हारे हाथ में है। 'रक्तिम अक्षर' ने मेरे जीवन को अनुशासित बनाया है और मुझे मेरी आत्मा को कचोटनेवाले सत्य का पाठ पढ़ाया है जिसके कारण मैं इस बात में कोई लाभ नहीं देखती कि वह ऐसा खोखला जीवन जीता रहे और मैं उसके लिए

तुमसे भीख मांगूं। तुम जैसा चाहो उससे कहा। उसके लिए—मेरे लिए—तुम्हारे लिए यहां कुछ भी तो अच्छा नहीं ! नन्हीं पर्ल के लिए भी तो कुछ नहीं है ! इस भयावह अन्धकार में हमें कुछ भी तो मार्ग नहीं सूझता !''

''नारी, मुझे तुम पर दया आती है।'' रोजर चिलिंगवर्थ ने प्रशंसा के भाव से रोमांचित होते हुए कहा, क्योंकि उसकी निराशा की इस अभिव्यक्ति में भी एक ओजस्विता थी।

''तुम महान गुणों की स्वामिनी हो। कहीं तुम्हें मेरे प्यार की अपेक्षा श्रेष्ठ प्रेम मिलता तो तुम इस कलंक के गर्त में न गिरतीं। तुम्हारी प्रकृति के गुणों का सदुपयोग नहीं हो सका। इसी से मुझे तुम पर दया आती है।''

''और मुझे तुम पर दया आती है,'' हेस्टर ने उत्तर दिया, ''क्योंकि घृणा ने तुम्हारे जैसे विवेकशील और न्यायप्रिय मनुष्य को शैतान बना दिया है। क्या तुम इस घृणा को मन से निकालकर पुनः मानव बनोगे ? उसके लिए न सही वरन् अपने ही लिए। उसे क्षमा कर दो और शेष दण्ड उस महान शक्ति पर छोड़ दो जो देने की अधिकारिणी है। मैंने अभी बताया है कि पाप की गहरी छाया में घूमते और ठोकरें खाते हुए उसके लिए, मेरे लिए और तुम्हारे लिए कोई भी मार्ग-प्रदर्शन का साधन नहीं है। क्या यह बात नहीं ? तुम्हें इसमें कुछ अच्छाई भले ही दिखाई देती हो क्योंकि तुम्हारे साथ घोर अन्याय हुआ है, किन्तु अच्छा होता यदि तुममें इसे क्षमा कर देने की क्षमता होती। क्या तुम अपने इस अधिकार को छोड़ दोगे ? क्या तुम उससे मिलनेवाले अमूल्य लाभ को तिलांजलि दे दोगे ?''

''शांत हो जाओ हेस्टर, शांत !'' बूढ़े व्यक्ति ने क्षोभ से कहा, ''मुझे क्षमा का अधिकार नहीं मिला। मुझमे ऐसी शक्ति ही नहीं जिसकी तुम बात कहती हो। मेरा पुराना विश्वास पुनः मेरे अन्तस् में पैदा हो रहा है और मैं अनुभव कर रहा हूं कि हम क्या कर रहे हैं और हम पीड़ित क्यों हैं ? तुमने अपनी एक भूल से पाप को जन्म दिया और फिर सभी कुछ बाध्य स्थिति में होता रहा। तो भी मेरे प्रति जो अन्याय हुआ है उसमें पाप नहीं,



एक भुलावा है, न ही मैं शैतान के समान हूं और न ही वैसा कृत्य करता हूं। यह स्थिति तो हमारे लिए भाग्य बन गई है। पाप का यह पौधा पल्लवित होता रहे, तुम स्वतन्त्र हो, जैसे चाहो उस व्यक्ति के लिए करो।'' उसने हाथ हिलाया और पुनः जड़ी-बूटियों को इकट्ठा करने लग गया।

## पंद्रह

इस प्रकार रोजर चिलिंगवर्थ हेस्टर से जुदा हुआ और भूमि पर झुके-झुके कुछ ढूंढ़ता रहा। कहीं कोई जड़ी-बूटी उठाता है और कहीं जड़ निकालता और उसे टोकरी में डाल लेता।

''यह पाप हो अथवा न हो'', हेस्टर ने उसी की ओर दृष्टि लगाए कटु भाव से कहा, ''मैं इस व्यक्ति से अत्यन्त घृणा करती हूं।''

''हां, मैं उससे घृणा ही करती हूं !'' हेस्टर ने और भी कटु भाव से दोहराया, ''उसने मुझे धोखा दिया है। मेरे कृत्य की अपेक्षा मेरे प्रति अधिक अन्याय किया है।''

इन थोड़े क्षणों में वह रोजर चिलिंगवर्थ की विकृत आकृति को देखती रही। उसे मन पर गहरे प्रकाश की किरणें पड़ती हुई अनुभव हुई और उसे अन्तस् की उस स्थिति का ज्ञान हुआ जिसे वह कभी भी जान नहीं सकी थी।

जब वह चला गया तो हेस्टर ने बच्ची को पुकारा, ''पर्ल, नन्ही पर्ल, तुम कहां हो ?'' पर्ल कभी भी उत्साहहीन नहीं होती थी। इसलिए जब उसकी मां जड़ी-बूटी एकत्र करनेवाले चिकित्सक से बातचीत कर रही थी उतने समय में नन्हीं पर्ल ने अपने लिए आमोद के अनेक साधन जुटा लिए थे।

''बच्ची, क्या तुम जानती हो कि तुम्हारी मां इस अक्षर को क्यों पहनती है ?'' नन्ही पर्ल ने खेल-खेल में ही हरी घास का 'ए' अक्षर अपनी छाती पर लगा लिया था।

''निश्चय ही मैं जानती हूं।'' पर्ल ने प्रसन्नता से मां की ओर देखते

हुए उत्तर दिया, ''जिस कारण पादरी अपना हाथ हृदय पर रखता है ठीक वही कारण इसका है।''

''और वह कारण क्या है ?'' हेस्टर ने बच्ची को अनुपयुक्त बात पर तनिक मुसकराते हुए पूछा। किन्तु तभी एक अन्य विचार उसके मन पर उभर आया और उसका रंग पीला पड़ गया, ''इस अक्षर का सिवाय मेरे हृदय के और किसी से कोई सम्बन्ध हो सकता है ?''

''नहीं मां, मैं तो जो कुछ जानती हूं मैंने बता दिया है।'' पर्ल ने अपने स्वभाव के प्रतिकूल गम्भीरता से उत्तर दिया, ''तुम जिस बूढ़े आदमी से बातें कर रही थीं उससे पूछो न। किन्तु मां तुम ही बताओ कि इस अक्षर का क्या अभिप्राय है ? तुम इसे छाती पर क्यों लगाए रखती हो और पादरी अपने हृदय पर क्यों हाथ रखता है ?''

पर्ल की यह स्वाभाविक आदत थी कि वह 'रक्तिम अक्षर' के चिह्न की ओर प्रवृत्त रहती थी। शैशवकाल से ही 'रक्तिम अक्षर' उसके जीवन का लक्षण बन चुका था। हेस्टर ने कई बार विचार किया था कि विधाता अवश्य न्याय करता है और अपराधी को दण्ड देता है।

''इस अक्षर का क्या अभिप्राय है मां ? तुम इसे क्यों पहनती हो ? पादरी अपने हृदय पर हाथ क्यों रखता है ?''

'मैं क्या कहूं !' हेस्टर ने मन ही मन सोचा, 'यदि बच्ची की सहानुभूति पाने के लिए इतना भारी मूल्य चुकाना होगा, तो मैं इससे वंचित ही रहूंगी।'

''मूर्ख बच्ची !'' उसने कहा, ''तुम ये कैसे प्रश्न कर रही हो ? इस संसार में बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनके बारे में बच्चों को प्रश्न नहीं पूछने चाहिए। मुझे पादरी के हृदय के बारे में क्या पता और यह 'रक्तिम अक्षर' मैं इसलिए पहनती हूं कि यह सुनहरे धागों से कढ़ा हुआ है।''

''मां !'' उसने पूछा, 'रक्तिम अक्षर' का क्या अर्थ है ?''

अगली सुबह बच्ची के जागने का पता ही तब लगा जब उसने तकिये से सिर उठाते ही एक ऐसा प्रश्न पूछा जो उस 'रक्तिम अक्षर' के अर्थ की जिज्ञासा से न जाने कैसे सम्बद्ध था।



''मां ! मां !! पादरी अपने हृदय पर हाथ क्यों रखता है ?''

''जबान बन्द रखो शरारती लड़की !'' मां ने उत्तर दिया, ''मुझे तंग न करो, नहीं तो मैं तुम्हें अंधेरी कोठरी में बन्द कर दूंगी।''

# सोलह

हेस्टर प्राइन ने यह निश्चय बनाये रखा कि वह श्री डिम्सडेल को उस व्यक्ति का वास्तविक स्वरूप अवश्य बता देगी जो उसका मित्र बना बैठा है, चाहे उससे पादरी की व्यथा बढ़ ही जाए अथवा उसका कितना भी बुरा परिणाम क्यों न निकले।

आखिर एक दिन वह एक बीमार व्यक्ति के घर गई जहां उसे पता लगा कि श्री डिम्सडेल को वहां प्रार्थना करने के लिए बुलाया गया था और अब वे अपासल इलियट में ईसाई धर्म स्वीकार करनेवाले इंडियनों के पास गए हैं और वहां से वे किसी समय लौटेंगे। अतः अगले दिन हेस्टर ने पर्ल को साथ लिया, जो ऐसे सभी कामों में उसके साथ रहती थी, और वह जंगल की ओर चल पड़ी।

बातें करते-करते वे दोनों घने जंगल में दूर चली गईं। वहां एक स्रोत बह रहा था जिसके तल में भी पत्ते बिखरे हुए दिखाई दे रहे थे। उसकी कलकल ध्वनि में एक शांति और उदासी भरी हुई थी।

''हे सरिते !...'' झरझर ध्वनि को कुछ क्षण सुनने के पश्चात् पर्ल उच्च स्वर से बोली, ''तुम इतनी दुःखी क्यों हो ? साहस करो—सदा उच्छ्वास न भरती रहा करो और न ही यूं बड़बड़ाया करो।''

''यह नन्हा व्याकुल स्रोत क्या कहता है मां ?'' उसने पूछा।

''यदि तुम्हारे हृदय में कोई दुःख छिपा हुआ है तो यह स्रोत भी तुम्हें अपने दुःख की गाथा सुना देगा।'' मां ने उत्तर दिया, ''यह मुझे तो मेरे ही दुःख की कहानी सुना रहा है, किन्तु पर्ल, मैं पग-पग पर किसीके पांव की आहट सुन रही हूं और शाखाओं को इधर-उधर हटाने की सरसराहट

भी तो हो ही रही है। मैं चाहती हूं कि तुम यहां खेल में लगी रहो और मैं उस आनेवाले से कुछ बातें कर लूं।''

''क्या यह ब्लैकमैन है मां ?'' पर्ल ने पूछा।

''जाओ बच्ची, खेलो।'' मां ने पुनः कहा, ''परन्तु जंगल में दूर न चली जाना और ध्यान रखना कि ज्योंही मैं आवाज दूं, तुरन्त यहां आना होगा।''

''अच्छा मां।'' पर्ल ने उत्तर दिया, ''परन्तु मां, यदि यह ब्लैकमैन है तो मुझे एक क्षण ठहरकर देखने दो कि बगल में बड़ी पुस्तक लिए वह कैसा लगता है।''

''चली जाओ मूर्ख बच्ची।'' मां ने अधीर होकर कहा, ''यह ब्लैकमैन नहीं है। क्या तुम उन वृक्षों में से नहीं देख सकती कि यह पादरी है।''

''ओह, यह ठीक है !'' बच्ची ने कहा, ''और देखो मां, उसने अपना हाथ हृदय पर रखा हुआ है। क्या इसी कारण वह हाथ वहां पर रखता है कि जब उसने पुस्तक में अपना नाम लिखा था तो ब्लैकमैन ने अपना चिह्न उसके हृदय पर अंकित कर दिया था। परन्तु मां, यह इस चिह्न को तुम्हारी तरह छाती पर क्यों नही पहनता ?''

''अब चली भी जाओ ! मुझे इस तरह तंग न करो,'' हेस्टर प्राइन ने चिल्लाकर कहा, ''किन्तु बहुत दूर भी चली न जाना। ऐसे स्थान पर खेलना जहां तुम्हें स्रोत का कलकल नाद सुनाई न दे।''

बच्ची गाती हुई और स्रोत की शोकपूर्ण ध्वनि में अपनी ध्वनि मिलाती हुई प्रवाह के साथ-साथ चली गई।

जब शरारती बच्ची चली गई तो हेस्टर प्राइन ने वन में आनेवाले मार्ग की ओर एक-दो कदम बढ़ाए। उसने देखा कि पादरी अपनी छड़ी पर झुके हुए एकाकी उस पथ पर चला आ रहा था।

हेस्टर को आदरणीय श्री डिम्सडेल में किसी अन्तर्वेदना का आभास नहीं मिला। उसका ध्यान केवल इस ओर गया कि क्या नन्हीं पर्ल के कथनानुसार पादरी ने अपना हाथ हृदय के ऊपर रखा हुआ था ?



# सत्रह

यद्यपि पादरी धीरे-धीरे चल रहा था किन्तु हेस्टर को साहस बटोरकर उसे पुकारने में इतनी देर लगी कि इतने में वह काफी दूर जा चुका था और तब कहीं आखिर वह उसे पुकार सकी।

''आर्थर डिम्सडेल।'' पहले धीमी और फिर ऊंची आवाज में वह बोली, ''आर्थर डिम्सडेल !''

''हेस्टर...हेस्टर प्राइन...क्या तुम हो ?'' उसने कहा, ''क्या मैं तुम्हें सप्राण देख रहा हूं ?''

''हां,'' उसने उत्तर दिया, ''इन सात वर्षों का ऐसा जीवन वहन करने पर भी मैं जीवित हूं। और तुम आर्थर डिम्सडेल, क्या तुम अभी तक जीवित हो ?''

भय से विकम्पित और घबराते हुए उसने धीरे से अपना मृतक का-सा ठंडा हाथ हेस्टर प्राइन के हाथ में दे दिया जो उतना ही ठंडा था। इस शीतल स्पर्श से इस मिलन की समस्त शुष्कता दूर हो गई। इस समय उन्हें यह अनुभव हुआ कि दोनों एक ही क्षेत्र के वासी हैं।

दोनों में से एक ने भी कोई शब्द नहीं कहा—एक ने दूसरे को मार्ग दिखाया किन्तु अव्यक्त भाव से परस्पर सहमति प्रकट थी—और वे दोनों उसी ओर जंगल की घनी छाया में चले गए जिधर से हेस्टर आई थी और वहां उसी काई के ढेर पर बैठ गए जहां पहले हेस्टर तथा पर्ल बैठी थीं। जब दोनों में बोलने की कुछ हिम्मत बनी तो उन्होंने दो परिचित व्यक्तियों की तरह अंधकारमय आकाश में आनेवाले तूफान और एक-दूसरे के स्वास्थ्य के बारे में साधारण बातचीत की। तत्पश्चात् बातचीत आगे बढ़ी और उन्होंने झिझकते हुए उन विषयों की चर्चा की जो उनके अन्तस् में छिपे हुए थे। भाग्य और परिस्थितियों ने उन्हें जुदा कर दिया था और वे कामना करते थे कि कोई मामूली-सी बात उनके मिलन का मार्ग खोल दे और वे अपने आंतरिक विचारों को एक-दूसरे पर खोल दें।

थोड़ी देर बाद पादरी ने हेस्टर पर आंखें गड़ा दीं।

“हेस्टर !” उसने कहा, “क्या तुम्हें शांति मिल गई है ?”

नीचे आंखें किए अपनी छाती की ओर देखते हुए वह अत्यन्त रूखेपन से मुसकरा दी।

“और क्या तुमने शांति पा ली है ?” उसने पूछा।

“नहीं, कुछ भी नहीं, मुझे तो केवल निराशा ही मिली है।” उसने उत्तर दिया, “मैं जैसा हूं और जैसा मेरा जीवन है इससे मुझे और मिल भी क्या सकता है ? मुझे ईश्वर पर विश्वास न होता—मैं अपनी आवाज न सुन सकता, मैं ऐसा धूर्त होता कि मेरा स्वभाव, मेरी प्रवृत्तियां पत्थर की तरह कठोर हो गई होतीं तो मुझे बहुत पहले शांति मिल गई होती। प्रत्युत यह कहना चाहिए कि मैं शांति से कभी वंचित भी न होता। परन्तु जैसी मेरी स्थिति है, जो मुझमें श्रेष्ठता है, ईश्वर ने जो मुझे सर्वोत्तम गुण प्रदान किए हैं वही मेरे लिए आध्यात्मिक व्यथा का कारण बन गए हैं। हेस्टर, मैं अत्यन्त दुःखी व्यक्ति हूं?”

“लोग तुम्हारा सम्मान करते हैं,” हेस्टर ने कहा, “और तुम भी निश्चय ही उनका भला करते हो। क्या इससे भी तुम्हें तनिक संतोष प्राप्त नहीं होता ?”

“हेस्टर, उससे तो मैं और भी दुःखी होता हूं।” पादरी ने कटु मुसकान के साथ उत्तर दिया, “ऐसा प्रतीत होता है कि मैं भलाई करता हूं किन्तु मुझे उसमें कोई विश्वास नहीं है। यह तो केवल भुलावा है। मेरी विनष्ट आत्मा भला किसी के लिए क्या कर सकती है !...एक दूषित आत्मा उन्हें क्या पवित्र कर सकती है ? और यह कहीं अच्छा होता कि लोग मेरा आदर और सम्मान करने की बजाय मुझसे घृणा करने लग जाते। हेस्टर, क्या तुम इसमें मेरे संतोष की कल्पना नहीं करोगी कि मैं जिस समय मंच पर खड़ा होऊं और असंख्य लोगों की दृष्टि मेरे चेहरे पर ईश्वरीय प्रकाश डालने के लिए लगी हुई हो—सत्य के आकांक्षी लोग मेरे शब्दों को देववाणी की तरह सुन रहे हों—और तब वे मेरे अन्तस् में झांककर देखें कि जिसकी वे पूजा करते हैं उसका हृदय काला और उसकी आत्मा दूषित है। मैं वस्तुतः क्या हूं और क्या दिखाई देता हूं, इसमें इतना अन्तर है कि मेरा हृदय कराह उठता है और तब मैं मन ही



में कटुता को दबाकर हंसता हूं और शैतान इस पर प्रसन्न होता है।”

“तुम अपने प्रति अन्याय कर रहे हो।” हेस्टर ने विनम्र भाव से कहा, “तुमने अत्यधिक प्रायश्चित्त कर लिया है जिसके परिणामस्वरूप तुम बहुत समय से पाप से मुक्त हो चुके हो। इस समय तुम्हारा जीवन उतना ही पवित्र है जितना कि लोगों को दिखाई देता है। तुमने जो कुछ कार्य किया है क्या उसमें निहित प्रायश्चित का कुछ अभिप्राय नहीं है ? अतः क्यों तुम्हें शांति नहीं मिलती ?”

“नहीं हेस्टर, नहीं,” पादरी ने उत्तर दिया, “मेरे भलाई के कार्यों में कोई सार नहीं, इनसे मेरा कल्याण नहीं हो सकता। मैंने पश्चाताप तो बहुत किया है किन्तु प्रायश्चित्त नहीं कर पाया। यदि प्रायश्चित कर पाता तो मैं इस पवित्रता के झूठे वेश को बहुत पहले उतार फेंकता और लोगों को अपना वह स्वरूप दिखा देता जिसे वे ईश्वरीय न्याय के दिन देखेंगे। हेस्टर, मुझसे तुम ही सौभाग्यशाली हो जो खुले आम इस ‘रक्तिम अक्षर’ को अपनी छाती पर लगाए चलती हो। मेरा पाप तो मुझे अन्दर-ही-अन्दर घुला रहा है। तुम नहीं जान सकतीं कि सात वर्ष तक लोगों को धोखा देने की असह्य व्यथा सहने के पश्चात् मेरे वास्तविक स्वरूप को जाननेवाले से मिलकर मुझे कितनी प्रसन्नता हो रही है। मेरा एक भी मित्र होता या कि मेरा कोई घोर शत्रु भी होता जिसके सामने मैं, लोगों से अपनी प्रशंसा की प्रतारणा से पीड़ित होकर, प्रतिदिन अपने पाप की गाथा सुना करता और उसे बता सकता कि मैं कितना पतित हूं, तो उससे मेरी आत्मा को पुनर्जीवन मिलता। केवल सत्य ही मेरी रक्षा कर सकता है किन्तु अब तो मेरा व्यवहार झूठ, धोखे और कपट से परिपूर्ण है।”

हेस्टर प्राइन उसके चेहरे की ओर देखती रही किन्तु उसे कहने की हिम्मत न हुई। चिरकाल से बंधे हुए भावों को वह ऐसे शब्दों में प्रस्तुत कर रहा था जिनसे हेस्टर को यह बात बताने का अवसर मिल गया जो वह कहना चाहती थी। उसने अपने भय पर काबू पाते हुए कहा, “जैसे मित्र की तुम कामना करते हो, वह तो तुम्हारे पास है,” वह बोली, “जिसके सामने तुम अपने पाप पर आंसू बहा सकते हो...जो पाप में तुम्हारा सहभागी

से दूर रहना चाहिए।''

''यह तो मृत्यु से बुरा है,'' पादरी ने उत्तर दिया, ''किन्तु इससे बच भी कैसे सकता हूं। मेरे सामने कोई मार्ग भी तो नहीं। क्या मैं इन्हीं सूखे पत्तों पर पुनः लेट जाऊं जहां तुमने बताया था कि वह कौन है ? क्या मैं यहीं धंस जाऊं और मृत्यु की मधुर गोद में चला जाऊं ?''

''उफ ! तुम कितने विपत्तिग्रस्त हो !'' हेस्टर ने कहा और उसकी आंखों से आंसुओं की अविरल धारा बहने लगी, ''क्या तुम इसी दुर्बलता के कारण मर जाओगे ? क्या कुछ और कारण नहीं ?''

''विधाता ने मुझे यही दण्ड दिया है।'' आत्मप्रपीड़ित पादरी ने उत्तर दिया, ''यह दंड इतना कठोर है कि मेरे लिए इसके साथ संघर्ष करना असंभव है।''

''ईश्वर तुम पर दया करेगा।'' हेस्टर बोली, ''यदि तुमने उसको प्राप्त करने की थोड़ी-सी भी शक्ति का परिचय दिया।''

''तो उस शक्ति का परिचय मेरे लिए तुम दो,'' वह बोला, ''मुझे परामर्श दो कि मैं क्या करूं।''

''क्या यह विश्व इतना छोटा है ?'' हेस्टर ने अपनी गहरी दृष्टि पादरी पर गड़ाते हुए तथा उसकी चिन्तित आत्मा पर एक चुम्बकीय प्रभाव डालते हुए कहा, ''क्या सारा विश्व इसी बस्ती में ही बसा हुआ है, जो कि कुछ ही समय पहले एक मरुभूमि थी ? वन की यह पगडंडी किधर जाती है ? तुम कहोगे कि यह वापस बस्ती को जा रही है। किन्तु यह दूर, बहुत दूर घने जंगलों में जा रही है, जहां के वृक्षों के पत्तों ने गोरी जाति के लोगों को देखा तक नहीं है। बहुत दूर नहीं, कुछ ही मील चलने पर तुम स्वतन्त्र हो जाओगे और इस संसार से, जिसने तुम्हें विपत्ति दी है, उससे सर्वथा मुक्त हो जाओगे—जहां तुम अब भी प्रसन्न रह सकते हो। क्या इस असीम जंगल में इतनी छाया नहीं कि तुम्हारे हृदय को रोजर चिलिंगवर्थ की दृष्टि से छिपा ले ?''

''हां हेस्टर, किन्तु मेरा हृदय भूमि पर पड़े इन पत्तों के नीचे ही छिप सकता है।'' पादरी ने एक दुःखद मुसकान के साथ उत्तर दिया।

''तो फिर इस अपार सागर का लम्बा मार्ग है।'' हेस्टर ने पुनः बात



जारी रखी, ''इसी मार्ग से तुम यहां आए थे। अब यदि चाहो तो यह तुम्हें वापस पहुंचा सकता है। वहां अपने ही देश में, किसी दूरस्थ गांव में या लंदन के विशाल नगर में—जर्मनी, फ्रांस या इटली में तुम उस व्यक्ति से दूर कहीं जाकर रह सकते हो, और तुम्हें इन कठोर स्वभाव के लोगों और उनके भावों से क्या करना है ! उन्होंने तो तुम्हारे सद्गुणों को बहुत समय से एक बन्धन में बांध रखा है।''

''नहीं ! ऐसा नहीं हो सकता।'' पादरी ने मानो स्वप्न से जागते हुए कहा, ''मुझमें कहीं भी जाने की शक्ति नहीं है। मैं इतना पापी और हीन हूं कि मेरे लिए कोई भी स्थान नहीं और यह मैं कभी सोच भी नहीं सकता। विधाता ने मुझे जीवनयापन के लिए जहां भेजा है, मेरे लिए उसके अतिरिक्त भी क्या कोई स्थान हो सकता है ! भले ही मेरी आत्मा विनष्ट हो चुकी है, किन्तु मैं यथाशक्ति अन्य आत्माओं के उद्धार के लिए प्रयास करता रहूंगा। भले ही मैं विश्वासघाती प्रहरी हूं, किन्तु मुझे जिस स्थान पर नियुक्त किया गया है, वहां से मैं हटूंगा नहीं। यद्यपि मैं जानता हूं कि आखिर विधाता मेरे अपराध के दण्डस्वरूप मुझे मृत्यु तथा अपमान देनेवाला है।''

''तुम विपत्ति से भाराक्रान्त इन सात वर्षों में सर्वथा विनष्ट हो चुके हो।'' हेस्टर ने उसी की आन्तरिक शक्ति से उसे उत्साहित करने का संकल्प करते हुए कहा, ''किन्तु तुम यह सब यहां छोड़ जाओगे—इस वन के मार्ग पर बढ़ते हुए वह सब तुम्हारे मार्ग की बाधा नहीं बनेगा, न ही समुद्र के मार्ग में तुम्हारे जहाज का बोझ ही बनेगा। तुम इस विनाश को यहीं रहने दो, जहां यह तुम्हें मिला है। अब इसमें अधिक उलझे न रहो। नया जीवन आरम्भ करो। एक परीक्षा में विफल होने पर क्या तुमने सफलता की आशा ही छोड़ दी है ? ऐसा नहीं ! भविष्य के गर्भ में अभी और परीक्षाएं तथा सफलताएं तुम्हारे लिए हैं। तुम्हारे लिए भी हर्षोल्लास है। अभी तुम्हें अनेक कल्याणकारी कार्य करने हैं। इस मिथ्या जीवन को छोड़कर सच्चे जीवन को अपना लो। यदि तुम्हारी आत्मा इस महान उद्देश्य के लिए तैयार हो, तो चलो—रेड इंडियनों का पथ-प्रदर्शन करो। उन्हें सभ्यता तथा संस्कृति प्रदान करो, उनके शिक्षक तथा पैगम्बर बनो, अथवा जैसी कि तुम्हारी प्रकृति

है–तुम सभ्य जगत् में सर्वविख्यात विद्वानों और प्रतिभाशाली लोगों में अपना स्थान प्राप्त करो। उपदेश करो, लिखो, काम करो–कुछ भी करो, किन्तु लेटे-लेटे मृत्यु को बुलावा न दो। आर्थर डिम्सडेल का नाम छोड़कर कोई और महान नाम ग्रहण करो, जिसे तुम अन्यथा कभी भी भय तथा लज्जा के बिना ग्रहण नहीं कर सकते। जो व्यथा तुम्हारे जीवन को घुन की तरह खा रही है, जिसने तुम्हारी इच्छा और प्रकृति को निर्बल बना दिया है और जो तुम्हें इतना निःशक्त कर देगी कि तुम पश्चात्ताप भी न कर सकोगे, तुम्हें उस व्यथा में यहां तो एक दिन भी और नहीं बिताना चाहिए।''

''हेस्टर !'' आर्थर डिम्सडेल चिल्लाया। उसकी आंखों में उत्साह का एक प्रखर तेज, जिसे हेस्टर ने प्रज्वलित किया था, देदीप्यमान हुआ और पुनः विलीन हो गया, ''तुम उस व्यक्ति से दौड़ने को कह रही हो जिसके घुटने टूट चुके हैं। मुझे तो यहीं मरना होगा। मुझमें इतनी शक्ति अथवा साहस नहीं रहा कि मैं इस विस्तृत, विचित्र और दुर्गम जगत् में एकाकी घूम सकूं।''

यह हताश आत्मा की निश्चित अभिव्यक्ति थी। उसमें उस भाग्य को अपनाने की भी शक्ति नहीं थी जो उसके लिए सुलभ था।

उसने पुनः कहा :

''एकाकी नहीं ! हेस्टर।''

''तुम अकेले न जाओ।''

हेस्टर ने गहरी सांस लेते हुए कहा।

इसी में सब कुछ निहित था।

## अट्ठारह

आर्थर डिम्सडेल ने हेस्टर के चेहरे की ओर देखा। उसकी दृष्टि में आशा और हर्ष के प्रकाश के साथ भय की एक रेखा भी थी, क्योंकि अभी उसने एक ऐसी बात की ओर स्पष्ट संकेत करने का साहस किया था, जिसे कहने की हिम्मत उसमें नहीं थी।



''तो तुम जाओगे !'' हेस्टर ने उस समय कहा जिस समय पादरी की दृष्टि उससे मिली।

''क्या मैं पुनः हर्ष का अनुभव कर रहा हूं ?'' उसने अपने ऊपर अविश्वास करते हुए पूछा, ''मैं तो समझने लगा था कि मेरे अन्तस् में करुणा के अंकुर ही विनष्ट हो चुके हैं। हेस्टर ! तुम तो मेरे लिए देवता के समान हो। मैंने तो समझा कि मैंने अपने इस कलुषित तथा उत्पीड़ित शरीर को पत्तों पर ही फेंक दिया है। किन्तु मैं तो नवजीवन पाकर उठ खड़ा हुआ हूं और जिस विधाता ने मुझ पर दया की है, उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए मुझे नवचेतना, नवस्फूर्ति और नई शक्ति मिल गई है। ऐसा हमें पहले क्यों नहीं सूझा।''

''रहने दो। गुजरी बातों से क्या लाभ !'' हेस्टर ने उत्तर दिया, ''भूत तो विगत हुआ। देखो, मैं इस चिह्न के साथ ही बीते काल को भी विनष्ट कर रही हूं और इसे ऐसा बना रही हूं कि जैसे कभी इसका अस्तित्व ही न रहा हो।''

इतना कह उसने 'रक्तिम अक्षर' को छाती पर से खोला और थोड़ी दूर शुष्क पत्तों पर फेंक दिया। वह रहस्यपूर्ण चिह्न झरने के तट पर जा गिरा।

प्रेम चाहे नवजात हो या अन्तस् में चिरकाल से छिपी गहन भावनाओं से प्रेरित हो, उससे हृदय में एक उज्ज्वल प्रकाश का प्रादुर्भाव हो जाता है और अखिल विश्व उस प्रकाश से प्रकाशमान हो जाता है। यदि अब भी वन में उदासी छाई होती, तो हेस्टर और आर्थर डिम्सडेल की दृष्टि में तो प्रकृति का प्रसन्न वदन ही दिखाई देता।

हेस्टर ने उसकी ओर देखा और उसे रोमांच हो आया।

''तुम पर्ल को तो जानते ही हो,'' उसने कहा, ''हमारी नन्ही पर्ल–तुमने उसे देखा है। हां, मुझे याद है, किन्तु अब तुम उसे एक अन्य दृष्टि से देखोगे। वह कितनी विचित्र बच्ची है ! मैं तो उसे समझ नहीं सकती, पर तुम उसे अवश्य प्यार करोगे। मुझे भी तो बहुत प्रिय है। मुझे परामर्श दो कि उसका क्या करूं।''

"क्या तुम समझती हो कि वह बच्ची मेरे बारे में जानकर प्रसन्न होगी ?" पादरी ने कुछ घबराहट से कहा, "मैं प्रायः बच्चों से घबराता हूं, क्योंकि वे मेरे प्रति अविश्वास प्रकट करते हैं। मेरे साथ हिलमिल कर नहीं बैठते। मुझे तो नन्ही पर्ल से भी घबराहट होती है।"

"आह ! कितनी दुःखद बात है यह !" मां ने उत्तर दिया, "किन्तु वह तुम्हें जरूर प्यार करेगी और तुम भी उससे प्यार करोगे। वह दूर नहीं है। मैं उसे अभी पुकारती हूं—पर्ल ! पर्ल !"

"मुझे बच्ची दिखाई दे रही है," पादरी ने कहा, "वह वहां धूप में झरने के उस पार काफी दूर खड़ी है। तो क्या तुम समझती हो कि बच्ची मुझसे प्यार करेगी ?"

हेस्टर मुसकराई और उसने पुनः पर्ल को पुकारा, जो कि, जैसा पादरी ने बताया था, थोड़ी ही दूर वृक्षों की शाखाओं में से छनकर आती हुई धूप में खेल रही थी।

मां घंटा-भर पादरी के पास बैठी बातें करती रही थी, किन्तु पर्ल को अपने खेलों में मस्त रहने के कारण यह लम्बा समय कुछ भी नहीं अखरा था।

उसने पादरी को देख लिया था इसलिए उसकी गति धीमी पड़ गई थी।

## उन्नीस

"तुम अवश्य ही उसे प्यार करोगे," हेस्टर ने कहा। वे दोनों नन्ही पर्ल की ओर देख रहे थे। "क्या तुम्हारे विचार में वह सुंदर नहीं है ? देखो, कितनी स्वाभाविक प्रवीणता के साथ उसने इन साधारण फूलों से अपने-आपको सजाया है ! कितना भव्य है इसका स्वरूप ! किन्तु मैं जानती हूं कि उसकी भौंहें किसके समान हैं।"

"क्या तुम जानती हो हेस्टर ?" डिम्सडेल ने शरारत-भरी मुसकान



के साथ पूछा, "तुम्हारे साथ घूमते हुए इस बालिका को देखकर मैं कई बार चौंका हूं। हेस्टर, कितना भयानक विचार है कि मेरी ही आकृति के कुछ लक्षण उसके चेहरे में लक्षित हो रहे हैं और वे इतने स्पष्ट हैं कि लोग उन्हें अवश्य पहचान लेंगे। किन्तु उसका स्वरूप तो अधिकतर तुम्हारे समान है !"

"नहीं, नहीं, अधिकतर मेरे समान नहीं !" मां ने कोमल मुसकराहट के साथ उत्तर दिया, "कुछ देर और बीतने दो और फिर तुम्हें यह जानकर भय नहीं लगेगा कि वह किसकी बच्ची है। किन्तु उन जंगली फूलों को बालों में लगाए वह कितनी सुंदर लगती है ! वह पुराने इंग्लैंड की अप्सराओं-सी दिखाई देती है।"

"तुम जब उससे मिलो, उसमें आवेश, उत्सुकता आदि के असाधारण भाव नहीं लक्षित होने चाहिए।" हेस्टर ने धीरे से कहा, "हमारी पर्ल कभी-कभी बहुत कल्पनाशील बालिका का-सा व्यवहार करती है। वह ऐसी भावुकता को कभी भी सहन नहीं कर सकती, जिसका पूर्ण अभिप्राय उसे ज्ञात न हो। किन्तु वह बहुत ही स्नेहमयी है। वह मुझे प्यार करती है और तुम्हें भी अवश्य प्यार करेगी।"

"तुम तो यह कल्पना भी नहीं कर सकतीं।" पादरी ने हेस्टर प्राइन की ओर दृष्टि घुमाते हुए कहा, "यद्यपि मुझे उससे मिलने की तीव्र इच्छा है कि केवल इस मिलने के विचार ही से मेरा हृदय बैठा जा रहा है—किंतु सत्य तो यह है कि जैसा मैं तुम्हें बता चुका हूं, बच्चे मुझसे परिचय नहीं बढ़ाते। वे मेरे घुटनों पर नहीं चढ़ते, मेरे कानों में नहीं गुनगुनाते, किंतु एक विचित्र दृष्टि से देखते हुए दूर खड़े रहते हैं। जब मैं नन्हे बच्चों को गोद में उठाता हूं, तो वे रोने लगते हैं। किंतु पर्ल ने दो बार मेरे प्रति स्नेह दर्शाया है। पहली बार का तो तुम्हें पता ही है और उसके बाद उस दिन, जबकि तुम उसे लेकर उस कठोर स्वभाववाले गवर्नर के पास गई थी।"

"और तुमने विचित्र साहस के साथ मेरा तथा उसका पक्ष लिया था।" हेस्टर ने उत्तर दिया, "मुझे भली प्रकार याद है और पर्ल को भी याद होगा। घबराने की कोई बात नहीं। वह तो लज्जाशील अपरिचित-सी रहेगी, किन्तु शीघ्र ही प्यार करने लगेगी।"

"मेरे मन में एक विचित्र-सी कल्पना पैदा हो रही है," भावुक पादरी ने कहा, "कि वह झरना दो लोकों के बीच की सीमारेखा है और तुम पर्ल को फिर कभी न मिल सकोगी अथवा वह उस अप्सरा-सी है, जिसके बारे में हम बचपन में एक पुरातन गाथा सुना करते थे कि उसे सरिता को पार करना निषिद्ध है। कृपया उसे शीघ्र आने के लिए कहो, क्योंकि इस देरी के कारण मेरा अन्तस् कांप रहा है।"

"आओ प्यारी बच्ची !" हेस्टर ने दोनों हाथ फैलाकर उसे पुकारते हुए कहा, "तुम कितनी धीमी गति से आ रही हो ! इतनी सुस्त कब से हो गई हो ? इधर आओ। देखो, ये मेरे मित्र हैं और तुम्हारे भी मित्र रहेंगे। अब तक जो प्रेम तुम्हें मां से मिलता था, अब वही प्रेम दुगुने रूप में तुम्हें मिला करेगा। झरने पर से छलांग लगाकर हम तक आ जाओ ! तुम हिरन की भांति छलांग नहीं भर सकतीं ?

"तुम कितनी विचित्र हो, तुम मेरे पास क्यों नहीं आतीं ?" हेस्टर ने फिर पुकारा।

"पर्ल, जल्दी करो; नहीं तो मैं तुमसे नाराज हो जाऊंगी।" हेस्टर चिल्लाई। वह किसी अन्य अवसर पर शरारती बच्ची के इस प्रकार के व्यवहार का बुरा न मानती, किन्तु इस समय वह इस बात के लिए बहुत उत्सुक थी कि बच्ची अधिक शिष्ट व्यवहार करे। "झरने को पार करके चली आओ, शरारती बच्ची, नहीं तो मैं आती हूं।"

परन्तु पर्ल जिस प्रकार उसकी प्रार्थनाओं से नहीं हिली थी उसी प्रकार उसकी धमकियों से भी विचलित नहीं हुई, किन्तु तत्क्षण वह पृथ्वी पर गिर पड़ी और बहुत आवेश के साथ रोने लगी और उसका शरीर ऐंठने लगा।

"मैं समझ गई कि बच्ची को क्या तकलीफ है।" हेस्टर ने पादरी के कान में कहा और अपने अंतस् की वेदना तथा क्रोध को छिपाने के प्रयास में उसका मुंह पीला पड़ गया। "बच्चों को प्रतिदिन के जीवन में यदि थोड़ा-सा परिवर्तन भी दिखाई दे, तो वे उसे बिलकुल भी सहन नहीं कर सकते। पर्ल सदा मुझे जो पहने हुए देखा करती थी, अब उसे न देखकर चिंतित हो रही है।"



"मैं तुमसे प्रार्थना कर रहा हूं।" पादरी ने उत्तर दिया, "यदि तुम बच्ची को शांत कर सकती हो, तो तुरन्त उसे समझाओ। कहीं यह बूढ़ी जादूगरनी मिस्ट्रेस हिबिन्स का सा क्रोध तो नहीं है।" पादरी ने मुसकराने का प्रयास करते हुए पुनः कहा, "मैं तो बच्ची के इस आवेश का सामना नहीं कर सकता, चाहे यह आवेशपूर्ण क्रोध पर्ल के सरल सौन्दर्य में हो अथवा किसी जादूगरनी की झुर्रियों में उसका प्रभाव असाधारण होता है। तुम्हें मेरे प्रेम का वास्ता है, उसे शांत करो।"

हेस्टर ने कपोलों पर लज्जा की लालिमा लिए पादरी की ओर एक दृष्टि डाली तथा एक ठण्डी सांस भरते हुए पर्ल की ओर देखा। अभी वह कुछ बोल भी न पाई थी कि उसकी रक्तिमा भयानक पीलेपन में परिवर्तित हो गई।

"पर्ल !" उसने दुःख भरे स्वर में कहा, "अपने पांव की ओर तो देखो, वहीं अपने सामने झरने के इस तट पर।"

बच्ची ने बताए हुए स्थान की ओर देखा और उसे वहां झरने के तट पर तिल्ले से कढ़ा हुआ 'रक्तिम अक्षर' दिखाई दिया।

"इसे इधर लाओ।" हेस्टर बोली।

"तुम उसे यहां उठा लाओ।" पर्ल ने उत्तर दिया।

"क्या ऐसा बच्चा भी हो सकता है !" हेस्टर ने पादरी की ओर देखते हुए धीमे से कहा, "मैं तुम्हें इसके बारे में बहुत कुछ बताऊंगी। इस घृणित अक्षर के सम्बन्ध में उसका मन ठीक ही है। मुझे अभी इस व्यथा को और धारण करना होगा तथा आखिर हम इस प्रदेश को छोड़ जाएंगे और स्वप्न के समान इसका स्मरण-मात्र शेष रह जाएगा। इस कलंक को वन नहीं छिपा सकेगा। इसे मैं सागर को ही प्रदान करूंगी और वह इसे अपने गर्भ में रख लेगा।" इतना कहकर वह झरने के तट पर गई और 'रक्तिम अक्षर' को उठा लिया तथा उसे अपनी छाती पर लगा लिया। एक क्षण ही पहले तो उसने पूर्ण आशा से कहा था कि वह उसे समुद्र में डुबो देगी, किंतु यह अनिवार्य दुर्भाग्य का लक्षण ही था कि उसने भाग्य से इसे ले लिया।

इस कठोर परिवर्तन के पश्चात् उसने पर्ल की ओर हाथ बढ़ाया।

"क्या तुम अपनी मां को पहचानती हो ?" हेस्टर ने घृणाभाव किंतु धीमी आवाज में कहा, "क्या तुम झरने के इस पार आकर अपनी मां को अपना लोगी ? अब तो पुनः उसने लांछन के चिह्न को धारण कर लिया है। पुनः उदासी को अपना लिया है !"

"हां, अब मैं आऊंगी।" बच्ची ने उत्तर दिया और झरने पर से उछलते हुए आकर मां की बांह पकड़ ली, "निस्सन्देह अब तुम मां हो—मैं तुम्हारी बच्ची हूं।"

बहुत स्नेह-भरे भाव से, जो भाव उसमें बहुत कम लक्षित हुआ करता, उसने मां का सिर पकड़ लिया और भौंहों तथा दोनों गालों को चूम लिया।

"तुम्हें मुझ पर दया नहीं आती !" हेस्टर ने कहा, "तुम मेरे प्रति थोड़ा-सा प्रेम लक्षित करती हो तो मेरा उपहास भी करती हो।"

"पादरी वहां क्यों बैठा हुआ है ?" पर्ल ने पूछा।

"वह तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा है," मां ने उत्तर दिया, "आओ और उससे वरदान मांगो। वह तुमसे प्रेम करता है और तुम्हारी मां से भी प्रेम करता है। क्या तुम उससे प्रेम नहीं करोगी ? आओ, वह तुम्हारा स्वागत करना चाहता है।"

"क्या वह हमसे प्रेम करता है ?" पर्ल ने बहुत विवेकपूर्ण तीखी दृष्टि मां के चेहरे पर गड़ाते हुए पूछा, "क्या वह हमारे साथ हाथ में हाथ डाले हुए नगर की ओर जाएगा ?"

"नहीं, अभी नहीं मेरी बच्ची।" हेस्टर ने उत्तर दिया, "किंतु थोड़े दिनों पश्चात् हमारे साथ बांह में बांह डाले घूमा करेगा। हमारा अपना घर होगा। तुम उसके घुटनों पर बैठा करोगी और वह तुम्हें बहुत-सी बातें सिखाया करेगा और तुमसे प्रेम करेगा। क्या तुम प्रेम न करोगी ?"

"और क्या वह सदा अपना हाथ अपने हृदय पर रखा करेगा ?" पर्ल ने प्रश्न किया।

"मूर्ख बच्ची, यह क्या प्रश्न है !—आओ और उससे आशीर्वाद लो।" मां ने कहा।

परन्तु न जाने ईर्ष्या के कारण, जो प्रत्येक बच्चे के स्वभाव में ही मां



के प्रेम के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा के प्रति होती है अथवा किसी सनक के कारण, पर्ल ने पादरी की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। जबरदस्ती पकड़कर ही मां उसे वहां लाई और पीछे लटके हुए, कई प्रकार का मुंह बनाती हुई वह अपनी अनिच्छा प्रकट करती रही। बचपन से ही उसमें यह विशेषता थी कि वह कई प्रकार की शरारत भरी आकृतियां बना सकती थी। पादरी बड़ी उलझन में था तथा उसने इस आशा से कि सम्भवतः चुम्बन ही तिलस्म का काम करे और बच्ची उससे प्रेम करने लगे, आगे बढ़कर उसके माथे का चुम्बन किया। इस पर पर्ल मां का हाथ छुड़ाकर भागी और झरने पर जाकर पानी से अपना माथा धो डाला और वह अनपेक्षित चुम्बन पानी में बह गया। फिर वह चुपचाप मां और पादरी की बातों को सुनती रही, जबकि उन दोनों ने अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए योजना बना ली।

आखिर यह महत्त्वपूर्ण मिलन समाप्त हुआ।

## बीस

पादरी हेस्टर प्राइन और नन्ही पर्ल से पहले चला गया। यद्यपि उसे आशा न थी कि वह वन के धुंधलके में मां और बच्ची की आकृतियां देख सकता था, तब भी थोड़ी दूर जाकर उसने पीछे मुड़कर देखा।

भावों की अस्पष्टता तथा उलझन के कारण उसके अन्तस् में जो एक विचित्र कोलाहल मचा हुआ था, उससे मुक्त होने के लिए उसने अपने प्रस्थान की योजना बनाई थी। उसने उसे स्मरण किया और स्पष्ट रूप में समझने का प्रयास करने लगा। उन्होंने विचार किया था कि न्यू इंग्लैण्ड अथवा अमेरिका के जंगलों में—जहां या तो इंडियनों की झोंपड़ियां थीं या सागर-तट पर यूरोपियन बस्तियां—छिपने के बजाय पुराने इंग्लैण्ड की भीड़-भाड़वाले बड़े-बड़े नगरों में उन्हें अच्छा आश्रय मिल सकता है। पादरी का स्वास्थ्य भी ऐसा ही था कि वह वन के जीवन की कठिनाइयों और

मुसीबतों को सहन नहीं कर सकता था और इसके अतिरिक्त उसके गुणों, सुसंस्कृत जीवन और विकसित प्रतिभा के लिए संस्कृति और सभ्यता के प्रदेश में ही उपयुक्त स्थान था। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्हें एक जहाज की सहायता मिल गई। उन दिनों कुछ जहाज निर्बाध गति से शासन के नियमों की अवेहलना करते हुए सागर-तल पर जहां-तहां घूमा करते थे। इस जहाज का नाम स्पेनिशमेन था और इसे संभवतया ब्रिस्टल जाना था। हेस्टर ने अपने-आपको धर्मस्व कार्य करनेवाली प्रचारिका बताकर जहाज के केप्टन तथा नाविकों के साथ परिचय कर लिया और वह इस बात का उत्तरदायित्व लेती थी कि वे तीनों पूर्णतः गुप्त रूप से उस जहाज पर जा सकते हैं।

पादरी ने कुछ अनपेक्षित भाव के साथ हेस्टर से पूछा कि जहाज ठीक किस समय चलेगा और उत्तर में हेस्टर ने बताया कि संभवतः चौथे दिन प्रस्थान करेगा। तब उसने मन-ही-मन कहा था, 'यह तो बहुत सौभाग्य की बात है।' कारण यह था कि आज से तीसरे दिन उसने निर्वाचनों-सम्बन्धी भाषण देना था और वह अवसर न्यू इंग्लैण्ड के एक पादरी के लिए बड़े सम्मान का दिन होता था—वह भी इच्छा कर रहा था कि इस वृत्ति को छोड़ने के लिए वही दिन और उस प्रकार का वह अन्तिम भाषण ही ठीक होगा।

हेस्टर से मिलकर वापस आते हुए डिम्सडेल के भाव इतने उत्तेजित थे कि उसमें असामान्य शक्ति आ गई थी और वह बहुत तेज गति से नगर की ओर आ रहा था। उसे ऐसा लगा मानो वन की पगडंडी अधिक चौड़ी हो गई हैं और उसमें प्राकृतिक बाधाएं तथा अड़चनें नहीं रहीं।

जब वह नगर के समीप पहुंचा, तो उसे ऐसा अनुभव हुआ कि मानो उसकी परिचित वस्तुएं, कुछ बदली हुई हैं। उसे लगा कि एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, वरन् अनेक दिन अथवा अनेक वर्ष उसे इस नगर को छोड़े हुए हो गए हैं।

जिस समय डिम्सडेल इस प्रकार मन-ही-मन बातें कर रहा था और उसने अपने माथे पर हाथ मारा था, मशहूर जादूगरनी मिस्ट्रेस हिबिन्स वहां से गुजर रही थी। वह ऊंची टोपी, वेल्वेट का गाउन और झालरदार गुलूबन्द



पहने बहुत भव्य लग रही थी। पता नहीं उसने पादरी के भावों को समझ लिया अथवा नहीं, किन्तु वह एकदम रुक गई, उसने सतर्क दृष्टि से उसकी ओर देखा, शरारत-भरे ढंग से मुसकराई, और यद्यपि उसे पादरी से कोई बात नहीं करनी थी, परन्तु वह उससे बातें करने लगी।

"तो आदरणीय महोदय, आप वन में हो आए हैं।" ऊंची टोपी को हिलाती हुई जादूगरनी बोली, "अगली बार आप जाएं तो मुझे पहले अवश्य सूचना दे दें, मैं आपके साथ जाने में गर्व अनुभव करूंगी। वहां मुझे कुछ अधिक नहीं करना पड़ेगा, मेरे कहने-मात्र से ही वहां का राजा तुम्हारा स्वागत करेगा।"

"मैं सच कहता हूं महोदया..." पादरी ने महिला के पद के अनुरूप और अपने सभ्य व्यवहार के अनुसार झुककर अभिवादन करते हुए कहा, "मैं अपनी आत्मा और चरित्र की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं तुम्हारी बात नहीं समझ सका और उलझन में फंस गया हूं। मैं वन में न किसी राजा को मिलने गया था और न ही भविष्य में ऐसे किसी राजा का कृपापात्र बनने के लिए वहां जाने का मेरा कोई विचार है। मैं तो केवल अपने धर्मपरायण देवतुल्य मित्र इलियट से मिलने और उसने जिन काफिर आत्माओं को मुक्ति दिलाई है, उसपर हर्ष मनाने के उद्देश्य से ही वहां गया था।"

"ह ! ह !! हा !!!" बूढ़ी जादूगरनी ऊंची टोपी हिलाती हुई खिलखिलाकर हंस पड़ी, "ठीक है, ठीक है, हमें दिन के समय ऐसा ही कहना चाहिए, तुम खूब प्रवीण हो गए हो, किन्तु रात्रि के समय वन में हम और प्रकार की बातें करेंगे।"

वह गरिमापूर्ण ढंग से आगे चली गई, किन्तु मुड़-मुड़कर पादरी की ओर देखती और हंस देती, जैसे वह बता रही हो कि मैं तुम्हारे गुप्त सम्बन्ध को स्वीकार करती हूं।

'तो क्या मैं शैतान के हाथों बिक चुका हूं,' पादरी सोचने लगा, 'जिसे, जैसा कि लोग कहते हैं, इस बूढ़ी महिला ने अपना राजा और स्वामी बना रखा है।'

बेचारे पादरी ने कुछ सौदा कर लिया था। सुखद स्वप्न के प्रलोभन में वह जान-बूझकर ऐसे पाप के लिए उतारू हो गया था जिसे वह स्वयं अत्यन्त भयंकर समझता था। उस पाप का विष उसके समस्त नैतिक जीवन में व्याप्त हो रहा था। इससे ईश्वरप्रदत्त प्रवृत्तियां विनष्ट हो रही थीं और उनके स्थान पर सभी प्रकार की बुरी प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव हो रहा था। घृणा, कटुता, द्वेष, बुराई को इच्छा और प्रत्येक अच्छी बात का उपहास करने की प्रवृत्तियां उसके मन में जाग रही थीं, यद्यपि अब भी वह उनसे घृणा करता था। मिस्ट्रेस हिबिन्स से उसके मिलन से यही पता लगता था कि उसे दुष्ट तथा दूषित स्वभाव के लोगों से सहानुभूति है।

इस समय वह कब्रिस्तान के किनारे अपने मकान पर पहुंच गया था। वह जल्दी से सीढ़ियों पर चढ़ा और अपने अध्ययन-कक्ष में चला गया। पादरी को इस बात का हर्ष हुआ कि गली में से गुजरते हुए जिस प्रकार विचित्र दोषपूर्ण और अस्वाभाविक प्रवृत्तियां उसमें जाग रही थीं, उसे किसी ने नहीं देखा और वह अपने मकान पर निर्विघ्न पहुंच गया है। अपने चिरपरिचित कमरे में प्रवेश करके उसने पुस्तकों, खिड़कियों और सुसज्जित दीवारों की ओर उसी विचित्र भाव से देखा जो वन से नगर की ओर आते हुए और गलियों में घूमते हुए उनके मन में पैदा हुआ था। इसी कमरे में उसने अध्ययन किया था और लिखा था, यहीं उसने व्रत रखे थे और अनेक रातें जागकर गुजारी थीं, जिनसे उसकी स्थिति मृतप्राय-सी हो गई थी। यहीं उसने भगवान से प्रार्थनाएं की थीं और यहीं अनेक यातनाओं को सहन किया था। यहां प्राचीन हिब्रू भाषा में लिखा हुआ बाइबल पड़ा था, जिसके माध्यम से देवता उससे बातें किया करते थे और जिसमें उसने भगवान, की वाणी को सुना था। वहीं मेज पर वह भाषण पड़ा था, जिसे दो दिन पूर्व लिखते-लिखते उसके भाव कुंठित हो गए थे और उसने वाक्य को अधूरा छोड़ दिया था लेखनी को वहीं छोड़कर वह चला गया था। यह जानता था कि उसीने अपनी कृश और दुर्बल अवस्था में भी निर्वाचन-सम्बन्धी भाषण लिखने का कठोर श्रम किया था। किन्तु अब वह व्यक्तित्व को उससे भिन्न समझता था और अपनी पूर्वकृति को घृणा, दया



तथा स्पर्धापूर्ण उत्सुकता से देख रहा था। वह व्यक्ति जा चुका था। वन से नया ही व्यक्ति लौटा था जो पहले की अपेक्षा अधिक विवेकशील था और उन रहस्यों को जान चुका था, जिन्हें अपनी अत्यधिक सरलता के कारण पहला व्यक्ति कभी भी नहीं जान सकता था। यह ज्ञान कहीं अधिक अच्छा था।

जब वह इस प्रकार के विचारों में डूबा हुआ था, तो कमरे के दरवाजे को किसी ने खटखटाया। "अन्दर चले आओ।" पादरी बोला। यद्यपि उसे यह भी विचार था कि संभवतः कोई पापात्मा ही दरवाजा खटखटा रही है। ऐसा ही हुआ, रोजर चिलिंगवर्थ ने कमरे में प्रवेश किया। पादरी का रंग सफेद हो गया, वाणी मूक हो गई और उसका एक हाथ बाइबल पर तथा दूसरा हृदय पर जा पड़ा।

"मैं आपका स्वागत करता हूं श्रीमान," चिकित्सक बोला, "वे धर्मपरायण देवतुल्य श्री इलियट कैसे थे ? परन्तु मैं समझता हूं, इस कठिन यात्रा के कारण आपका रंग पीला पड़ गया है। क्या मैं आपको शक्ति और स्फूर्ति प्रदान करने का प्रयास करूं, ताकि आप निर्वाचन का भाषण करने के योग्य हो सकें ?"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं समझता," डिम्सडेल ने उत्तर दिया, "इतनी देर तक कमरे में पड़े-पड़े अध्ययन करते रहने के बाद इस यात्रा में श्री इलियट के दर्शन और मार्ग की स्वच्छ वायु मुझे प्राप्त हुई है, इससे मुझे लाभ ही हुआ है। दयालु चिकित्सक, मैं समझता हूं कि अब मुझे तुम्हारी औषधियों की आवश्यकता नहीं, चाहे वे कितनी ही अच्छी हों और कितने ही मैत्रीपूर्ण भाव से आप उनका प्रयोग करते रहे हों।"

अब तक रोजर चिलिंगवर्थ अत्यन्त ध्यान से, जो कि चिकित्सक द्वारा रोगी के प्रति अपेक्षित था, उसे देखता रहा था। किन्तु यद्यपि पादरी ने इस भाव को प्रकट नहीं किया, पर वह जानता था कि इस बूढ़े व्यक्ति को इस बात का पता है या कम-से-कम यह संदेह अवश्य है कि हम हेस्टर प्राइन से मिल चुका है। उस समय चिकित्सक को पता लग गया कि पादरी की दृष्टि में वह उसका मित्र नहीं रहा, वरन घोर शत्रु बन गया है। इतना जान

लेने पर यह आवश्यक था कि इसे कुछ-न-कुछ व्यक्त भी कर दिया जाए।

पादरी ने अनुभव किया कि रोजर चिलिंगवर्थ उस वास्तविक स्थिति को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त नहीं करेगा, तो भी चिकित्सक ने बहुत गुप्त तथा भयानक ढंग से रहस्य की ओर संकेत कर दिया।

उसने कहा, "यह कितना अच्छा होता कि आज रात चिकित्साशास्त्र के मेरे तुच्छ ज्ञान से आप लाभ उठाते ! सच तो यह है श्रीमान कि इस निर्वाचन के अवसर पर भाषण देने के लिए आपको सशक्त बनाने के हेतु मुझे अवश्य प्रयास करना चाहिए। लोग आपसे बहुत आशा कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें भय है कि अगले वर्ष आपको—अपने उपदेशक को—यहां नहीं पाएंगे।"

"हां, मैं दूसरे लोक में चला जाऊंगा।" पादरी ने विरक्त भाव से उत्तर दिया, "ईश्वर करे ऐसा ही हो, मुझे इसी में शांति मिलेगी। मैं समझता हूं, अगला वर्ष मैं अपने शिष्यों के साथ नहीं गुजार सकूंगा। किन्तु श्रीमान, मेरे शरीर की जैसी अवस्था है, मैं तुम्हारी औषधि को स्पर्श करना आवश्यक नहीं समझता।"

"मुझे यह सुनकर हर्ष होता है।" चिकित्सक ने उत्तर दिया, "मैं समझता हूं कि मैं जिस उपचार को व्यर्थ समझने लगा था, उसका अच्छा प्रभाव दिखाई देने लगा है। मैं यदि तुम्हें स्वस्थ बना सकता तो अपने को भाग्यशाली समझता और न्यू इंग्लैण्ड के आभार का पात्र बन सकता।"

"मेरे अत्यन्त सावधान मित्र, मैं हृदय से तुम्हारा धन्यवाद करता हूं।" डिम्सडेल ने गम्भीर मुसकान के साथ कहा, "मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूं और जो तुमने मेरी भलाई की है उसके उपलक्ष्य में केवल प्रार्थना ही कर सकता हूं।"

"एक अच्छे आदमी की प्रार्थना से बढ़कर और कौन-सा पुरस्कार हो सकता है !" रोजर चिलिंगवर्थ ने उससे विदा होते हुए कहा, "निस्संदेह यह प्रार्थना न्यू योरोशलम की स्वर्णमुद्रा के वे सिक्के हैं जिनपर भगवान मसीह का चिह्न अंकित है।"

रोजर चिलिंगवर्थ के चले जाने के बाद पादरी ने एक नौकर को



बुलाया और खाना लाने के लिए कहा। खाना परोसा गया। उसे इतनी अधिक भूख लगी हुई थी कि वह एकदम उस पर टूट पड़ा, तत्पश्चात् निर्वाचन के अवसर के लिए लिखे गए भाषण को उसने आग में फेंक दिया और तुरन्त दूसरा भाषण लिखने के लिए बैठ गया, जिसे उसने इतनी तीव्र भावानुभूति से लिख डाला कि उसे ऐसा प्रतीत हुआ और आश्चर्य भी कि विधाता ने उसके तुच्छ व्यक्तित्व से इतना महान संगीत कैसे प्रस्फुटित कर दिया। रात एक उड़ते हुए पक्षी के समान तेजी से बीत गई। प्रभात हुआ और उषा की स्वर्णिम किरणें परदों से झांकने लगीं और आखिर सूर्य का प्रकाश उसके अध्ययन-कक्ष में फैल गया। पादरी की आंखें उस प्रकाश में चौंधिया गईं। उस समय भी उसकी अंगुलियों में लेखनी थी, जिसने अनेक पृष्ठों को उसके भावों से भर दिया था।

## इक्कीस

जिस दिन प्रायः लोगों को गवर्नर को पद पर प्रतिष्ठित करना था उस दिन हेस्टर प्राइन और नन्ही पर्ल बाजार आईं। बाजार पहले ही शिल्पकारों और निम्न स्तर के लोगों से भरा हुआ था। उनमें बहुत-से भद्दे आकार-प्रकारवाले ऐसे लोग थे, जिन्होंने हिरन की खाल के वस्त्र पहन रखे थे, जिससे पता लगता था कि वे उपनिवेश के इस विशाल नगर के आसपास वन्य प्रदेश में बसी हुई बस्तियों के निवासी थे।

गत सात वर्षों के अन्य सभी उत्सवों की तरह आज की सार्वजनिक छुट्टी के अवसर पर भी हेस्टर ने सलेटी रंग का मोटा कपड़ा पहन रखा था। उसके रंग के कारण नहीं वरन् उसके फैशन की ऐसी अव्यक्त विशेषता थी जिसके प्रभाव से उसका व्यक्तित्व धुंधला-सा पड़ गया था और वह केवल रेखाचित्र-सी प्रतीत होने लगती थी। किन्तु उसका 'रक्तिम अक्षर' उसे अदृश्य लोक के धुंधलके से बाहर ले आता था और अपने नैतिक पक्ष के प्रकाश में उसके स्वरूप को व्यक्त कर देता था। नगर के लोगों को उस

चिर-परिचित चेहरे पर सदा ही प्रस्तर-मूर्ति का सा मौन लक्षित होता था। यह या तो एक बनावटी चेहरे के आवरण के समान था या किसी मृतक नारी की निस्तब्ध आकृति के समान; और सम्भवतः यह इस कठोर सत्य का प्रतिरूप था कि वास्तव में हेस्टर की मृत्यु हो चुकी थी और यद्यपि देखने में वह संसार में आसक्त प्रतीत होती थी, तथापि अब उसको किसी प्रकार को सहानुभूति की आवश्यकता नहीं रह गई थी।

संभवतः आज ही पहली बार उसके चेहरे पर ऐसा भाव दिखाई दे रहा था जिसे पहले कभी नहीं देखा गया।

पर्ल बहुत सुन्दर ढंग से सजी हुई थी। उसे देखकर यह अनुमान लगाना असम्भव था कि इस तड़क-भड़कवाली वेशभूषा का निर्माण करनेवाली रमणी वही है जिसने फीके सलेटी वस्त्र पहन रखे हैं, या बच्ची के वस्त्रों के निर्माण में जिस चटकीली तथा कोमल-कांत कल्पना ने योग दिया था उसी ने हेस्टर की सादी पोशाक को ऐसी स्पष्ट विशेषता प्रदान करने का कठिन कार्य किया है। पर्ल का यह वेश उसके इतना अनुकूल था कि उसी के अन्तस् तथा चरित्र से प्रस्फुटित बाह्य प्रदर्शन के सामन दिखाई देता था और उसे उसी प्रकार उससे अलग नहीं किया जा सकता था जिस प्रकार तितली के पंखों के चमकीले रंगों को उससे दूर नहीं किया जा सकता या फूल की चित्रित पंखुड़ी की सुषमा को उससे अलग नहीं किया जा सकता।

अपनी चंचल भावनाओं से प्रेरित होकर वह मां के साथ-साथ चलने के स्थान पर पक्षियों के समान फुदकती हुई जा रही थी। बीच-बीच में वह जोर-जोर से चीखती अस्पष्ट सी भाषा में चिल्लाने लगती और कभी कर्णकटु स्वर में गीत गाने लगती। जब वह बाजार में पहुंची तो वहां का शोर-शराबा देखकर वह और भी अधिक अशांत और चपल हो गई। वहां का बाजार नगर का व्यापारिक केन्द्र होने की बजाय गांव के बाहर के हरे-भरे मैदान के समान था और वहां की यह हलचल अनपेक्षित ही प्रतीत होती थी।

"क्यों, यह क्या हो रहा है ?" उसने पुकारा, "आज सब लोगों ने



अपना काम क्यों छोड़ दिया है ? क्या सारे संसार के लिए आज खेल का ही दिन है ? देखो ! वह लोहार अपने काले मुंह को धोकर छुट्टी के दिन के कपड़े पहने हुए कितना प्रसन्न नजर आ रहा है और देखो मां, वह पुराना जेलर मास्टर ब्रेकट मेरी ओर देखकर हंस रहा है और सिर हिला रहा है। वह ऐसा क्यों करता है मां ?"

"वह तुम्हें तुम्हारे बचपन से जानता है मेरी बच्ची।" हेस्टर ने उत्तर दिया।

"किन्तु उस भद्दी आंखवाले बूढ़े व्यक्ति को मेरी ओर देखकर हंसना तो नहीं चाहिए," पर्ल ने कहा, "अगर उसकी इच्छा हो तो उसे तुम्हारी ओर देखकर सिर हिलाना चाहिए क्योंकि तुम सलेटी रंग के वस्त्र पहने हुए हो ओर वृक्ष पर 'रक्तिम अक्षर' धारण किए हुए हो; पर देखो मां, इन लोगों में कितने अजनबी इंडियन और नाविक एकत्र हुए हैं। वे सब इस बाजार में क्या करने आए हैं ?"

"वे यहां खड़े होकर जलूस को गुजरता हुआ देखेंगे।" हेस्टर ने कहा, "गवर्नर, दण्डाधीश, पादरी और प्रतिष्ठित लोग यहां से गुजरेंगे, उनके साथ-साथ गाना-बजाना होगा और उनके आगे-आगे सिपाही मार्च करते हुए जाएंगे।"

"और क्या पादरी भी उनमें होगा ?" पर्ल ने पूछा, "क्या वह उसी तरह अपनी दोनों बाहें मेरी ओर फैलाएगा जैसे उसने झरने के तट पर फैला दी थीं जब तुम मुझे उसके पास ले गई थीं।"

"वह भी होगा बच्ची।" मां ने उत्तर दिया, "किंतु आज वह तुम्हें नहीं बुलाएगा और न ही तुम उसका अभिवादन करना।"

"कितना विचित्र और दुःखी व्यक्ति है !" बच्ची ने ऐसे ढंग से कहा जैसे वह अपने-आपसे ही बातें कर रही हो। "रात के अंधेरे में तो वह हमें बुलाता है तथा तुम्हारा और मेरा हाथ पकड़ता है जैसे उसने उस रात इस दंड-मंच पर किया था। घने वन में, जहां केवल पुराने वृक्ष तुम्हारी बातें सुन सकते थे और जहां से दिखाई देनेवाली टुकड़ी तुम्हें निहार रही थी, वह काई के ढेर पर बैठा हुआ तुमसे बातें कर सकता है और मेरे माथे पर चुम्बन

ले सकता है जिसे मैंने बहुत कठिनाई से झरने के पानी द्वारा धो डाला था, किन्तु यहां दोपहरी में और लोगों के बीच वह हमें पहचानता भी नहीं और न ही हम उससे परिचितों की तरह व्यवहार कर सकते हैं। कितना विचित्र और दुःखी व्यक्ति है और अपना हाथ सदा हृदय पर रखे रहता है।''

''चुप रहो पर्ल, तुम इन बातों को नहीं समझतीं।'' उसकी मां ने कहा, ''अब पादरी का ध्यान छोड़ो और अपने आसपास के लोगों को देखो। वे कितने प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं ! इस हर्षोत्सव को मनाने के लिए स्कूलों के बच्चे आए हुए हैं और बड़े लोग अपना काम-काज और अपने खेत छोड़कर आ गए हैं। आज से एक नया व्यक्ति हम पर शासन करना आरम्भ करेगा। और जब से राष्ट्र का निर्माण हुआ है, यह प्रथा चली आ रही है कि इस दिन हर्षोत्सव मनाया जाता है और यह कल्पना की जाती है कि नया सुखद वर्ष इस पुरातन विश्व को नव-जीवन प्रदान करेगा।'

हेस्टर ने इस बारे में कहा था कि लोगों के चेहरों पर चमकने वाला यह हर्ष अत्यन्त अनपेक्षित-सा है। वर्ष में इस उत्सव के मौसम में—जिसे गत दो शताब्दियों से मनाया जा रहा है—प्यूरिटन लोग अपने सार्वजनिक जीवन के समस्त हर्षोल्लास को जिसकी अनुमति वह मानव-दुर्बलता को दृष्टिगत रखते हुए भी दिया करते थे, पूर्ण उत्साह के साथ प्रदर्शित किया करते थे और छुट्टी के इस एक दिन में रूढ़ियों को तोड़कर हर्षोल्लास मनाया करते थे। इस समय उसके जीवन में अधिक गम्भीरता परिलक्षित नहीं हुआ करती थी।

किन्तु फिर भी इस युग के लोगों के स्वभाव और आचार-व्यवहार में एक निश्चित गम्भीरता अवश्य रहती थी। बोस्टन के बाजार में जो लोग एकत्र थे उन्हें प्यूरिटनों की विरक्त भावना उत्तराधिकार रूप में नहीं मिली थी। वे इंग्लैण्ड के मूल-निवासी थे।

जिनके पूर्वजों ने एलिजाबेथ-युग के समृद्ध जीवन को देखा था और उस युग के सामाजिक जीवन में हर्षोल्लास तथा विशद गरिमा देखी थी, यदि वे अपने पूर्वजों की परम्परा को अपनाते तो न्यू इंगलैण्ड में भी प्रत्येक सार्वजनिक उत्सव पर सहभोज हुआ करते तथा जलूस और झांकियां निकला



करतीं—यह बहुत असम्भव भी नहीं था। राजकीय उत्सवों पर हर्षोन्माद का गांभीर्य के साथ ऐसा अपूर्व सामंजस्य किया जा सकता था जैसे किसी राष्ट्र की भव्य मूर्ति में गम्भीर मुद्रा के साथ उत्कृष्ट कलाकृति का अंकन किया गया हो। इस दिन बस्ती का राजनीतिक वर्ष आरम्भ होता है और इस उत्सव को मनाने के ढंग में इसी प्रकार का प्रयास लक्षित हो रहा था। प्रतिवर्ष दंडाधीशों के पदारूढ़ होने के अवसर पर उत्सव मनाने के लिए हमारे पूर्वजों ने जिन प्रथाओं को स्थापित किया था उनमें लंदन के पुराने उत्सवों—सम्राट के राज्याभिषेक के तो नहीं किन्तु मेयर के सत्तारूढ़ होने के अवसर की शोभा-श्री और शान का क्षीण-सा स्वरूप देखने को मिलता था। राष्ट्रमंडल के निर्माता—राजनीतिज्ञ, पादरी और सैनिक—बाह्य ठाट-बाट और गरिमा बनाए रखना अपना कर्तव्य समझते थे और इसे पुराने फैशन के अनुसार सार्वजनिक मान-मर्यादा का प्रतीक समझा जाता था। वे सब जलूस के रूप में लोगों के सामने आते थे और इस प्रकार नवनिर्मित सरकार की सरल-साधारण व्यवस्था को गरिमा प्रदान किया करते थे।

लोगों को जो नियम अपने नित्यप्रति के व्यवहार में धर्म के कठोर अनुशासन के रूप में लागू करने पड़ते थे, इन उत्सवों में उनसे छुटकारा पाने का उत्साह तो नहीं किन्तु अवसर अवश्य मिल जाता था। सच यह है कि यहां एलिजाबेथ अथवा जेम्स के युग के आनंदोत्सवों के साधन उपलब्ध नहीं थे—वे प्रारम्भिक काल के थियेटर नहीं थे, पौराणिक वीरगाथाएं गानेवाले भाट नहीं थे, संगीत की ताल पर वानर के साथ नाच करने वाले नर्तक नहीं थे, तमाशा दिखानेवाले मदारी नहीं थे, वह मेरी एण्ड्रयू भी यहां नहीं था जो अपनी हास परिहास की पुरानी बातों से, जो पुरानी होती हुई भी प्रभावपूर्ण थीं, लोगों का मनोरंजन किया करता था। इस प्रकार मनोरंजन करने वाले लोगों का न केवल कानून के कठोर अनुशासन द्वारा, वरन् कानून को शक्ति प्रदान करने वाली सार्वजनिक भावना द्वारा विरोध किया जाता था। फिर भी इन सद्भावपूर्ण लोगों के चेहरों पर एक ऐसी हंसी होती जिसमें गंभीरता का पूर्ण सामंजस्य होता था। यहां वे पुराने खेल भी हुआ करते थे जो उपनिवेशवासियों ने पुराने इंगलैण्ड के हरे-भरे ग्रामीण

क्षेत्रों के मेलों में बहुत पहले देखे थे। ये लोग समझते थे कि इन खेलों के रिवाज को इस नये प्रदेश में भी जीवित रखना आवश्यक है क्योंकि इनसे उनके लिए अपेक्षित साहस और वीरता के गुण पैदा होते हैं। कार्नवाल और डेविनशायर के अनेक प्रकार के दंगल भी यहां बाजार के क्षेत्र में ही हुआ करते थे। आज भी एक कोने में दो योद्धा डंडों से परस्पर लड़ रहे थे और उस दण्ड-मंच पर जिसे पाठक भली भांति जानते हैं, दो वीर खड्ग-युद्ध का प्रदर्शन कर रहे थे किन्तु उसी समय नगर का अवरदण्डाधीश उस स्थान पर पहुंच गया और उसने न्याय के इस पवित्र स्थल पर ही कानून की इस अवहेलना को बुरा समझा तथा उस खेल को रोक दिया, जिससे लोगों को काफी निराशा भी हुई।

सच बात तो यह है कि (उपनिवेशवासियों के लिए गम्भीरता तथा हर्षरहित जीवन का यह प्रारम्भिक स्वरूप था और वे लोग उन पूर्वजों की संतान थे जो आनन्दोत्सव मनाने में प्रवीण थे) चाहे हमारे इन पूर्वजों और हमारे बीच, काल का बड़ा अंतर है किन्तु उनके हर्षोल्लासपूर्ण उत्सव हमारे ही जैसे हुआ करते थे। उनके पश्चात् प्रारंभिक प्रवासियों की पहली पीढ़ी में प्यूरिटनवाद की घोर गम्भीरता छा गई थी और वह राष्ट्र में इस प्रकार व्यापक हो गई थी कि फिर कई वर्ष बीत जाने पर भी उसका प्रभाव क्षीण नहीं हुआ और आनन्दोत्सव मनाने की प्रथाएं तो सर्वथा विस्मृति के गर्भ में विलीन हो गईं।

उस बाजार के जीवन में सामान्यतः दुःख भरी गंभीरता लक्षित होती थी किन्तु फिर भी हर्षोल्लास की कुछ रेखाएं यत्र-तत्र बिखरी हुई दिखाई देती थीं। इण्डियनों का एक दल—जिसने विचित्र कढ़ाई किया हुआ मृगचर्म पहन रखा था, सिर पर पंख लगा रखे थे, और धनुष-तीर तथा पत्थर के सिरवाले भाले धारण किए हुए थे—बहुत कठोर-सी मुद्रा में एक ओर खड़ा था। चित्रित वेशभूषा पहने ये बर्बर इण्डियन उस दृश्य में और भी अधिक बहशी दिखाई देते थे। 'स्पेनिश मैन' के नाविक भी तट पर निर्वाचन का दृश्य देखने के लिए आए हुए थे और वे स्वयं उन असभ्य लोगों जैसा दृश्य उपस्थित कर रहे थे। बढ़ी हुई दाढ़ियों और झुलसे हुए चेहरोंवाले वे नाविक



गुंडे-से प्रतीत होते थे। उन्होंने चौड़ी किन्तु छोटी पतलूनें पहन रखी थीं और उन पर पेटियां लगाई हुई थीं, उनमें से अनेक ने अपनी पेटियों में सोने के टुकड़े का बक्कल लगाया हुआ था और चाकू या तलवार उसके साथ बांध रखी थी। चीड़ के पत्तों की बनी हुई चौड़े सिरोवाली टोपियों के नीचे उनकी आंखें इस प्रकार चमकती थीं कि प्रसन्नता में भी उनमें से हिंस्र जंतुओं की सी पाशविकता टपकती दिखाई देती थी। वे बिना किसी भय अथवा डर के आचरण-संबंधी नियमों का उल्लंघन कर देते थे। अवरदण्डाधीश के बिलकुल समीप खड़े होकर सिगरेट पीते थे। यदि कोई नागरिक ऐसा करता तो उसे प्रत्येक कश पर एक शिलिंग का जुर्माना होता; किन्तु ये लोग तो यहां तक बढ़े हुए थे जो जेबों में शराब तक की बोतलें लिए घूमते तथा स्वेच्छा से पीने लगते तब उनके आसपास खड़े लोग आश्चर्यचकित हो उन्हें देखा करते थे। वे लोग तट पर के प्रदेशों में घूमते हुए ऐसा स्वेच्छाचारी व्यवहार किया करते थे और कभी-कभी तो इससे भी अधिक निर्भीक कार्य करते थे जो वस्तुतः उनकी प्रकृति का अंग बन चुके थे। उन दिनों के नाविक ऐसे थे कि आज के युग में उन्हें डाकू ही कहा जा सकता है। इस 'स्पेनिशमैन' जहाज के नाविक भी अपने गुंडे भाई-बंधुओं की ही तरह के आदमी थे और स्पेन के व्यापार के लिए ऐसे-ऐसे घिनौने काम करते थे जिन्हें यदि आज कोई करे तो आधुनिक न्यायालय के कठोर हाथ उसे कभी मुक्त न रहने दें।

भीड़ में उस पुराने युग के नाविक सागर की लहरों की तरह स्वच्छंद थे और जिस प्रकार सागर में लहरें स्वेच्छा से उभरती या उतरती हैं या कभी तूफान आने पर उत्पात करने लगती हैं उसी प्रकार वे भी मानव-निर्मित कानून के नियन्त्रण में नहीं रहते थे। ये नाविक डाकू जब चाहते अपना यह धन्धा छोड़कर किसी प्रदेश में पवित्रता का जीवन व्यतीत करने लगते थे और उनके उत्पातपूर्ण जीवन में भी समाज उन्हें बहिष्कृत करने अथवा उनके साथ अपना सम्पर्क तोड़ने की बात नहीं सोचता था। काले कोट, अकड़े हुए झालरदार गुलूबंद और ऊंचे हैट पहने हुए प्युरिटन वृद्धजन इन नाविकों के कोलाहल, धृष्टतापूर्ण व्यवहार तथा हास-परिहास पर मुसकरा-भर

देते थे और जब वह चिकित्सक रोजर चिलिंगवर्थ जैसा ख्यातिप्राप्त नागरिक उस जहाज के कमांडर के साथ घुल-मिलकर बातें कर रहा था तब भी लोगों को उस पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ।

वह कमांडर बहुत तड़क-भड़कवाले वस्त्रं पहने हुए था और उस भीड़ में उसे तुरन्त देखा जा सकता था। उसके वस्त्रों पर बहुत-से रिबन लगे हुए थे तथा हैट पर सुनहरी फीता और एक स्वर्णिम जंजीर लगी हुई थी जिस पर एक पंख टंगा हुआ था। उसके माथे पर एक तलवार का घाव था और उसने अपने बालों की मांग ऐसी बना रखी थी कि जिससे उस घाव के चिह्न को छिपाने की बजाय उसे दिखाने का ही अधिक प्रयत्न किया गया था। उस उपनिवेश का कोई भी वासी इस प्रकार के वस्त्रों को धारण नहीं कर सकता था और यदि कोई इस प्रकार के वस्त्र पहनकर अपनी शान दिखाता तो गवर्नर उसकी कठोर आलोचना करता और संभवतः उसे कारावास का दण्ड दे देता या दण्ड-मंच पर खड़ा करके सब लोगों के सम्मुख उसे अपमानित करता। किन्तु जहाज के स्वामी के लिए यह तड़क-भड़क स्वाभाविक थी और उसकी प्रवृत्ति का अंग ही मानी जाती थी।

चिकित्सक से अलग होने के पश्चात वह कमांडर बाजार में इधर-उधर घूमता रहा और अंत में उस स्थान पर पहुंचा जहां हेस्टर प्राइन खड़ी थी। उसने तुरन्त हेस्टर को पहचान लिया और उसे सम्बोधन करने में नहीं झिझका। प्रायः ऐसा होता था कि जहां हेस्टर खड़ी होती थी वहां उसके आसपास एक खाली घेरा बन जाता था—यह ऐसा जादू का सा घेरा था कि उसके थोड़े ही अंतर पर लोग कंधे से कंधा भिड़ाते हुए दिखाई देते थे किन्तु कोई भी व्यक्ति उस घेरे में आने का साहस नहीं करता था। उस रक्तिम अक्षरधारणी के लिए इस प्रकार का नैतिक एकाकीपन बरबस पैदा हो जाता था जिसका कुछ कारण तो उसकी गंभीर प्रकृति थी और कुछ उसका स्वभाव भी ऐसा बन गया था। यद्यपि वह दयाहीन नहीं थी किन्तु जनसाधारण से विलग रहने के भाव उसमें अवश्य निहित थे। खैर, इस स्थिति का उन्हें बहुत लाभ हुआ और हेस्टर तथा वह कमांडर आपस में इस प्रकार बातें करते रहे कि कोई भी उन्हें सुन नहीं सकता था। लोगों



के लिए हेस्टर की ख्याति में इतना परिवर्तन हो गया था कि वे समझने लगे थे कि यदि नगर की प्रचारिका किसी के साथ इस प्रकार की बातचीत करती हो तो भले ही उससे दुराचार की संभावना हो सकती है किन्तु हेस्टर के ऐसे व्यवहार से इस प्रकार की कोई संभावना नहीं।

"तो क्या मिस्ट्रेस," नाविक ने कहा, "मैं प्रबंधक को आदेश दे दूं कि तुमने जितनी जगहों के लिए कह रखा है उससे अधिक एक और जगह का प्रबन्ध किया जाए ? यह यात्रा ऐसी है कि तुम्हें बुखार आदि का बिलकुल भय नहीं रहना चाहिए। हमारे जहाज में डाक्टर भी हैं और यह चिकित्सक भी, किन्तु इनकी दवाई अथवा गोली से भले ही कोई खतरा हो सकता है। मेरे जहाज पर दवाईवाले लोगों का बहुत अधिक जमघट हो गया है, किन्तु वे सब नाम मात्र के हैं।"

"आपका क्या अभिप्राय है ?" हेस्टर ने आश्चर्यचकित किन्तु उत्सुकता को छिपाते हुए पूछा, "क्या तुम किसी और यात्री को भी ले जा रहे हो ?"

"क्या तुम नहीं जानतीं ?" जहाज का स्वामी बोला, "यह चिकित्सक, जो अपने-आपको चिलिंगवर्थ कहता है, तुम्हारे साथ मेरे जहाज पर जाना चाहता है। तुम्हें अवश्य इस बात का पता होगा, क्योंकि उसने मुझे बताया है कि वह तुम्हारा ही साथी है—और जिस महानुभाव के बारे में तुमने मुझे कहा था कि उसे इन कठोर प्यूरिटन शासकों से खतरा है, उसका यह परम मित्र है।"

"हां, वे एक-दूसरे को भली प्रकार जानते हैं।" हेस्टर ने अत्यंत विवश तथा शांत भाव से उत्तर दिया, "वे बहुत समय तक इकट्ठे रहे हैं।"

नाविक तथा हेस्टर प्राइन के बीच और कोई बात नहीं हुई किंतु उस समय हेस्टर ने बाजार के दूर कोने में खड़े रोजर चिलिंगवर्थ को देखा जो उसकी ओर देखता हुआ मुस्करा रहा था। उस खेल-तमाशे, हंसी-मजाक और लोगों के कोलाहल को विदीर्ण करती हुई वह मुसकराहट कोई गुप्त तथा भयानक अर्थ बता रही थी।

# बाईस

अभी हेस्टर प्राइन अपने मन को शांत कर, यह विचार भी न कर सकी थी कि ऐसी भयपूर्ण स्थिति में क्या करना उचित होगा कि साथ की गली में से आते हुए सैनिकों के बैण्ड-बाजे की संगीत-ध्वनि सुनाई दी। उससे पता लग गया कि दण्डाधीशों और नागरिकों का जलूस सभा-भवन के समीप पहुंच रहा है जहां बहुत पहले से स्थापित प्रथा के अनुसार श्री डिम्सडेल को निर्वाचन-संबंधी भाषण देना था।

बैंडवालों के पीछे-पीछे आनेवाले प्रतिष्ठित नागरिकों को देखकर विचारवान व्यक्ति का मन अनेक प्रकार की कल्पनाएं कर सकता था।

ब्रेडस्ट्रीट, एंडीकाट, डंडले, बेलिंगम तथा उस काल के उनके अन्य साथी राजनीतिज्ञों और दण्डाधीशों के बाद उस नवयुवक धार्मिक नेता का दर्जा आता था जिसके मुखारविंद से इस वार्षिक उत्सव पर धर्मोपदेश सुनने की आशा थी। एक उसी का कार्य ऐसा था जिसमें राजनीतिक जीवन की अपेक्षा कहीं अधिक प्रतिज्ञा का प्रदर्शन करना पड़ता था, क्योंकि यदि महान उद्देश्य की बात को न भी लिया जाए, तो भी इसके द्वारा केवल पूजापाठ के साधन द्वारा अत्यंत उच्च महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति की जा सकती है। एक सफल पादरी राजनीतिक शक्ति को भी हथिया सकता था।

जिन्होंने इस समय श्री डिम्सडेल को देखा था वे कहते थे कि जब से उसने न्यू इंग्लैण्ड की भूमि में कदम रखा था उसने कभी भी अपनी चाल में ऐसी ज्ञान-गरिमा और शक्ति नहीं दिखाई थी जो जलूस में चलते हुए उसके हाव-भाव से परिलक्षित हो रही थी।

हेस्टर प्राइन पादरी की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखती रही और तब अकस्मात् उसके मन पर भय की छाया-सी व्याप्त हो गई किन्तु उसे पता नहीं था कि इसका कारण क्या है। हां, उसे इतना अवश्य अनुभव हुआ कि पादरी किसी अन्य लोक का प्राणी है जहां वह नहीं पहुंच सकती। एक बार उसे ऐसा अनुभव हुआ कि पादरी ने उसकी ओर स्नेह-भरी दृष्टि डाली है। तब उसे उस घने वन और निर्जन घाटी की याद आई जहां प्रेम और



व्यथा का आदान-प्रदान हुआ था और जहां काई के ढेर पर बांहों में बाहें डाले उन्होंने झरने की दुःख भरी झर-झर में अपनी शोकग्रस्त तथा आवेशपूर्ण वार्ता के स्वर मिला दिए थे। उस दिन वे एक-दूसरे को कितना अधिक समझ सके थे। किन्तु आज तो वह उनके लिए स्वप्न-सा हो गया था। पादरी मधुर संगीत की ध्वनि में, नगर के प्रतिष्ठित अधिकारियों के साथ जलूस में आगे निकल गया। हेस्टर ने अनुभव किया कि इस संसार में उसका पद इतना ऊंचा है कि वह उसे नहीं पा सकती और उसके विचारों में भी इतनी विरक्ति है कि वे उसकी पहुंच से बाहर हैं। यह विचार आते ही कि उस महान आत्मा के साथ उसका संबंध भुलावा-मात्र था, उसका दिल बैठ गया और उसने अनुभव किया कि पादरी के साथ उसका कोई भी वास्तविक संबंध नहीं हो सकता। हेस्टर अपने नारी-सुलभ स्वभाव के अनुसार उसे कदापि क्षमा नहीं कर सकती थी—और विशेषतः इस समय जब भाग्य के आह्वान के गम्भीर स्वर उसके कानों में पड़ रहे थे—क्योंकि वह उनके सांझे संसार से बिलकुल बाहर निकल जाने का अपराधी था। इस स्वप्न में उसके हाथ पादरी को पकड़ लेने के लिए आगे बढ़े, किन्तु वहां किसी को न पा, उसे चेत हो गया।

या तो मां के हाव-भाव देखते हुए पर्ल के हृदय में वैसे ही भाव पैदा हो रहे थे या उसने स्वयं अनुभव किया कि पादरी उनसे कितना पृथक् हो गया है। जब जलूस गुजर रहा था तो बच्ची बहुत चंचल हो रही थी और उड़ने के प्रयत्न में फड़फड़ाते पक्षी के समान हिल-जुल रही थी।

"मां !" वह बोली, "क्या यह वही पादरी है जिसने मुझे झरने के तट पर प्यार किया था ?"

"मेरी प्यारी नन्हीं पर्ल, चुप रहो," हेस्टर ने उसके कान में कहा, "वन में जो भी बात हुई है वह हमें बाजार में नहीं कहनी चाहिए।"

"मुझे यह निश्चय नहीं होता था कि यह वही है, वह इतना बदल गया है !" बच्ची कहने लगी, "नहीं तो मैं भागकर उसके पास चली जाती और उससे प्यार करने के लिए कहती जैसा उसने उन घने वृक्षों की छाया में किया था। मां, यदि मैं उसके पास चली जाती तो वह क्या कहता? क्या

वह हृदय पर हाथ रखकर नाक-भौं चढ़ाता और मुझे दूर भाग जाने के लिए कहता ?''

''पर्ल ! वह कुछ भी कहता,'' हेस्टर ने उत्तर दिया, ''किन्तु यह चुम्बन का अवसर नहीं था क्योंकि बाजार में चुम्बन नहीं लिया जाता। तुमने अच्छा किया मूर्ख बच्ची कि तुम उससे बोली नहीं।''

एक और व्यक्ति ने श्री डिम्सडेल के विषय में इसी प्रकार का भाव व्यक्त किया जो अपनी सनक के कारण—या उसे पागलपन ही कहना चाहिए—ऐसी बातें कह दिया करती थी जिसका साधारण नगरवासियों को साहस भी नहीं होता था। वह खुलेआम उस रक्तिम अक्षरधारिणी से बातें करने लगी। वह थी मिस्ट्रेट हिबिन्स। उसने बहुत भड़कीले काले वस्त्र पहन रखे थे। गले में झालरदार गुलूबन्द लगाए और वेल्वेट का गुलूबन्द पहने हुए वह जलूस देखने के लिए आई थी। क्योंकि यह बुढ़िया जादू के कामों में प्रवीण मानी जाती थी और इसकी ख्याति इस काम में बहुत अधिक थी (जिसके लिए कालान्तर में उसे अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा था), अतः भीड़ के लोगों ने, जो उसके वस्त्रों के स्पर्श-मात्र से भी इस तरह घबराते थे जैसे उनमें प्लेग कीटाणु हों, उसके लिए रास्ता छोड़ दिया। जब लोगों ने उसे हेस्टर के पास देखा—जिसके प्रति उनके हृदयों में सहानुभूति के भाव पैदा हो चुके थे—तो उनका भय और भी अधिक बढ़ गया और वे उस स्थान को छोड़कर, जहां वे दोनों खड़ी थीं, दूर जाने लगे।

उसने हेस्टर को गुप्त रूप से धीमे स्वर में कहा, ''अब कौन व्यक्ति यह कल्पना भी कर सकता है कि वह देवतुल्य व्यक्ति जिसे लोग संत मानते हैं—और मुझे कहना भी चाहिए, वह ऐसा दिखाई भी देता है—और जिन्होंने उसे अभी जलूस में जाते हुए देखा है उनमें कौन यह अनुमान लगा सकता है—थोड़ी देर पहले अपने अध्ययन कक्ष से निकलकर बाइबल में से हिब्रू भाषा के कुछ यन्त्र गुनगुनाता हुआ वन की ओर सैर करने गया था। ओह ! हमें पता है इसका क्या मतलब है। परन्तु यह इतना बदल गया है कि मुझे विश्वास नहीं होता कि यह वही आदमी है। यहां बैंड के पीछे-पीछे जाते हुए पादरियों में से मैंने कइयों को पहचाना है। उन सबने मेरे साथ नृत्य



किया है। वहां इनमें से किसी ने वायलिन बजाया था, किसी ने इंडियन पीं-पौं बाजा और किसी ने जादू के काम में हमारा हाथ बंटाया था। मेरे लिए यह सब जान लेना मामूली-सी बात है, क्योंकि मैंने दुनिया देखी है। किन्तु हेस्टर, क्या तुम निश्चय से बता सकती हो कि पह पादरी वही व्यक्ति है जो तुम्हें वन-मार्ग में मिला था ?''

''महोदया, मुझे पता नहीं, तुम क्या कह रही हो,'' हेस्टर प्राइन ने यह अनुभव करते हुए कि वह पागल है किन्तु साथ ही इस बात पर अत्यन्त आश्चर्यचकित होकर कि इसका इतने लोगों के साथ, और उसके साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध है, कहा, ''मैं तो डिम्सडेल जैसे विद्वान और धर्मपरायण पादरी के बारे में ऐसी तुच्छ बात नहीं कह सकती।''

''यह क्या कहती हो, नारी ?'' बुढ़िया ने हेस्टर की ओर अंगुली हिलाते हुए कहा, ''क्या तुम समझती हो कि वन में इतनी बार हो आने पर भी मैं यह पहचानने में दक्ष नहीं हुई कि वहां कौन-कौन हो आया है ? उन्होंने नाचते हुए जिन जंगली फूलों का हार पहना वे अब भले ही उनके बालों में नहीं रहे। मैं तुम्हें जानती हूं हेस्टर, क्योंकि मैं तुम्हारा चिह्न देख रही हूं। धूप में तो हम सब इसे देख ही सकते हैं किन्तु रात के अंधेरे में तो यह अग्निशिखा की तरह चमकने लगता है। तुम तो इसे खुलेआम पहनती हो इसलिए इसके बारे में कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता। परन्तु पर पादरी...आओ, मैं तुम्हें कान में बताती हूं—जब ब्लैकमैन देखता है कि उसके सेवक, जिन्होंने हस्ताक्षर करके चिह्न अंकित करवा लिया है, अपनी वचनवद्धता को स्वीकार करने से घबराते हैं तो यह आदेश देता है कि एक दिन वह चिह्न दिन के उजाले में समस्त लोगों के सामने खोला जाएगा। आखिर वह क्या चीज है जिसे यह पादरी हृदय पर हाथ रखकर छिपाता है ? ओ ! हेस्टर प्राइन !''

''मिस्ट्रेस हिबिन्स, तुम्हीं बताओ, वह क्या है ?'' नन्ही पर्ल ने उत्सुकता से पूछा, ''क्या तुमने इसे देखा है ?''

''कोई बात नहीं प्यारी बच्ची,'' पर्ल को झुककर अभिवादन करते हुए हिबिन्स ने उत्तर दिया, '' एक न एक दिन तुम स्वयं इसे देख लोगी। लोग

कहते हैं कि तुम पवन के राजा की सन्तान हो। क्या तुम किसी रात मेरे साथ उड़ते हुए अपने पिता को देखने चलोगी ? तब तुम्हें पता लग जाएगा कि पादरी अपने हृदय पर हाथ क्यों रखता है।''

फिर वह इतने जोर से हंसी कि बाजार की सारी भीड़ ने उसे सुना और तब उस महिला ने विदा ली।

इस समय सभा की प्रारम्भिक प्रार्थना हो चुकी थी। पादरी ने अपना भाषण आरम्भ कर दिया था और उसकी आवाज सुनाई दे रही थी। हेस्टर हृदय की एक तीव्र आकांक्षा से बाध्य होकर उसी स्थान पर खड़ी रही। सभा के पवित्र भवन में इतनी अधिक भीड़ थी कि उसमें कोई प्रवेश नहीं कर सकता था। इसलिए हेस्टर दंडमंच के समीप ही खड़ी हो गई। तो भी वह इतनी समीप थी कि पादरी का सारा भाषण और वाक्प्रवाह एक अस्पष्ट-सी गुनगुनाहट के रूप में उसके कानों में पड़ सकता था।

गिरजाघर की दीवारों के साथ टकराकर आती हुई वह ध्वनि अस्पष्ट हो जाती थी, किन्तु हेस्टर प्राइन उसे बहुत एकाग्र मन से सुन रही थी और उससे इतना अधिक प्रभावित हो रही थी कि उसके अस्पष्ट शब्दों से सर्वथा भिन्न अर्थ उसकी समझ में आ रहा था। शायद यदि वह उन शब्दों को और अधिक स्पष्ट रूप में सुन सकती तो उनकी आध्यात्मिक भावना क्षीण हो जाती। कभी उसे यह ध्वनि धीमी होती हुई सुनाई देती और उसे प्रतीत होता कि स्वर शान्त हो रहे हैं। फिर स्वरों में एक चढ़ाव पैदा होता और उनका माधुर्य तथा शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती चली जाती। यहां तक कि वह उनसे पैदा हुए आतंक तथा गाम्भीर्य के वातावरण से पूर्णतः आवेष्टित हो जाती। कभी-कभी वह ध्वनि गरिमापूर्ण हो जाती किन्तु उसमें शोक की दुःखद भावना सदैव विद्यमान रहती थी। उसे ऐसा प्रतीत होता मानो प्रत्येक हृदय को आलोड़ित करनेवाली व्यथा की भावना पीड़ित मानवता के अंतस् से धीमे शब्दों अथवा चीख के रूप में प्रस्फुटित हो रही है। कभी उसे उस वाणी में भावुकता का प्रवाह सुनाई देता जिसे वह सुन न पाती। ऐसा लगता जैसे किसी ने ठंडी सांस ली है और उसके पश्चात् नीरवता का वातावरण छा गया है। किन्तु जब कभी पादरी की आवाज ऊंची होती और एक



आवेशपूर्ण वाक्प्रवाह चारों दिशाओं में फैल जाता तथा गिरजाघर की ठोस दीवारें उस ध्वनि से गूंजने लगतीं उस समय भी हेस्टर एकाग्र मन से उसे सुनती रहती और उसे यही पता लगता कि कोई तीव्र पीड़ा में चिल्ला रहा है। यह क्या था? क्या ऐसे मानव-हृदय की, जो व्यथित है, अपराधी है, यह शिकायत है? क्या वह हृदय अपराध या दुःख की गुप्त बात मानवता के उदार हृदय को सुना रहा है और उससे सहानुभूति या क्षमा के लिए प्रार्थना कर रहा है। इस प्रयत्न में वह कितना सफल था। धीमे स्वर में पादरी जिस भावुकता को अभिव्यक्त कर रहा था वह अत्यधिक प्रभावपूर्ण थी।

इस सारे समय में हेस्टर उस दंडमंच के नीचे मूर्तिवत् खड़ी रही। यदि उसे वहां पादरी की आवाज सुनाई न देती तो यही समझा जाता कि जिस स्थान से उसका कलंकित जीवन आरंभ हुआ था उसमें कोई विशेष चुम्बकीय शक्ति थी। उसके मन में एक भाव था—जो इतना अस्पष्ट था कि उसे विचार नहीं कहा जा सकता किन्तु उस पर उसका गहरा प्रभाव था—कि उसके लांछन के पूर्व का तथा बाद का जीवन इसी स्थान से सम्बन्धित था जिस प्रकार उसका समस्त जीवन एक विशेष घटना से शृंखलाबद्ध हुआ था।

इस बीच में नन्ही पर्ल मां को छोड़कर चली गई थी और बाजार में खेल रही थी। जिस प्रकार एक पक्षी वृक्ष पर फुदकते हुए पत्तों की धुंधली छाया में कभी छिपकर, कभी बाहर निकलकर अपने चमकीले परों से वृक्ष को कान्ति प्रदान कर देता है, उसी प्रकार पर्ल अपने उल्लास की प्रखर किरणों से उस गंभीर मुद्रावाली भीड़ को कभी-कभी प्रसन्न कर देती थी। वह इधर-उधर उछल-कूद रही थी जिससे उसकी चपल प्रकृति का पता चलता था। आज तो पर्ल नाच में इतनी मग्न थी कि वह थकती ही न थी क्योंकि उसका नृत्य शान्त भाव से खड़ी मां की आकृति पर लक्षित भावनाओं के आवेगपूर्ण ताल पर हो रहा था। जब कभी पर्ल किसी वस्तु की ओर आकर्षित होती तो वह दौड़कर उस ओर जाती और उस व्यक्ति या वस्तु को अधिकारपूर्ण ढंग से पकड़ लेती जैसे वह उसकी मालिक हो

किन्तु वह अपनी भावनाओं पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण बनाए रखती। कभी-कभी प्यूरिटन उसकी ओर देखकर हंसते हुए कहते कि यह अवर्णनीय सौन्दर्य की प्रतिमा तथा मूर्तिमन्त चपला शैतान की बच्ची है। वह भागी हुई गई और जंगली इंडियन के चेहरे की ओर देखने लगी, तब इंडियन को ऐसा आभास हुआ मानो इस बच्ची में उनसे भी अधिक जंगलीपन हो। अपने स्वाभाविक साहस तथा सहज गंभीरता के साथ वह नाविकों के मध्य में जा खड़ी हुई जो इंडियनों की तरह बर्बर लोग थे। वे बड़े आश्चर्य तथा प्रशंसापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखने लगे और उन्हें ऐसा लगा मानो सागर की झाग एक नन्ही-सी परी के रूप में उनके सामने आ गई है या रात्रि के समय लहरों के नीचे चमकनेवाली अग्नि एक शिखा का रूप धारणकर उन्हें वरदान-स्वरूप मिल गई है।

जहाज का एक कमांडर, जो अभी हेस्टर को मिला था, पर्ल के सौन्दर्य से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसे पकड़कर उसका चुम्बन लेना चाहा किन्तु उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वायु में उड़नेवाले पक्षी की तरह वह इस बच्ची को भी नहीं पकड़ सकता, अतः उसने अपने हैट पर से सोने की जंजीर उतारी और बच्ची की ओर फेंक दी। पर्ल ने तुरंत उसे गर्दन और कमर में लपेट लिया। ऐसा लगता था कि यह उसी की है और यह सदा से उसे पहने हुए है।

"तुम्हारी मां वही रक्तिम अक्षरधारिणी स्त्री है न ?" कमांडर ने कहा, "क्या तुम उसके पास मेरा सन्देश ले जाओगी ?"

"यदि सन्देश से मैं प्रसन्न हुई तो अवश्य ले जाऊंगी।" पर्ल ने उत्तर दिया।

वह बोला, "तो उसे बता दो कि मैंने पुनः कल काली आकृतिवाले तथा ऊंचे कन्धोंवाले बूढ़े चिकित्सक से बातचीत की है और वह कहता है कि वह अपने मित्र को अपने साथ जहाज पर ले जाएगा, इसलिए तुम्हारी मां को और किसी की चिन्ता नहीं करनी चाहिए अपितु तुम्हें लेकर स्वयं पहुंच जाना चाहिए। मायाविनी बच्ची, क्या तुम यह बात अपनी मां से जाकर कह दोगी ?"



"मिस्ट्रेस हिबिन्स कहती है कि मेरा पिता पवन का राजा है।" पर्ल ने शरारत-भरी हंसी के साथ कहा, "यदि तुम मुझे ऐसे नाम से पुकारोगे तो मैं तुम्हारे बारे में उससे कह दूंगी। और वह तूफान लेकर तुम्हारे जहाज का पीछा करेगा।"

बाजार के टेढ़े-मेढ़े रास्ते से होती हुई बच्ची मां के पास पहुंची और नाविक ने जो कुछ कहा था उसे बता दिया। आनेवाले दुर्भाग्य की बात सोचकर उस सुदृढ़, शान्त तथा धैर्यवान हेस्टर का हृदय भी बैठने लगा। उसे ऐसा लगा कि जब पादरी और उसके लिए विपत्तियों में से निकलने का मार्ग खुला है उसी समय मृत्यु निर्दयतापूर्ण ढंग से मुसकराती हुई उनके सामने आ खड़ी हुई है।

कमांडर से जो संदेश आया था उसे सुनकर उसका मन बहुत भयभीत और उलझन में तो था ही तभी उसके सामने एक और विपत्ति आ खड़ी हुई। आसपास के गांवों के बहुत-से लोग वहां आए हुए थे जिन्होंने 'रक्तिम अक्षर' के बारे में अनेक भयानक किंवदन्तियां सुन रखी थीं किन्तु उन्होंने स्वयं इसे नहीं देखा था। जब अन्य मनोरंजन के साधन समाप्त हो गए तो वे बड़े गंवारू ढंग से उसके चारों ओर एकत्र हो गए और कुछ दूरी पर एक घेरा-सा बना लिया। उस रहस्यपूर्ण चिह्न से चारों ओर ऐसी घृणा फैल रही थी जिसके कारण उन लोगों तथा हेस्टर के बीच यह अन्तर बना हुआ था। नाविकों ने भी दर्शकों को वहां एकत्र हुआ देखा और 'रक्तिम अक्षर' का अर्थ किसी से जान लिया तो वे भी वहां आकर घेरे को चीरकर आगे बढ़ आए और उसे घूर-घूरकर देखने लगे। शान्त तथा भयभीत खड़े गोरे दर्शकों की उत्सुकता देखकर इंडियन भी बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने भीड़ से निकलकर अपनी सांप जैसी तीखी नजरें हेस्टर पर गड़ा दीं। वे यही समझ रहे थे कि इतनी सुन्दर कढ़ाईवाला चिह्न धारण किए यह स्त्री अवश्य कोई प्रतिष्ठित महिला है। अन्त में उसके अपने नगरवासी (जिनकी अभिरुचि इस विषय में समाप्त हो चुकी थी और अब लोगों को इस ओर आकर्षित देखकर पुनः जागृत हो गई) उसी भीड़ के साथ इतस्ततः एकत्र हो गए। अन्य लोगों की अपेक्षा इनकी मौन तथा क्रूर दृष्टि से वह और

भी अधिक व्यथित हो रही थी। हेस्टर ने उन प्रचारिकाओं के चेहरे पहचान लिए जो सात वर्ष पूर्व उसे देखने के लिए जेलद्वार के बाहर खड़ी थीं। उनमें सबसे छोटी एक प्रचारिका दिखाई नहीं दी जिसकी मृत्यु हो चुकी थी और हेस्टर ने ही उसके मृत्युकालीन वस्त्र बनाए थे। इस अन्तिम समय में जब वह इस अग्नि-स्फुल्लिग-से चिह्न को उतार फेंकनेवाली थी, लोग उसकी ओर इस विचित्र ढंग से आकर्षित हो गए और हेस्टर का हृदय विदीर्ण होने लगा। उसे इतनी पीड़ा कभी नहीं हुई थी सिवाय उस दिन के जब पहले-पहल उसे यह चिह्न पहनाया गया था।

जब हेस्टर लांछन के जादू-भरे इस घेरे में खड़ी थी, जहां उसको इस अमानुषिक दंड ने सदा के लिए खड़ा कर दिया था, उस समय उस प्रतिष्ठित पादरी ने पवित्र मंच से, नीचे इस भीड़ की ओर देखा, जिसकी आत्मा उसके भाषण से अभिभूत थी। यों वह संत पादरी गिरजाघर में खड़ा था और वह रक्तिम अक्षरधारिणी स्त्री बाजार में खड़ी थी। पादरी के प्रति असम्मान की भावना लेकर कौन कल्पना कर सकता था कि यह साल देनेवाला चिह्न उन दोनों पर अंकित है।

## तेईस

वह भव्य वाणी, जिसे सुननेवालों की आत्माएं सागर की उठती हुई लहरों के समान ऊपर उभर रही थीं, शान्त हो गई। क्षण-मात्र के लिए नीरवता छा गई जो प्रायः ऐसे धर्मोपदेश के बाद पैदा होना स्वाभाविक ही है। तत्पश्चात् भीड़ में कुछ गुनगुनाहट आरम्भ हुई, जो धीमे-धीमे एक कोलाहल में परिवर्तित हो गई।

क्षण-भर बाद भीड़ गिरजाघर से बाहर निकलने लगी। खुली हवा में आकर वे आपस में बातचीत करने लगे। बाज़ार और गली पादरी की प्रशंसा से भर गए। उनको सुननेवाले एक-दूसरे को बड़ी उत्सुकता से बताते थे कि वे एक-दूसरे से अधिक उसके भाषण को समझ सके हैं परन्तु उसको बता



नहीं सकते। सभी का यह मत था कि जैसा महान, विद्वत्तापूर्ण तथा आध्यात्मिकतायुक्त भाषण इसने दिया था वैसा आज तक किसी ने नहीं दिया।

इस प्रकार आदरणीय डिम्सडेल के लिए जीवन का वह विजयपूर्ण और भव्य भाग उसे प्राप्त हो रहा था—जैसा कि बहुत-से लोगों को अनेक क्षेत्रों में प्राप्त होता है किन्तु वे उसके बीत जाने पर ही उसे पहचान पाते हैं—जो उसे पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ था और न ही जिसके पुनः प्राप्त होने की आशा ही थी। इस समय उसे वह महान और उच्च पद प्राप्त हुआ था जिस पर कोई पादरी अपनी प्रतिभा, ज्ञान, मधुर भाषण और सच्चरित्रता के गुणों के द्वारा ही आरूढ़ हो सकता था। निर्वाचन के भाषण की समाप्ति पर मंच के गद्दे पर सिर टेके हुए उस पादरी का स्थान इतना ऊंचा था जबकि हेस्टर प्राइन दंडमंच के पास खड़ी थी और उसकी छाती पर 'रक्तिम अक्षर' उसे अंगारों की तरह जला रहा था।

अब गिरजाघर के दरवाजे से सैनिकों की टुकड़ी निकलती दिखाई दी और बैंड की आवाज़ सुनाई देने लगी। जलूस को अब वापस टाउन हाल जाना था जहां सहभोज के पश्चात् यह उत्सव समाप्त होता।

पुनः लोगों के बीच चौड़े मार्ग में सम्मानित पादरी आते हुए दिखाई दिए और उनके साथ ही गवर्नर, दण्डाधीश तथा अन्य विख्यात और प्रतिष्ठित लोग आगे बढ़ रहे थे और लोगों की भीड़ उनके लिए रास्ता छोड़ रही थी।

उसके पादरी बन्धुओं में से एक ने, वह आदरणीय जॉन विल्सन ही था, यह देखकर कि श्री डिम्सडेल की हालत बहुत बुरी है, उसे सहारा दिया। पादरी ने कांपते हुए किन्तु दृढ़ भाव से उस बूढ़े के हाथ को परे हटा दिया। वह इस प्रकार आगे बढ़ रहा था जैसे कोई अपनी मां की खुली बांहों को सामने देखकर लड़खड़ाता हुआ उस ओर जा रहा हो। अत्यन्त मन्द गति से चलते हुए वह उस दंडमंच के समीप पहुंच गया जहां हेस्टर प्राइन लोगों की घृणापूर्ण दृष्टियों से घिरी हुई खड़ी थी। पर्ल ने उसका हाथ थामा हुआ था और 'रक्तिम अक्षर' उसकी छाती पर चमक रहा था। यहां आकर पादरी

रुक गया—यद्यपि बैंड का संगीत आगे बढ़ने का आह्वान कर रहा था—वह उसे आनंदोत्सव के लिए बुला रहा था किन्तु पादरी वहीं रुक गया।

पिछले कुछ क्षणों से बेलिंगम चिन्तित भाव से उसकी ओर देख रहा था। अब उसने जलूस में अपना स्थान छोड़ दिया और डिम्सडेल की सहायता के लिए आगे बढ़ा। उसे ऐसा लगा कि पादरी अवश्य गिर पड़ेगा, किन्तु पादरी की भाव-मुद्रा में ऐसी बात थी कि दंडाधीश फिर पीछे हट गया। लोग समझते थे कि पादरी की यह बेहोशी की सी स्थिति उसकी उच्च आध्यात्मिक स्थिति का ही प्रतीक है।

वह दंडमंच की ओर मुड़ा और उसने अपने हाथ फैला दिए।

"हेस्टर," उसने कहा, "इधर आओ—नन्ही पर्ल, इधर आओ !"

उसकी दृष्टि में भय की कालिमा छाई हुई थी, किन्तु साथ ही एक स्नेह और विजय का भाव भी लक्षित हो रहा था। बच्ची अपने भाव से प्रेरित होकर पक्षी के समान उड़ती हुई उसके पास पहुंच गई और घुटनों से लिपट गई। हेस्टर प्राइन भी धीरे-धीरे अपनी इच्छा के विरुद्ध, भाग्य के बन्धन में बंधी हुई उसके समीप आ गई; किन्तु उस तक पहुंचने से पहले ही वह रुक गई। उसी समय बूढ़ा चिलिंगवर्थ भीड़ को चीरता हुआ वहां पहुंच गया—अथवा उसकी घबराई हुई भयपूर्ण दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता था कि रसातल से निकलकर आया है—और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह शिकार पर झपटना चाहता है। उस बूढ़े ने आगे बढ़कर पादरी का हाथ पकड़ लिया।

"पागल—रुक जाओ—तुम्हारा क्या प्रयोजन है ?" उसने धीमे से कहा, "इस स्त्री को पीछे हटा दो—इस बच्ची को छोड़ दो—बस सब ठीक हो जाएगा—अपनी ख्याति पर धब्बा न लगाओ और अपमान से अपना अन्त न करो। मैं तुम्हें अब भी बचा सकता हूं। क्या तुम अपने पवित्र व्यवसाय पर कलंक का टीका लगाना चाहते हो ?"

"ओह ! प्रलोभन देने वाले ! अब तुम कुछ नहीं कर सकते ! पादरी ने भयपूर्ण किन्तु दृढ़ भाव से उसकी दृष्टि में दृष्टि डालते हुए कहा, "अब तुममें वह शक्ति नहीं रही जो कभी थी, अब तो ईश्वर की सहायता से



मैं तुमसे छुटकारा पा जाऊंगा।"

उसने उस रक्तिम अक्षरधारिणी स्त्री की ओर हाथ फैला दिए।

"हेस्टर प्राइन !" पादरी ने सद्भावनापूर्ण ऊंचे स्वर से कहा, "उस भगवान के नाम पर—जो लोगों को दण्ड देता है और साथ ही इतना दयालु है कि उसने मुझे अन्तिम समय वह कार्य करने का साहस दिया है—मुझे अपने पाप तथा व्यथा से मुक्त करने के लिए, जिसे मैं सात वर्ष पूर्व नहीं कर सका था, अब मेरे पास चली आओ और मुझे अपनी शक्ति का आश्रय प्रदान करो। हेस्टर, मेरा कहना मान जाओ ! भगवान ने मुझे यही पथ दर्शाया है। यह पापी और चोट खाया हुआ व्यक्ति पूरी शक्ति से भगवान के आदिष्ट कार्य में बाधा पैदा कर रहा है। यह शैतान है ! हेस्टर आओ, और मुझे सहारा देकर उस दंडमंच तक पहुंचा दो !"

भीड़ में शोर आरम्भ हो गया। जो प्रतिष्ठित लोग पादरी के पास खड़े थे, वे आश्चर्यचकित हो गए। उन्हें इस दृश्य की बात समझ में नहीं आ रही थी—या इसे देखकर जो बात उनके मन में आती थी उसे मानने को वे तैयार न थे, अथवा उससे भिन्न कल्पना भी न कर सकते थे। अतः वे इस प्रकार खड़े रहे जैसे विधाता के न्यायालय में दर्शक खड़े हों। उन्होंने देखा, पादरी हेस्टर के कन्धों पर झुक गया था और हेस्टर ने उसकी कमर में हाथ डालकर उसे दंडमंच तक पहुंचाया। उस समय 'कलुषित पाप' की सृष्टि वह बालिका पादरी का हाथ पकड़े हुए थी। चिलिंगवर्थ उनके पीछे-पीछे चल रहा था। लगता था, इस पाप और दुःख के नाटक में वे सभी अभिनेता थे। इसलिए इस अन्तिम दृश्य में उन सबकी उपस्थिति आवश्यक थी।

"तुम सारी पृथ्वी पर कहीं भी चले जाते," चिकित्सक ने पादरी की ओर गहरी दृष्टि डालते हुए कहा, "कोई भी स्थान इतना गुप्त नहीं था—पहाड़ों के शिखर पर अथवा सागर के तल में भी तुम कहीं पर भी मुझसे छिप नहीं सकते थे-किन्तु यह दंडमंच ही उन सब स्थानों से गुप्त है, जहां तुम मुझसे बच सकते हो।"

"उस ईश्वर का धन्यवाद है जिसने मुझे यह मार्ग दिखाया है।" पादरी

ने उत्तर दिया।

अब भी वह कांप रहा था। उसने आतुर और शंकापूर्ण दृष्टि से हेस्टर की ओर देखा और उसके होंठों पर एक हलकी-सी मुसकान खिल गई।

"क्या यह अधिक अच्छा नहीं?" वह धीमे से बोला, "वन में हमने जो स्वप्न देखा था उससे तो यह कहीं अच्छा है।"

"मैं नहीं जानती, मुझे पता नहीं !" हेस्टर ने तुरन्त जवाब दिया, "शायद अच्छा है, हम दोनों को ही मर जाना चाहिए और हमारे साथ इस नन्ही पर्ल को भी।"

"तुम्हारे और पर्ल के लिए—ईश्वर जैसा करे वैसा हो !" पादरी ने उत्तर दिया, "भगवान दयालु है। अब मुझे उसकी इच्छा का पालन करना है जो उसने मुझे स्पष्ट बता दी है। हेस्टर, मैं मर रहा हूं इसलिए शीघ्र ही मुझे यह अपमान का टीका अपने ऊपर ले लेना है।"

हेस्टर प्राइन का सहारा लिए हुए और नन्ही पर्ल का हाथ पकड़े हुए डिम्सडेल ने प्रतिष्ठित लोगों, सम्मानित शासकों, अपने बन्धु धर्मपरायण पादरियों और त्रसित जनता की ओर देखा जिनके हृदय दया से भरकर रो रहे थे क्योंकि उन्हें ऐसा आभास मिल रहा था कि इस बात में चाहे कितना ही पाप हो, किन्तु व्यथा और पश्चाताप की उत्कट भावनाएं उसमें विद्यमान हैं। सूर्य की किरणें पादरी के चेहरे पर पड़ रही थी जबकि वह विधाता के अनन्त न्याय की प्राप्ति के लिए अपना अपराध स्वीकार करने के हेतु उस मंच पर खड़ा था।

"न्यू इंगलैण्ड के वासियो !" उसने ऐसी गम्भीर वाणी में कहा कि प्रतीत होता था कि दुःख और पीड़ा के गर्त में से एक चीख निकल रही है, "तुमने मुझसे प्यार किया है," तुमने मुझे पवित्र समझा है, मुझे यहां देखो, मैं भी संसार के पापियों में से एक हूं, मैं आखिर उसी स्थान पर आ खड़ा हुआ हूं जहां मुझे सात वर्ष पूर्व खड़े होना चाहिए था। यह स्त्री, जिसकी शक्ति के सहारे मैं यहां पहुंचा हूं, मुझे इस भयानक समय में मुंह के बल गिरने से बचा रही है। देखो, यह उसका रक्तिम अक्षर है। इसे देखकर तुम डर जाया करते थे। इस कलंक का भार लिए हुए वह जहां कहीं भी आश्रय



पाने की आशा में जाया करती, इस अक्षर के चहुं ओर घृणा की कालिमा छा जाती और उसे उस अन्धकार में कोई रास्ता न सूझता था, किन्तु तुम्हारे बीच ही एक और आदमी ऐसा था जिस पर पाप और लांछन का चिह्न अंकित था किन्तु तुम उससे डरते नहीं थे।"

इस समय ऐसा प्रतीत हुआ कि पादरी का शेष रहस्य गुप्त ही रह जाएगा किन्तु अत्यन्त दुर्बल होते हुए भी उसने प्रयास किया और जो बेहोशी उस पर छा रही थी उस पर काबू पाते हुए वह बहुत आवेश में उस स्त्री तथा बच्चे से एक कदम आगे जाकर खड़ा हो गया।

"किन्तु उसे..." वह सारी बात कह देने के लिए इतना आतुर था कि उसने अत्यन्त दृढ़ प्रयास से बात जारी रखी और कहा, "...उसे भगवान तो देखता था, देवता सदा उसकी ओर संकेत करते रहते थे। शैतान भी जानता था और वह सदा अपनी अग्निशिखा-सी ज्वलन्त उंगली से उसे झुलसाता रहता था किन्तु उस आदमी ने बड़ी चतुराई से अपने पाप को तुम लोगों से छिपाए रखा और अपवित्र तथा दुखी आत्मा लिए विधाता की दया से वंचित वह आप लोगों में घूमता रहा। अब मृत्यु के समय वह आपके सामने खड़ा है। वह आपसे निवेदन करता है कि हेस्टर के 'रक्तिम अक्षर' की ओर देखो। वह आपको बता रहा है कि इस अक्षर की रहस्यपूर्ण भयानकता उसकी अपनी छाती के लाल निशान की छाया से अधिक कुछ भी नहीं है और वह अक्षर इस निशान के समान ही है जो इस व्यक्ति के हृदय को सदा विदीर्ण करता रहा है। क्या यहां कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे भगवान के न्याय पर अविश्वास है। देखो, देखो, भगवान के न्याय का यह भयावह दृश्य आपके सामने है !"

उसने झुंझलाहट में अपनी छाती पर लगे हुए पादरी-पद के चिह्न को उतार फेंका। उस समय जो दिखाई दिया उसका वर्णन करना अपमानपूर्ण होगा। क्षण-भर के लिए भयभीत लोगों की दृष्टि उस भयानक चमत्कार की ओर लगी रही और पादरी चेहरे पर विजय की रक्तिमा लिए उस व्यक्ति के समान खड़ा था जिसने पीड़ा में उस विजय को प्राप्त किया था। फिर वह दण्डमंच पर नीचे बैठ गया। हेस्टर ने उसे थोड़ा-सा ऊपर उठाया और

उसका सिर अपनी छाती पर रख लिया। बूढ़ा चिलिंगवर्थ पादरी के ऊपर झुका खड़ा था और उसकी आकृति सर्वथा चेतनारहित दिखाई देती थी।

''तुम मुझसे बच निकले हो !'' उसने बार-बार कहा, ''तुम मुझसे बच निकले हो।''

"ईश्वर तुम्हें क्षमा करे !" पादरी ने कहा, "तुमने घोर पाप किया है !"

मरते हुए पादरी ने उस बूढ़े आदमी से अपनी आंखें फेर लीं और वह उस स्त्री और बच्ची को देखने लगा। "मेरी नन्ही पर्ल !" वह क्षीण आवाज़ में बोला। उसके चेहरे पर मधुर मुसकान थी। लगता था उसकी आत्मा गहरी शांति के प्रदेश में पहुंच रही है या अब दिल का भार दूर हो जाने पर वह बच्ची के साथ खेलना चाहता है, ''प्यारी नन्हीं पर्ल, क्या तुम मेरा प्यार लोगी ? उस वन में तो तुमने नहीं लिया था किन्तु अब तो तुम अवश्य ऐसा करोगी।''

पर्ल ने उसके होंठ चूम लिए। अब दो हृदयों के संबंध जुड़ गए थे—प्रेम और सहानुभूति से अभिज्ञ बालिका के हृदय में समस्त सहानुभूति जागृत हो उठी थी और बाप के गाल पर पड़नेवाले उसके आंसू मानो यह आश्वासन दे रहे थे कि वह जगत् के दुःख-सुख का मुकाबला करती हुई आगे बढ़ेगी और एक महान महिला बनेगी; जन्म से ही पर्ल मां के लिए जो व्यथा का संदेश लेकर आई थी वह आज पूर्ण हो गया।

''हेस्टर !'' पादरी ने कहा, ''अब विदा।''

''क्या हम फिर न मिलेंगे ?'' हेस्टर ने अपना मुंह उस पर झुकाते हुए कहा, ''क्या हम अपना अनश्वर जीवन इकट्ठे न गुज़ारेंगे ? निश्चय ही हमने अपनी व्यथा से अपने पापों का प्रायश्चित कर लिया है। तुम तो इस दृष्टि से, जिसका प्रकाश क्षीण हो रहा है, उस अनंत की ओर देख रहे हो। बताओ, तुम्हें वहां क्या दिखाई देता है।''

''चुप रहो हेस्टर !'' उसने कम्पित स्वर में कहा, ''हमने कानून का उल्लंघन किया था। हमारा वह पाप आज इस भयानक ढंग से खुल गया है कि इस बात को सदा ध्यान में रखो। हमने अवश्य भगवान को भुलाकर ही एक-दूसरे की आत्मा का अपमान किया था, इसलिए यह आशा करना



व्यर्थ है कि हम पुनः अनश्वर तथा पवित्र बंधन में बंध सकेंगे। भगवान जानता है, वह दयालु है। मुझे पीड़ा देते हुए भी उसने अपनी दया का प्रमाण दिया है। उसने मेरे हृदय को सालनेवाला उत्पीड़न प्रदान किया, किन्तु साथ ही इस भयानक बूढ़े को भी मेरे पास भेज दिया ताकि यह उत्पीड़न तीखा रहे और मैं अपनी कुख्यात विजय के साथ यहां इस प्रकार मर सकूं। यदि मुझे इतनी व्यथा न मिलती तो मैं अपना रास्ता खो बैठता। धन्य है वह भगवान ! उसका आदेश पूरा हो। अब...विदा !''

इन शब्दों के साथ पादरी के प्राण निकल गए। अब तक जो भीड़ शांत भाव से खड़ी थी उसमें भय और आश्चर्य की गहरी भावनाएं व्याप्त थीं जो पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं हो रही थीं—किन्तु स्वर्गवासी आत्मा के प्रति अत्यन्त दुःख के भार से दबी हुई थीं।

## चौबीस

उस घटना को हुए बहुत दिन बीत गए थे। दंडमंच पर लोगों ने जो दृश्य देखा था उसके संबंध में अनेक धारणाएं फैल गई थीं।

बहुत-से दर्शक निश्चयपूर्वक यह कहते थे कि हेस्टर प्राइन जिस प्रकार का 'रक्तिम अक्षर' धारण किए हुए है वैसा ही उन्होंने उस अभागे पादरी के शरीर पर अंकित देखा था। वह चिह्न वहां कैसे बन गया इसके बारे में अलग-अलग धारणाएं थीं जो सबकी सब काल्पनिक थीं। कुछ का कहना था कि जिस दिन हेस्टर प्राइन को वह लांछन का चिह्न पहनाया गया था उसी दिन से पादरी ने प्रायश्चित का अभ्यास करना शुरू कर दिया था और वह अनेक क्रूरतापूर्ण तरीकों से अपने-आपको दुःख दिया करता था। अन्य लोगों का यह कथन था कि हेस्टरप्राइन के अपमान के दृश्य के बहुत दिन बाद तक उसके हृदय पर ऐसा चिह्न पैदा नहीं हुआ था किन्तु जब जादूगर रोजर चिलिंगवर्थ ने उसका उपचार आरंभ किया तो उसने अपने जादू और विषैली औषधियों से वह चिह्न बना दिया। जिन लोगों को पादरी की

भावुकता का ज्ञान था और यह जानते थे कि किस प्रकार उसकी आत्मा उसके शरीर पर प्रभाव डाल रही थी, वे लोग धीमे स्वर में अपना विश्वास प्रकट किया करते थे कि पश्चात्ताप की तीक्ष्ण वेदना उसके अन्तस् को सालकर बाहर निकलती रही और अन्त में उसने विधाता के दंड की 'रक्तिम अक्षर' के रूप में उसके हृदय पर अंकित कर दिया। पाठक इन धारणाओं में से किसी पर भी विश्वास कर सकते हैं। हमने सभी ज्ञात बातों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है और अब इस बात पर बहुत अधिक विचार करने के पश्चात् हमारे हृदय पर जो भाव चित्रित हो गया है, उसे हम दूर कर देना चाहते हैं।

यह कितनी विचित्र बात है कि जिन लोगों ने श्री डिम्सडेल की मृत्यु के दृश्य को बहुत ध्यानपूर्वक देखा था वे यही कहते थे कि जिस प्रकार नवजात शिशु के शरीर पर कोई चिह्न नहीं होता उसी प्रकार डिम्सडेल के शरीर पर भी कोई निशान नहीं था। उनका यह भी कहना था कि डिम्सडेल ने मरणासन्न अवस्था में जो शब्द कहे थे उनमें उसने हेस्टर प्राइन के अपराध के साथ अपने किसी सम्बन्ध को स्वीकार नहीं किया था और न ही उन शब्दों में ऐसा कोई भाव लक्षित होता था। इन सम्मानित साक्षियों के मतानुसार पादरी को यह ज्ञात था कि वह मर रहा है और इस बात का भी पूरा ध्यान था कि लोगों ने उसे सम्मानित करके, उसको संतों और देवताओं की श्रेणी में खड़ा कर दिया था, अतः वह उस पतित नारी की गोद में अपनी अंतिम सांसें लेते हुए संसार को यह बताना चाहता था कि लोगों की पवित्रता सम्बन्धी धारणा कितनी तुच्छ है। उसने अपना सारा जीवन लोगों के आध्यात्मिक उत्थान के प्रयत्नों में व्यतीत कर दिया था, अतः उसने अपने प्रशंसकों को यह पाठ सिखाने के लिए कि आध्यात्मिक पवित्रता की दृष्टि से हम सभी पापी हैं, अपनी मृत्यु को भी आदर्शपूर्ण बना दिया था। वह लोगों को यह सिखाना चाहता था कि हममें जो सबसे अधिक पवित्र है, उसने वह स्थिति प्राप्त कर ली है, जहां से वह विधाता की दया को देख सकता है। उसकी दृष्टि में गुणों का सांसारिक मापदंड तुच्छ हो जाता है। इस सम्बन्ध में सत्य इतना महान था कि उस पर कोई विवाद



नहीं किया जा सकता था। डिम्सडेल के सम्बन्ध में जो गाथा प्रचलित हो गई थी वह लोगों की उसके प्रति श्रद्धा-भावना की परिचायक थी अतः वह तब तक प्रचलित रहेगी जब तक 'रक्तिम अक्षर' को प्रकाशित करनेवाली सूर्य की रश्मियां उनके कलुषित चरित्र का रहस्योद्घाटन न कर दें।

हमने जिस पाण्डुलिपि को इस गाथा का आधार बनाया है उसमें कुछ ऐसे लोगों के विचार व्यक्त किए गए हैं जो हेस्टर प्राइन को जानते थे और साथ ही अन्य ऐसे लोगों का साक्ष्य दिया गया है जिन्होंने उस काल के व्यक्तियों से यह गाथा सुनी थी। अभागे पादरी के अनुभव से हमने जो सीखा है वह इस एक वाक्य में व्यक्त किया जा सकता है :

"मनसा-वाचा-कर्मणा सत्य का प्रतिपादन करो, और मुक्त भाव से विश्व के सामने अपना स्वत्व प्रकट कर दो या कम से कम अपने स्वभाव का वह स्वरूप प्रत्यक्ष कर दो जिससे लोग तुम्हारे अन्तस् के तुच्छतमम का अनुमान लगा सकें।"

डिम्सडेल की मृत्यु के तुरन्त पश्चात् रोजर चिलिंगवर्थ के व्यवहार और आकृति में महान परिवर्तन हो गया था। ऐसा लगता था मानो उसकी समस्त शक्ति, स्फूर्ति और प्रतिमा समाप्त हो गई थी और मृत्यु के उस भयावह दृश्य ने उसकी प्राणशक्ति को सर्वथा क्षीण करके उसे सर्वथा निर्जीव बना दिया था। वह प्रतिकार के निरन्तर प्रयत्न को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना चुका था। जब यह लक्ष्य पूरा हो गया, उसने शत्रु से पूरा बदला ले लिया तो उसके पापपूर्ण सिद्धान्त के पनपने के लिए कोई सिद्धांत न रहा। दूसरे शब्दों में जब संसार में शैतान का कोई कार्य उसके लिए बाकी न रहा तो शैतान उसे उस स्थान की ओर ले चला जहां वह उसे पर्याप्त काम भी दे सकता था और पारिश्रमिक भी। किन्तु हमें अपने सब परिचितों के प्रति—जिनमें रोजर चिलिंगवर्थ और उनके साथी भी हैं और वे वस्तुतः छाया-मात्र ही है—दयाभाव रखना होगा। कितनी विचित्र बात है कि यदि हम भली प्रकार विश्लेषण करें तो यह पता लगेगा कि प्रेम और घृणा का मूल्य एक ही है। दोनों के पूर्ण विकास में पूर्ण घनिष्ठता और मानसिक ज्ञान अपेक्षित होता है। दोनों भावों में मनुष्य की सहानुभूति और आध्यात्मिक

किन्तु हेस्टर प्राइन का वास्तविक संसार तो न्यू इंगलैंड ही था जिसके साथ उसके दुःख, सुख, पाप और पश्चात्ताप का चिरकालीन सम्बन्ध जुड़ा हुआ था। इसीलिए उसने अपनी इच्छा से—क्योंकि उस कठोर युग का कोई भी दंडाधीश उसे ऐसा दंड नहीं दे सकता था—उस 'रक्तिम अक्षर' के चिह्न को पुनः धारण कर लिया था, जिसके बारे में ऐसी दुःख-भरी गाथा प्रचलित थी। उसने कभी भी वह चिह्न अपनी छाती से नही उतारा किन्तु उसका कठिन चिन्तापूर्ण तथा आत्मत्याग का जीवन समाप्त होने पर 'रक्तिम अक्षर' कलंक का चिह्न नहीं रह गया था। अब लोग उसकी ओर देखकर घृणा नहीं करते थे किन्तु उनके हृदय में गहरे दुःख का भाव भर जाता था और वे आतंक तथा सम्मान की दृष्टि से उसकी ओर देखने लगते थे ! हेस्टर के जीवन में अब कोई स्वार्थ नहीं था, न ही किसी लाभ और सुख-भोग की कामना। प्रायः लोग आकर उसे अपने दुःख की कहानियां सुनाया करते थे और उससे परामर्श किया करते थे क्योंकि वह स्वयं एक घोर आपत्ति में से गुज़र चुकी थी। स्त्रियां—और विशेषतः वे स्त्रियां जिनके साथ कोई अन्याय हुआ था, जो पीड़ित थीं, जिन्हें समाज में उपयुक्त स्थान नहीं मिला था, जिन्होंने कोई अपराध किया था, या जो पापपूर्ण वासना में ग्रस्त थीं, अथवा जिन्हें प्रेम से वंचित हृदय का भार ढोना पड़ रहा था—हेस्टर के पास आकर पूछा करती थीं कि वे इतनी अभागी क्यों हैं और उसका उपचार क्या हो सकता है। हेस्टर उन्हें सान्त्वना दिया करती और कोई-न-कोई परामर्श देने का भी प्रयत्न करती थी। उन्हें विश्वास दिलाया करती थी कि उसका यह दृढ़ विश्वास है कि एक ऐसा स्वर्गिक और स्वर्णिम समय आएगा जब पारस्परिक सुख और शांति के आधार पर पुरुष और स्त्री का सम्बन्ध स्थापित होगा। हेस्टर यह भी कहा करती कि वह अपने प्रारंभिक जीवन में व्यर्थ ही यह कल्पना किया करती थी कि वह एक दिन भविष्यवक्ता बन जाएगी किंतु अब तो बहुत समय से वह जान चुकी थी कि पाप से कलुषित, लज्जा से अवनत और जीवन-भर के दुःख से भाराक्रान्त नारी को विधाता के सन्देश और रहस्यपूर्ण सत्य का पता नहीं चल सकता। आगामी युग में ईश्वरीय सत्य का रहस्योद्घाटन करनेवाली



अवश्य कोई नारी होगी जो महान, पवित्र, सुन्दर और प्रतिभाशालिनी होगी। वह दुःख की छाया में नहीं वरन् आनन्द के प्रकाश में विधाता का सन्देश लोगों तक पहुंचाएगी और अपने सफल जीवन से यह प्रमाणित कर देगी कि पवित्र प्रेम हमारे जीवन को कितना सुखी बना सकता है।

यह कहते-कहते वह अपनी दुःख भरी दृष्टि 'रक्तिम अक्षर' की तरफ डालती। बहुत वर्षों के बाद उस कब्रिस्तान में जिसके पास गिरजाघर बन गया है एक पुरानी धंसी हुई कब्र के समीप एक और कब्र बनाई गई। दोनों कब्रों में कुछ अन्तर रखा गया क्योंकि उनमें चिरनिद्रा में सोनेवाले प्राणियों की धूलि को परस्पर मिलने का अधिकार नहीं था। किन्तु दोनों कब्रों पर एक ही पत्थर लगा हुआ था। इन कब्रों के चहुं ओर सुन्दर नक्काशीवाले स्मारक लगे हुए थे, जिन पर शस्त्रास्त्रों के चित्र अंकित थे और इस साधारण-सी स्लेट पर ही उन अस्त्रों से रक्षा का कवच इस कहानी के सार के रूप में लिखा हुआ था, जिसमें व्याप्त गहन दुःख की छाया में प्रकाश का केवल एक बिन्दु था जो छाया से भी अधिक धुंधला प्रतीत होता था और लिखा था एक वाक्य, जीवन के लिए सन्देश, आप्त वचन—

"काली पृष्ठभूमि पर अक्षर 'ए' की रक्तिमा।"

•••